United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

Japan
Funds-in-Trust

बहुभाषिक शिक्षा विस्तार के खातिर

उपयोगी सामग्री :

स्कूल के पहुच से बहरे रहै वाले लोगन कै समावेशीकरण

Advocacy kit for promoting multilingual education: Including the excluded.
Bangkok: UNESCO Bangkok, 2007
[**ISBN 92-9223-110-3**]

Translated & adapted in Avadhi by UNESCO Kathmandu & Ministry of Education, Government of Nepal.

[Contents: Overview of the kit; Language in education policy and practice in Asia and the Pacific; Policy makers booklet; Programme implementers booklet; Community members booklet]

1. Multilingualism
2. Education policy
3. Language of Instruction
4. Mother tongue

Published by the
UNESCO Office in Kathmandu
P.O.Box 14391
Sanepa-2, Lalitpur, Nepal
Tel : 977-1-5554769, 5554396
Fax : 977-1-5554450
URL : http://www.unesco.org/kathmandu

ISBN : 978-9937-8446-3-5

© UNESCO 2011

Printed in Nepal

यी सामग्री बनावै खातिर नियुक्त अधिकारी औ कवनो देश, भूखण्ड, शहर, क्षेत्र या उहां कै निकाय या ओकर सीमा या साध सिमाना कै कानूनी हैसियत के बारे मे यहि सामग्री मे लिखा विचार के बारे मे युनेस्को कै कवनो कानूनी जिम्मेवारी नाही रही।

बहुभाषिक शिक्षा विस्तार के खातिर उपयोगी सामग्री :

स्कूल के पहुच से बहरे रहै वाले लोगन कै समावेशीकरण

भूमिका

एशिया औ प्रशान्त क्षेत्र अपने धनी सांस्कृतिक, जातीय औ भाषिक विविधता के खातिर मशहूर है । साथय साथ विविधता के नाते अलग अलग पृष्ठभूमी से आवा यहि क्षेत्र के लरिकन काँ शिक्षा देहू मे वतनय चुनौती है । सन् २००० मे डकार के विश्व शिक्षा फोरम मे भवा सहमति कै एक मुख्य लक्ष्य 'ई.सं. २०१५ तक सारे लरिकन का खास कइकै लरिकिन औ अल्पसङ्ख्यक जातीय समुदाय के लरिकन का निशुल्क औ अनिवार्य रूप मे गुणस्तरीय प्राथमिक शिक्षा देब रहा' यकरे साथय 'साक्षरता के स्थिति मे सुधार औ खास कइकै मेहरारु लोगन का साक्षर बनाइब' दुसरे लक्ष्य के रुप मे रहा । यी दूनव लक्ष्य हासिल करय औ विशेष रुप से सबका शिक्षा कै समान अवसर देवय कै मतलव जातीय/भाषिक अल्पसङ्ख्यक समुदाय के विद्यार्थिन का सकारात्मक उपाय के साथेन प्रभावकारी पढाई/लेखाई कराइब होय । जानल औ आसान भाषा मे होयवाला पढाई विशेष प्रभावकारी होत है । यही नाते शुरु मे कवने भाषा से पढय के सिखावा जाय, यी बाति महत्त्वपूर्ण होइ जात है । जवने का ध्यान मे राखि कै शिक्षा से लरिका लरिकिन का जोडत औ सिखावत कै ऊ लोगन का विशेष रुप से सहभागी कराय कै, आशा के अनुसार कै उपलब्धी पावय के खातिर मातृभाषा के माध्यम से किहा जाय वाले पढाई कै विशेष महत्व है ।

दुर्भाग्यवश यकरे विपरित यहि क्षेत्र कै अधिकतर देशन के राष्ट्रिय जनगणनन मे देखान भाषिक दृश्य शैक्षिक प्रणाली मे बडे मुश्किल से देखायमान होत है । यानी शिक्षणविधि में उहाँ पावा जाय वाले विधि स्थानीय मातृभाषन कै प्रयोग बिरलै पावा जात है । अधिकतर लरिके बिटियय अपने मातृभाषा का छोडि कै विदेशी भाषा या आउर भाषा के पढाई विधि के माध्यम से पढय के मजबूर है । शिक्षा के दृष्टि से पाछे परा निरक्षर, अल्पसङ्ख्यक औ शरणार्थी समुदाय मे येकर स्थिति आउर भयावह है । अपने जाना भाषा का छोडिकै दुसरे भाषा मे होय वाले पढाई से विद्यार्थी मे दुई तरफा चुनौती पैदा होत है । यहि सच्चाई से हमरे निश्चित रूप से अवहिन तक मुह मोडि लिहा जात है । यहि नाते वन्हय एक ओर नवा भाषा सिखय कै परत है तो दुसरे ओर वहि नवा भाषा से जुडा खुद के बातावरण से अलग बातावरण कै ज्ञानव सिखय के परत है ।

एशिया के कुछ देसन मे अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से चालू द्विभाषी/बहुभाषी शैक्षिक कार्यक्रम वाला शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करी कि नाही यही बाति का बूझब औ मानब अबहिन बकियय है । यी सामग्री शिक्षा प्रणाली का सांस्कृतिक विविधता के ओर उत्तरदायी बनावय मे सहयोग देय के हिसाब से बनावा है । मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा लरिकन करय के औ विद्यार्थिन के अधिकार कै सम्मान साथय बहुभाषिक शिक्षा के महत्व कै जानकारी देई औ पढय वाले लोगन का महत्त्व के बारे मे सोचय के साथय आउर अनुसन्धान करय कै अभिप्रेरित करै । यह मे उठावा विषय मातृभाषा के क्षेत्र मे बरिसौ बरिस काम किहा संस्था औ विद्वान लोगन के अनुभव औ अनुसन्धान के निचोड पर आधारित है । शैक्षिक गुणस्तर बढावय औ सङ्कट मे परा संसार कै तमाम भाषन कै संरक्षण करय कै मुख्य माध्यम 'मातृभाषय मे शिक्षा होय' । यहि पक्ष मे बोलय औ यकरे खातिर समर्थन जुटावय मे प्रस्तुत सामग्री मे सामिल किहा पुस्तिका आप लोगन के खातिर उपयोगी होइहयँ ।

सेल्डन सेफर
निर्देशक
शिक्षा के खातिर युनेस्को एसियाऔ प्रशान्त क्षेत्रिय ब्यूरो

प्राक्कथन

हम्मन कै नेपाल छोट देश होय के बावजूद यिहां १०० से ज्यादा जाति औ ९२ से ढेर भाषा होय के नाते विविधता से भरपूर है । राज्य यइसनेह भाषिक विविधता के खातिर उचित नीतिगत औ कानूनी व्यवस्था के साथेन वही के अनुरुप अपने देश के भित्तर बोली जायवाली भाषन कै संरक्षण औ सम्बर्द्धन के खातिर प्रयास करत आ है । संविधान मे अपने भाषा औ संस्कृति के संरक्षण औ सम्बर्द्धन करय के खातिर नागरिक अधिकार कै व्यवस्था किहा है । राष्ट्रिय भाषा नीति सुझाव आयोग (२०५०) यहि देशकै विभिन्न भाषन मे प्राथमिक तह तक पढाई लिखाई शुरु करयक सुझाव दिहे रहा । जवने के आधार पर पाठ्यक्रम विकास केन्द्र अबहिन तक कक्षा - १ से लइकय ५ तक १९ ठू भाषा मे विभिन्न विषय कै किताब तइयार कइकै पढाई शुरु कइ चुका है । साथय अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र १८ ठू भाषन मे साक्षरता पुस्तक तइयार कइकै साक्षरता कक्षा चलावय लाग है । यही किसिम से नेपाल के भाषन के बारे मे स्पष्ट जानकारी लेवय के खातिर राष्ट्रिय योजना आयोग के पहल मे भाषिक सर्वेक्षण कै काम चालू है ।

नेपाल सरकार 'सबके खातिर शिक्षा' कै लक्ष्य पावय के खातिर सङ्क्रमणीय बहुभाषिक शिक्षा नीति लिहे है । यकरे के आधार पर शिक्षा मन्त्रालय विभिन्न भाषा परिवार कै सात ठू अल्पसङ्ख्यक भाषन मे बहुभाषी शिक्षा सुरु किहे है । मन्त्रालय यहि क्षेत्र मे काम करयवाले संघसंस्थव से सहकार्य करत आ है । शिक्षा मन्त्रालय, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, युनेस्को औ एस.आई.एल. इनटरनेशनल मिलिकै सम्पन्न किहा बहुभाषी शिक्षा सम्मेलन यहि किसिम के सहकार्य कै उदाहरण होय ।

मन्त्रालय देश के भितरय भर नाही अन्तर्राष्ट्रिय स्तरव पर यहि क्षेत्र मे होय वाले गतिविधियव मे सामिल होत आ है । संयुक्त राष्ट्र संघ सन् २००८ का अन्तर्राष्ट्रिय भाषा वर्ष कै घोषणा किहे रहा औ साल भर 'Languages Matters', भाषा महत्त्वपूर्ण होत हैं' कै नारा के साथे किसिम किसिम कै कार्यक्रम करय्क आह्वान किहे रहा । युनेस्को कार्यालय, काठमाण्डू के साझेदारी मे तइयार यी 'बहुभाषी शिक्षा विस्तार के खातिर तरफदारी सामग्री' औ आउन संस्थन के साझेदारी मे तइयार परिचय पुस्तिका, पर्चा औ नेपाल के विभिन्न भाषा औ लिपि मे पेश 'हरेक भाषा महत्त्वपूर्ण होत है' नारा अङ्कित पोस्टर यही बाति से जुडा है ।

पेश किहा 'बहुभाषी शिक्षा विस्तार के खातिर तरफदारी सामग्री' से विभिन्न भाषाभाषी समुदाय, नीति निर्माता औ कार्यक्रम संचालक लोगन का विशेष फाइदा होय के आशा किहे हन । यकरे माध्यम से नेपाल के हरेक भाषन कै संरक्षण औ सम्बर्द्धन के खातिर कानूनी, नीतिगत औ व्यवहारिक पक्ष मे सरकारी प्रतिबद्धता के निरन्तरता रहय कै बाति पुन: स्मरण करावत भविष्यव मे यहि काम का निरन्तरता मिलय कै कामना करित हन ।

साथय मूल सामग्री बनावय वाले एस.आई.एल. इन्टरनेशनल कै डा. सुजन मेलोन, वनके समूह कै सदस्य औ युनेस्को बैकांक का धन्यावद दीत है । बहुभाषी शिक्षा कै महत्त्व औ उपयोगिता का ध्यान मे राखि के युनेस्को काठमाडौं यहि तरफदारी सामग्री का नेपाली, मैथिली औ भोजपुरी के बाद अवधी भाषा मे अनुबाद औ अनुकूलन करय कै निर्णय लिहिस । यकरे खातिर युनेस्को काठमाडौं कै तपराज पन्त, औ रामबालक सिंह, त्रिभुवन विश्वविद्यालय सेरिडका कार्यकारी निर्देशक अरविन्द लाल भुमी, सल्लाहकार डा.लवदेव अवस्थी तथा अमुल उप्रेती का धन्यवाद देवा चाहित हन् ।

अवधी भाषा कै यहि अङ्क के खातिर मूल सामग्री कै अनुवाद, अनुकूलन, सम्पादन औ परिमार्जन के काम मे महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी पूरा करय वाले डा. योगेन्द्र यादव, विक्रम मणि त्रिपाठी औ कम्प्यूटर टाईप के खातिर जयराम कुइँकेल लगायत कै महानुभाव लोगन के योगदान कै कदर करित हन ।

शंकर प्रसाद पाण्डे
सचिव
शिक्षा मन्त्रालय
नेपाल सरकार

बहुभाषिक शिक्षा विस्तार के खातिर उपयोगी सामग्री :

स्कूल के पहुच से बहरे रहै वाले लोगन कै समावेशीकरण

सामग्री कै सामान्य पटिचय :

सामग्री कै सामान्य परिचय

सबके खातिर शिक्षा (एजुकेशन फर अल, ई.एफ.ए.) कै अर्थ सबके खातिर गुणस्तरीय शिक्षा होय। ई.एफ.ए. अभियान कै शुरुवातय से अधिकतर देश अपने यिहा के लरिकन, युवा औ प्रौढ लोगन कै शिक्षा सम्बन्धी जरुरत का पूरा करय के प्रयास मे लागि परा हैं। यहि बिषय मे प्रशस्त काम होय के बावजूद कुछ खास समूह अबहिनव येसे बहरे हैं। यह में बिटियय औ मेहरारु, गरीब, अपाङ्ग, एच.आई.भी./एड्स भवा लोग औ सरकारी कामकाज के भाषा बाहेक कै मातृभाषा बोलय वाले मधेसी, जनजाति लोग मुख्य रूप से है।

जब यइसनहे भाषा मे शिक्षा दिहा जात है, जवने का न तो ऊ लोग जानत हैं औ न तो बूझत हैं तो का खातिर गुणस्तरीय शिक्षा कै उद्देश्य पूरा होइ सकत है ? अल्पसङ्ख्यक समुदाय कै अधिकतर लरिकन का स्कूल मे पहुचतय सामना करय वाला पहिला समस्या यिहय होय। स्कूल कै भाषा औ वन सब के घर मे बोली जाय वाली भाषा मे ढेर अन्तर होत है। न जानयबुझय वाले भाषा मे पढय के मजबूर होय के नाते शिक्षा मिलय के बावजुद ऊ लोग कुछ न कइ पावय वाले, अपाङ्ग जेस होइ जात हैं। यइसन स्थिति नाही रहय के चाहीं।

एशिया औ प्रशान्त क्षेत्र के कुछ देशन मे अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से द्विभाषी/बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम लागू किहा है। जवने के माध्यम से हरेक जातीय/भाषिक अल्पसङ्ख्यक विद्यार्थिन का वनके अपने औ सरकारी कामकाजी दूनव भाषा मे साक्षर होय कै अवसर मिला है। लेकिन राष्ट्रिय नीति निर्माण के तहपर द्विभाषी/बहुभाषी शिक्षा के बारे मे जानय बूझय, औ वोका मानय मे महत्त्वपूर्ण कमजोरी है। यही नाते स्कूल मे विद्यार्थी भर्ना बढायव, ऊ लोगन का नियमित उपस्थित करावय औ वही अनुसार कै सफलता देवावय मे द्विभाषिक/वहुभाषिक शिक्षा कै वतनय महत्व होत है। दुसरे ओर प्राविधिक औ राजनीतिक पक्ष के बीचे अस्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा रहय वाली बाति का मानब जरुरी है। काहे कि यकरे नाते नीति बनावय वाले औ शिक्षा के क्षेत्र मे काम करय वाले लोगन का माध्यम भाषा चुनय मे कठिनाई होत है। यही नाते 'मातृभाषय मे शिक्षा देवय के चाहीं' यी बाति बूझब गुणस्तरीय शिक्षा पावय कै उद्देश्य के ओर पहिला महत्त्वपूर्ण परग साबित होई।

यहि सामग्री कै प्रयोग के करी ?

यी सामग्री ऊ लोगन के खातिर तइयार किहा गा है, जेकां यी पूरापूर विश्वास है कि 'सबके खातिर शिक्षा' वास्तव मे यी सबका समेटि लेत है। यी सामग्री खास कइकै भाषा के नाते स्कूल के पहुच से दूर रहय वाले लोगन कै शिक्षा मे पहुच बढावय औ गुणस्तरीय शिक्षा देवय कै इच्छाशक्ति वाले नीति निर्माता, शिक्षा क्षेत्र मे काम करय वाले औ प्राविधिक विशेषज्ञ लोगन के खातिर उपयोगी होई। यकरे साथय शिक्षा मे अपने समुदाय कै अवस्था सुधार कै इच्छा राखय वाले अल्पसङ्ख्यक भाषा भाषी लोगनव के खातिर यी सामग्री सहयोगी होई। यी सामग्री मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा (एम.एल.ई.) कै महत्व के सम्बन्ध मे जनचेतना बढावय के खातिर तइयार किहा गा है। यी बहुभाषिक शिक्षा के सम्बन्ध मे किसिम किसिम कै तथ्य औ वोकर समर्थन करय वाला तर्क पेस कइकै मातृभाषा शिक्षा से होय वाले फायदा औ महत्त्व के बारे मे सम्बन्धित लोगन का अभिप्रेरित करी। यहि सामग्री मे किसिम किसिम कै विचार का अनुसन्धान कै

निष्कर्ष औ मूर्त उदाहरण आदि सहित राखा हैं । अपने परिस्थिति कै विचार कइकै यी सामाग्रिन कै प्रयोग कइ सका जात है । यही किसिम से यी शिक्षा प्रणाली मे भाषिक विविधिता का बढी जिम्मेवार बनावय के खातिर सुझाव देई ।

यी सामग्री कवनो पारिभाषिक पाठ्यपुस्तक नाही होय औ न तो यह मा हरेक समस्या कै उत्तर है । पढय वालेन का सकभर सहयोग मिलय, यिहय सोचिकै हरेक पुस्तिका के अन्त मे सन्दर्भ ग्रन्थ सुचियव राखा है । यकरे साथय हरेक पुस्तिका के शुरु मे वह मे चर्चा किहा सारे बाति कै एक पृष्ट मे सारांश औ अन्त मे पारिभाषिक शब्दालिउ राखा है ।

यहि सामग्री कै प्रयोग कइसय किहा जाई ?

यहि सामग्री मे तीन ठउर मुख्य पुस्तिका हैं । यी पुस्तिका अलग अलग पढय वाले (१) **शिक्षा सम्बन्धी नीति निर्माता** (२) **शिक्षा सम्बन्धी योजनाकार शिक्षा कै अभ्यासकर्ता औ यहि क्षेत्र मे काम करय वाले** (३) **समुदाय कै सदस्य लोगन खातिर है** । बहुभाषिक शिक्षा विकास के खातिर हरेक तह औ तबका कै सहयोग जरुरी है, यी बाति कब्बो नाही भुलाय के चाहीं । यही नाते जब आप बहुभाषी शिक्षा कार्याक्रम लागू किहा जात है तो यकरे खातिर योजना बनावय कै, ओका लागू करय औ संस्थागत करय कै काम एक साथे करय चाहा जात है, तो यहि तीनव पुस्तकन से साथय साथ आउर उपलब्ध सामग्रिन कै प्रयोग करब उचित रही ।

परिभाषिक शब्दावली

हरेक पुस्तिका मे ओकर आपन परिभाषिक शब्दन कै सूची दिहा है । सामग्री मे प्रयोग किहा वइसन शब्दावलिन कै मूल सुचियव है । जरुरत के अनुसार यी शब्दावलिन कै अध्ययन उपयोगी होई ।

अनुबादक के खातिर सुझाव

यी सामग्री मूल रुप मे अङ्ग्रेजी मे तइयार किहा गय रहा । ब्यापक रुप मे प्रयोग करय खातिर येकां एक ओर विभिन्न भाषा मे उल्था करब जरुरी है, तो दुसरे ओर विभिन्न परिस्थिति औ सन्दर्भ का वही समाज के अनुकूल बनावय्क है । यहि सामग्री कै उल्था औ अनुकूलन कै काम करत कै नीचे के बाति पर ध्यान देय के परी ।

यी सामग्री प्रयोगकर्ता के खातिर सजिल होय के हिसाब से बनावा है । यही नाते यह मे लिखा बाति छलफल मे प्रयोग होय वाली भाषा खास कइकै अनौपचारिक औ बोलीचाली के भाषा मे है । येकर उल्था औ अनुकूलनव करत के आप औपचारिक औ जटिल शब्दन कै प्रयोग न कइकै यही शैली मे किहा जाई, तो ठीक रही ।

वइसय तो यी सामग्री अङ्ग्रेजी मे लिखा रहा । थाइलैन्ड कै चियाङ माई नाव के जगही पर सन दिसम्बर २००५ मे भवा एक क्षेत्रीय कार्यशाला मे येकर परिक्षणव किहा गय । यी पुस्तिका अङ्ग्रेजी भाषा न बोलय वाले लोगन का बुझय लायक है कि नाही, यिहय पता लगावय खातिर यी सम्मेलन किहा गै रहा । येकां यइसनव लोगन का बूझय लायक बनावय के खातिर एकदम साधारण शब्दन कै प्रयोग किहा गा है । यह

मे कठिन शब्दन कै प्रयोग न किहा जाय, यहपर विशेष ध्यान दिहा है । तब्बव कुछ विशिष्ट शब्दन कै अनुबाद कठिन होइ सकत है । उदाहरणके खातिर 'बहुभाषिक शिक्षा' औ 'सिखाई उपलब्धी' जइसन शब्द बहुत भाषन मे नहियव होइ सकत हैं । यइसने शब्दन कै अनुवाद उहय अर्थ लगाय कै करय्क परी । कवने शब्द कै उल्था कइसय किहा जाई यी निश्चित नाही भय, तो व्यवसायिक अनुवादक वा यइसन शब्द पहिलेन से उल्था वा प्रयोग करयवाले संस्थन से सम्पर्क किहा जाई । यदि यइसनहे शब्दन कै उल्था वहि देश कै शिक्षाविद लोग नाही किहै हैं वा ठीक से नाही किहे हैं तो शिक्षा के क्षेत्र मे काम करय वाले आउर राष्ट्रिय औ अन्तर्राष्ट्रिय संस्था कइसै किहे हैं, यी देखय के चाहीं ।

अनुबाद किहा संस्करण (**अङ्क**) **मे यी लिखि दिहा जाई** :

This kit is a translation and adaptation of advocacy kit on muttilingual education (ISBN 92-9223-110-3 © UNESCO Bangkok'। हमरे यी आशा राखित हन कि उल्था औ अनुकूलन किहा हरेक संस्करण कै दुई दुई प्रति नीचे दिहा पता पर भेजि कै सहयोग किहा जाई :

APPEAL
UNESCO Asia and Pacific Regional Bureau for Education
920 Sukhumut Road, Bankok 10110, Thailand
Tel: (662) 391 - 577
Fax: (622)391-0866

Email: gender@unescobkk.org

कोसोनेन, के. २००५. एजुकेशन इन लोकल लैंग्वेजेज: पॉलिसी एण्ड प्रैक्टिस इन साउथ-इस्ट एशिया. इन फस्ट लैंग्वेज फस्ट: कम्यूनिटी-बेस्ड लिटरसी प्रोग्राम्स फॉर माइन्यूरिटी लैंग्वेज कंटेक्स्ट इन एशिया. बैंकक, युनेस्को पृ. ९६-१३४ ।

क्रिष्टल, डी.१९९९. द पेंगुइन डिक्शनरी अफ लैंग्वेज. सेकेंड एडिशन. लंडन, पेंगुइन ।

बेंसन, सी.२००४. द इम्पोर्टंस अफ मदर टाँङ-बेस्ड स्कूलिङ फॉर एजुकेशन क्वालिटी. कमिशंड स्टडी फॉर इएफए ग्लोबल मॉनिटरिङ रिपोर्ट, २००५. पेरिस, युनेस्को ।

मेलोन, एस. २००४. मैनुअल फॉर डिभेलपिङ लिटरसी एण्ड एडल्ट एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइन्यूरिटी लैंग्वेज कम्यूनिटिज. बैंकक, युनेस्को ।

युनेस्को. २००४. जेंडर इन एजुकेशन नेटवर्क इन एशिया (जेनिया): अ टूलकिट फार प्रोमोटिङ जेंडर इक्वालिटी इन एजुकेशन. बैंकक, युनेस्को ।

परिभाषिक शब्दावली - भाषा

अलिखित भाषा : पढाई/लेखाई मे प्रयोग न आवा खाली बोलीचाली मे सीमित भाषा

अल्पसङ्ख्यक भाषा: अल्पसङ्ख्यक सामाजिक समूह वा जाति कै भाषा । कब्बव कब्बव सङ्ख्यात्मक रुप से बडा समूह मे बोलीचाली कै भाषा होय के बावजूद मुख्य भाषा के रुप मे प्रयोग न किहा जायवाले भाषा का बूझा जात है ।

कामकाजी भाषा : सरकारी कार्यालय, स्कूल सहित आउर संस्थन मे दैनिक कामकाज के खातिर प्रयोग होयवाला भाषा उदाहरण के रूप मे : भारत मे अङ्ग्रेजी औ हिन्दी का कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता दिहा है औ राज्यन मे अपनय आपन राज्य भाषा चलनचल्ती मे है । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज के भाषा कै मान्यता मिला है ।

घर कै भाषा : घर मे बोली जायवाली भाषा (पहिला भाषा औ मातृभाषा का देखा जाई) केहू केहू के घर कै भाषा एक से ज्यादव होइ सकत है ।

दूसर भाषा : पहिला या घर के भाषा का छोडि कै दूसर भाषा, व्यापक संचार सम्पर्क कै भाषा या विदेशी भाषा

सामान्य रुप मे घर से बहरे व्यापक समुदाय में बोली जाय वाली भाषा का बूझा जात है । द्विभाषिक शिक्षा में पहिला भाषा के बाद पढाई मे प्रयोग किहा जाय वाली भाषा का दूसर भाषा (कामकाजी औ विदेशी) बूझा जात है ।

पहिला भाषा : मनई के मुह से निकरा पहिला भाषा, मौलिक भाषा (मातृभाषा, घर कै भाषा, स्थानीय भाषा का देखा जाई)

पैतृक भाषा : मनई कै पुर्वज या कवनो जाति या भाषिक समुदाय कै भाषा

भाषिका : भौगोलिक क्षेत्र या सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे होयवाली भिन्नता ('भेद' का देखा जाय ।)

भेद : भौगोलिक क्षेत्र औ सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे आवय वाला अन्तर

मातृभाषा : पहिला भाषा, मौलिक भाषा (पहिला भाषा, पैत्रिक भाषा, घर कै भाषा का देखा जाय ।)

मनई कै (१) सबसे पहिला सिखा भाषा (२) अपने या दुसरे से मातृभाषी वक्ता के रुप मे चिन्हावा भाषा (३) सबसे बेसी जानल भाषा (४) सबसे बेसी प्रयोग मे आवय वाली भाषा

माध्यम भाषा : स्कूल मे पढाई लिखाई कै माध्यम के रुप मे प्रयोग होयवाली भाषा

मुख्यभाषा : मुख्य समाज कै बोलय वाली या देश कै मुख्य भाषा के रुप मे रहा भाषा, देश मे ढेर जनसङ्ख्या कै बोलय वाली भाषा न होय के बावजूद राष्ट्रभाषा या कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता पावा भाषा ।

राष्ट्र भाषा : देश के भित्तर ब्यापक रुप मे बोला जायवाली भाषा, राष्ट्र से महत्वपूर्ण कहिकै किटान किहा भाषा, कब्बव कब्बव कामकाजिउ भाषा । उदाहरण : भारत मे दुई ठू कामकाजी भाषा औ बाइस ठू अनुसूचित भाषा किटान किहा है औ हरेक राज्य कै अपनय आपन राज्य भाषा चलन चल्ती मे हैं । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज कै भाषा तयँ किहा है । नेपाल कै अन्तरिम संविधान, २०६३ मे नेपाल के भित्तर बोला जायवाली हरेक मातृभाषा का राष्ट्रभाषा घोषित किहा है ।

विदेशी भाषा : अइसन भाषा जवन वक्ता के समुदाय मे न बोला जात होय ।

सम्पर्क भाषा : भाषिक समुदाय के बीचे एक दुसरे से सम्पर्क करय के खातिर प्रयोग किहा जाय वाली भाषा । उदाहरण : नेपाल कै पहाडी क्षेत्र मे नेपाली, तराई मधेश के विभिन्न क्षेत्र मे मातृभाषा के साथेन हिन्दी औ हिमाली क्षेत्र मे तिब्बती भाषा ।

स्थानीय भाषा : अपने समुदाय मे बोला जायवाली भाषा । सम्पूर्ण रुप मे लेखन पद्धति कै विकास न भवा भाषव होइ सकत है ।

परिभाषिक शब्दावली - सामान्य

आदिवासी : कवनो क्षेत्र वा देश मे आदिकाल से या बहुत पहिले से बसा मानव समूह/समुदाय

कार्यान्यवयन : कवनो नवां कानून लागू करय के खातिर मनई या आउर स्रोतका परिचालन करय वाला तरीका ।

गैरसरकारी संस्था : राष्ट्रिय सरकार कै अङ्ग न होय के बावजूद सामुदायिक विकास के खातिर काम करयवाला संस्था ।

जनचेतना बृद्धि : आपन जरुरत चीन्हि कै वोकां पावय के खातिर सहयोग देय वाला सूचना औ जानकारी देय कै काम ।

दुईभाषी : व्यक्ति : दुई भाषा बोलय औ बूझय वाले लोग (कब्बव कब्बव लिखिउ पढि सकय ।)

समाज : दुई भाषा बोलय वाला समाज या समुदाय ।

दुइ भाषी शिक्षा (द्विभाषी शिक्षा) : साक्षरता औ औपचारिक लिखाई पढाई के माध्यम के रुप मे दुइ भाषा प्रयोग कइकै दिहा जाय वाली शिक्षा । यहमा व्यवहारिक रुप से साक्षरता औ पढाई लिखाई सिखावत कै सबसे पहिले व्यक्ति कै पहिला भाषा/मातृभाषा से शुरु किहा जाय वाला औ दुसरे भाषा का लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे धीरे धीरे सामिल किहा जाय वाली शिक्षा ।

धारा प्रवाह : बिना कवनो अवरोध के बोलय, पढय औ लिखय मे उच्च दक्षता ।

निरक्षर : खुद कै जाना सुना भाषा मे लिखय पढय कै अवसर न पावा मनई ।

परिचालन : कवनो कार्यक्रम कै योजना बनावय औ लागू करय के खातिर समुदाय औ समुदाय के सहयोगिन का सङ्गठित करय कै काम ।

पाठ्यक्रम : शैक्षिक कार्यक्रम के खातिर शिक्षण योजना, पढयवाला विषय वस्तु औ सहयोगी सामान ।

बहुभाषी : व्यक्ति : दुइ से ढेर भाषा जानय बूझय वाला (लिखि पढि कइ सकय वाला) ।

समाज : दुइ से बेसी भाषा भाषी बसोबास करय वाला समाज ।

बहुभाषिक शिक्षा : साक्षरता औ औपचारिक शिक्षा मे दुइ से ढेर भाषा प्रयोग कइकै लिखाई पढाई (शिक्षण) करावा जायवाली शिक्षा - बच्चा या व्यक्ति के पहिला भाषा कै माध्यम से पढाई शुरु कराय कै दूसर तीसर भाषा से जोडत लइ जायवाली शिक्षा ।

भाषा विकास : शिक्षा मे केहू का कवनो भाषा बढिया से सुनय बोलय, पढय औ लिखय का सिखावय वाली काम ।

भाषिक अल्पसङ्ख्यक : कम जनसङ्ख्या होय के नाते या राजनीतिक औ आर्थिक कारण से समाज मे दुसरे के तुलना मे कमजोर रुप मे रहय वाला यक्कय भाषा बोलय वाले मनइन कै समूह ।

मातृभाषा पर आधारित
दुइ भाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिखाई कै प्रक्रिया शुरु कइकै दूसर भाषा सिखावत जायवाला स्कूली शिक्षा प्रणाली (बहुभाषिक शिक्षा का देखा जाय ।)

बहुभाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई प्रक्रिया शुरु कइकै दुसरे भाषा के साथेन अउरो भाषा सिखावत जायवाला शिक्षा प्रणाली (दुइ भाषिक शिक्षा देखा जाय ।)

मुख्य समूह : बेसी जनसङ्ख्या होय के नाते या आर्थिक औ राजनीतिक कारण से देश मे शक्ति के रुप मे रहा सामाजिक समूह ।

मूलधार : मुख्य समूह कै भाषा औ संस्कृति (कब्बव कब्बव खाली मुख्य समूह के खातिर बनावा स्कूल औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक लोगन कै जरुरत न पूरा करयवाला स्कूल बूझा जाला ।)

लेखन पद्धति : लिपि हिज्जे नियम औ विराम चिन्ह सहित के लेखन कै मानक प्रणाली ।

लैङ्गिक समानता : मेहरारु औ मर्द, बिटिया या बेटवा के मानव अधिकार का पूरा पूर जानय बूझय खातिर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक औ राजनीतिक विकास मे योगदान करय खातिर औ वोसे लाभ लेवय खातिर समान परिस्थिति कै अवस्था ।

सल्लाहकार समिति : बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम मे सामिल अगुवा लोगन कै समिति, (यहमा प्राय: मातृभाषा बोलयवाले औ सहयोगी संस्था कै सदस्य होत हैं ।)

सहजकर्ता : आउर लोगन का लेखपढ मे सहयोग करयवाले मनई, शिक्षक ।

साक्षरता : जीवन मे जरुरी व्यवहार पूरा करय खातिर पढय, लिखय औ हिसाब करय के साथेन आउर भाषिक क्रियाकलाप ठीक से करय कै क्षमता ।

साझेदार : नवा कार्यक्रम लागू करय खातिर समुदाय से मिलि कै काम करय वाला मनई, संस्था या निकाय ।

सिखाई उपलब्धि : स्कूल मे होय वाले पढाई कै विषयवस्तु, भाषा कै ज्ञान, हुनर औ दक्षता ।

स्थायित्व : ज्यादे समय तक समय के हिसाब से निरन्तर स्थापित गुण ।

बहुभाषिक शिक्षा विस्तार के खातिर उपयोगी सामग्री :

स्कूल के पहुच से बहरे रहै वाले लोगन कै समावेशीकरण

नीति निर्माता लोगन कै पुस्तिका :

© विक्रम मणि त्रिपाठी

नीति निर्माता लोगन कै पुस्तिका

परिचय :

युनेस्को सबसे पहिले सन १९९० मे 'सबके खातिर शिक्षा कार्यक्रम' शुरु किहिस । वकरेबाद बहुत से देसन मे उहां कै सरकार अपने यिहां के लरिकन औ प्रौढ लोगन कै शिक्षा सम्बन्धी जरुरत काँ ध्यान मे राखि कै आपन आपन प्रयास आगे बढाये हैं । यहमा बहुत से काम होइ चुका हैं, यकरे बावजूद कुछ समूह जइसय बिटियय औ मेहरारु, आम रुप मे गरीबन के साथय विशेष समूह के रुप मे एच.आई.भीं/एड्स कै शिकार लोग औ अल्पसङ्ख्यक भाषा बोलय वाले समूह बेसी उपेक्षित हैं ।

> *नेपाल मे बिटियय् औ मेहरारु, अपाङ्ग लरिके बिटियय, दलित लरिके बिटियय्, जनजाति लरिके बिटियय, मधेशी लरिके बिटियय्, सडक पेटी मे रहय वाले लरिके बिटियय्, द्वन्दपिडित लरिके बिटियय्, खरीदबिक्री औ यौनशोषण से पीडित लरिके बिटियय्, गरिब लरिके बिटियय्, कमैया औ बधुवा मजूर लरिके बिटियय्, जेल कै लरिके बिटियय्, असहाय औ अनाथ लरिके बिटियय, एच.आई.भी./एड्स, कुष्टरोग, क्षयरोग आदि से सङ्क्रमित (पीडित) लरिके बिटियय्, गुरुकुल, मदरसा, गुम्बा मे पढय वाले लरिके बिटियय्, भाषिक अल्पसङ्ख्यक लरिके विटियय् औ श्रमिक लरिकन का शिक्षा के अवसर से बहरे कै समूह के रुप मे राष्ट्रिय स्तर पर स्वीकार किहा (माना) गा है ।*[१]

चाहे **मधेशी समुदाय** कै लरिके बिटियय होंय या **अप्रवासी औ आदिवासी समुदाय** कै, जब विद्यालय के पढाई कै भाषा नबूझय वाले विद्यार्थी स्कूले जात हैं, तो ऊ लोग बहुत बडे समस्या मे फसि जात हैं । यी समस्या विद्यार्थी के स्कूल मे पढाई मे प्रयोग होय वाले भाषा औ ऊ लोगन के घरके भाषा के बीच कै अन्तर से सम्बन्धित है । यदि विद्यार्थी पढावा जाय वाले भाषा का नाही बूझत हैं, तो ऊ लोगन के सिखाई बुझाई मे समस्या आइ जात है :

> *सब यहि यथार्थ का न मानय तब्बव यी तो स्पष्ट है कि अपने भाषा का छोडिके दुसरे भाषा मे पढब दुई तरफा चुनौती से भरा है । काहे कि वहि समय मे नवां भाषा भर नाही, बलुक वहि मे दिहा ज्ञानव का सिखय के परा ला । यी चुनौती सारे निरक्षर, अल्पसङ्ख्यक औ शरणार्थी जइसन लोग, जे पहिलवय से शिक्षा के दृष्टि से जोखिम मे है, यइसने लोगन के खातिर आउर भयानक होइ जात है ।*[२]

यहि चुनौती कै समाधान करय कै सबसे अच्छा उपाय मातृभाषा पर आधारित बहुभाषी शिक्षा होय । सक्षम औ सशक्त बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कै विद्यार्थी शुरु शुरु कै पढाई अपनेन

---

१. काफ्ले, बासुदेव औ आउर. २०६३. समाहित शिक्षा औ बालमैत्री विद्यालय : विद्यालय सहयोगी सामग्री, भक्तपुर, नेपाल सरकार, शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय, शिक्षा विभाग समाहित शिक्षा शाखा, पृ. ४ । यह सूची मे 'मधेशी लरिके बिटियय थपा गा है ।

२. युनेस्नको. २००३. एजुकेशन इन अ मल्टिलिंगुअल वर्ल्ड. पेरिस : युनेस्को ।

भाषा मे सिखत हैं औ सङ्हरियय कामकाजिउ भाषा काँ एक विषय के रुप मे पढत हैं । जइसय जइसय विद्यार्थी कामकाजी भाषा काँ सुनय, बोलय, पढय औ लिखय के सिखत जात हैं, वइसय वइसय शिक्षक लोग कामकाजी भाषा काँ पढाई मे प्रयोग करय लागत हैं । बढिया बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थिन का दूनव भाषन काँ बोलचाल औ सिखाई मे प्रेरित करत है ।

बहुभाषी शिक्षा के समर्थन मे युनेस्को कै दिहा तीन खण्डीय आधार से भाषा औ शिक्षा के बीचे कै महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध स्पष्ट होइ जात है ।[३]

१. *युनेस्को, विद्यार्थी औ शिक्षक लोगन से मिला अनुभव औ ज्ञान के आधार पर मातृभाषा का पढाई के माध्यय भाषा के रुप मे प्रयोग कइकै दिहा जाय वाला शिक्षा, पढाई कै गुणस्तर बढावय वाले महत्वपूर्ण साधन के रुप मे होय कै समर्थन करत है ।*

२. *युनेस्को, ढेर भाषा प्रयोग होय वाले समाज मे द्विभाषी औ बहुभाषिक शिक्षा काँ शिक्षा के हरेक तह मे प्रयोग का, वहि समाज मे सामाजिक औ लैङ्गिक समानता बढावय वाले साधन मध्ये कै महत्वपूर्ण कडी के रुप मे होय के बाति कै समर्थन करत है ।*

३. *युनेस्को, अलग अलग जनसङ्ख्या वाले समूह के बीचे समझदारी सम्मान औ मौलिक अधिकार कै गारेन्टी के खातिर भाषा का अन्तर सांस्कृतिक शिक्षा के जरुरी कडी के रुप मे समर्थन करत है ।*[३]

यहि पुस्तिका कै बाकी अंश मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के बारे मे आउर बेसी जानकारी देई । यह मा बहुभाषिक शिक्षा के बारे मे अधिकतर पूछा जाय वाले सवालन का विभिन्न शीर्षक मे राखि के देखावा गा है । जवने का संसार भर शिक्षा क्षेत्र मे काम करय वाले सरकारी कर्मचारी, अनुसन्धानकर्ता औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक समुदाय के लोगन के कहनाव पर आधारित रहि के सवाल जबाफ के रुप मे राखा गा है ।

सवाल औ जवाब

अल्पसङ्ख्यक समुदाय मे भाषा औ शिक्षा

सवाल १ : कमजोर या भाषिक अल्पसङ्ख्यक समुदाय के लोगन कै शैक्षिक अवस्था कइसन है ?

नेपाल कै शैक्षिक अवस्था

- ६ बरिस से उप्पर कै ४६.३ प्रतिशत औ १५ बरिस से उप्पर कै ५६ प्रतिशत लोग पढय लिखय के नाही जानत हैं । (नेपाल कै जनगणना २००१ (२०५८)
- प्राथमिक स्कूल मे जाय वाले उमिर समूहमध्ये ११ प्रतिशत लरिके बच्चे स्कूल मे भर्ना नाही होत हैं ।
- भर्ना भवा लरिकन मध्ये ४५.४ प्रतिशत विद्यार्थी बिना पाँच कक्षा पूरा किहे स्कूल छोडि देत हैं ।

३. युनेस्को. २००३. एजुकेशन इन अ मल्टिलिंगुअल वर्ल्ड. पेरिस : युनेस्को ।

- स्कूल छोडय वाले लरिकनमध्ये कै सबसे बेसी १४.५ प्रतिशत लरिके कक्षा १ मे स्कूल छोडत है ।
- स्कूल न जाय वाले, स्कूल छोडय वाले औ पढय लिखय न जानय वालन कै सङ्ख्या क्षेत्र, जाति, भाषा औ गाँव या शहर मे फरक फरक है । यकरे बावजूद मुख्य रुप मे दुर्गम क्षेत्र मे रहय वाले मेहरारु, अल्पसङ्ख्यक समुदाय, दलित औ गरीब लोग बेसी हैं (MOES 2000)।

मुख्य रुप मे दुर्गम क्षेत्र मे रहय वाले कमजोर औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक समुदाय के लोगन का स्तरीय किसिम कै आधारभूत शिक्षा पावय मे कुछ यहि किसिम के चुनौतीन कै सामना करय के परत है :

- कहूँ स्कूलय नाही है, स्कूल है तो शिक्षकै नाही हैं औ यदि शिक्षकौ हैं तो वन्हय तालिम नाही मिला है ।
- यदि पर्याप्त सङ्ख्या मे शिक्षक हइयव हैं तो ऊ लोग विद्यार्थिन के न बूझय वाले भाषा मे पढावत लिखावत हैं ।
- किताब (पाठ्यपुस्तक) औ पाठ मे खाली मुख्य समूह के भाषा औ संस्कृति पर जोड दिहा जात है । यदि विद्यार्थी लोग ऊ भाषा औ संस्कृति नाही बूझत हैं तो वन्हय वहि किताब औ पाठ के बाति काँ बूझय मे कठिनाई होई ।
- मुख्य (दुसरे) भाषिक समुदाय से आवय वाले शिक्षक वहि विद्यार्थी का पढाई मे कमजोर मानि सकत हैं । यइसन शिक्षक वहि विद्यार्थी के भाषा औ संस्कृति कै कदर न कइकै हेय दृष्टि से देखि सकत हैं ।

नेपाल के स्कूलन कै कक्षा निरिक्षण करय वाले विशेषज्ञ लोगन कै अनुभव यहि किसिम से है :

> *सम्प्रेषण विधि कै प्रयोग हइयय् नाही है । खुद शिक्षक कक्षा मे 'बातचीत विधि कै प्रयोग करित हन' कहत है । लेकिन कक्षा के भित्तर जाइ के देखत कै खाली कुछ सीमित विद्यार्थी औ शिक्षक के बीचे बातचीत होत पायन । येकर अर्थ सारे विद्यार्थी औ शिक्षक के बीचे छलफल भय, यी नाही कहा जाय सकत । वास्तव मे यी छलफल शिक्षक औ कुछ सीमित नेपाली भाषी विद्यार्थिन के बीचे सीमित रहा । कक्षा मे यइसन विद्यार्थी साधारण तया आगे बइठत हैं । पढाई कै माध्यम नेपाली होय के नाते सम्प्रेषण बिधि के प्रयोग कै अवस्था नाही है । यी साक्ष्य प्राथमिक स्तर मे पढावय वाले शिक्षक लोगन का सम्प्रेषण विधि कै प्रयोग करय खातिर तालिम दिहा है, नाही कहि जाय सकत ।'*[४]

यइसन विद्यार्थिन के खातिर स्कूल मुख्य रुप से नवा जगही होइ सकत है, जहाँ नवां विचार का नवां भाषा मे पढावा जात है । भारत कै एक अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कै लरिके बिटियय पढय वाले स्कूल मे शिक्षा के क्षेत्र मे काम करय वाले एक जने विद्वान कक्षा निरिक्षण करय गयें । वहि समय उहां हिन्दी कै पढाई होत रहा । वन कक्षा कै अवस्था कुछ यहि किसिम से देखिन ।

---

४. अवस्थी, लवदेव. २००४. एक्स्प्लोरिङ मोनोलिंगुअल स्कूल प्रैक्टिसेज इन मल्टिलिंगुअल नेपाल, पीएचडी शोधग्रन्थ कोपेनहेगेन : डेनिस युनिभर्सिटी आँफ एजुकेशन, पृ. १९५ ।

विद्यार्थी शिक्षक के एकतरफा भाषण के ओर तनिकव ध्यान नाही देत रहे । ऊ लोग शून्य भाव से शिक्षक का तो कब्बो कब्बो ब्लैकवोर्ड मे लिखा करिया अक्षरन का टुकुर टुकर देखत रहे । बिद्यार्थी लोग कुछ नाही बूझत है, यहि बात का प्रष्ट रुप से बूझय वाले शिक्षक तेज आवाज मे आउर लम्मा व्याख्या करय लागे ।

बाद मे बोलत बोलत थकि जाय के बाद औ छोट छोट विद्यार्थिन काँ दूविधा मे परा जानि के वन ऊ लोगन से ब्लैकबोर्ड देखिके लिखय के कहिन । 'हमार विद्यार्थी ब्लैकबोर्ड देखि कै लिखय मे बडा तेज है । पाँच कक्षा तक पहचत पहुचत यी लोग ब्लैकबोर्ड मे देखिके लिखि लिहयँ वोकां याद कइ लिहयँ । साथय वन यिहव बताइन कि कक्षा ५ कै खाली दुइ विद्यार्थी हिन्दी भाषा बोलि सकत है' ।[५]

लरिके बिटियय या प्रौढ लोग जवन भाषा न बोलि औ बूझि पावयँ वोका स्कूल के पढाई कै माध्यम नाही बनावय के चाहीं । बनाये से ऊ लोगन काँ समाज कै उत्पादनशील सदस्य बनावय मे सहयोग के जगही बाधा पहुचत है । अपने समुदाय से बहरे कै संसार काँ पाठ मे सामिल कइकै लरिकन बिटियन का पढाये से ऊ लोगन कै जानल औ बूझल बातिकै बेवास्ता होत है । येसे वनके भाषा, संस्कृति औ अनुभव कै महत्त्व नाही है, यी सन्देश जात है ।

अइसन होब स्कूल के कार्यशैली से लरिकन बिटियन मे अपने समाज, बाप महतारी औ खुद अपने उप्पर कै सम्मान काहे हेरात जात है, येकर यी एक उदाहरण होय । पपुवा न्यु गिनी कै एक जने अभिभावक यइसने अवस्था कै वर्णन यहि किसिम से किहे है :

जब लरिके बिटियय स्कूले जात है तो ऊ लोगन के खातिर स्कूल कै बातावरण अन्जान होत है । ऊ लोगन से वन कै बाप महतारी छुटि जात है । वन कै बाग बगैचा छुटि जात है, ऊ लोग अपने जीवनशैली कै हरेक बाति छोडि देत हैं । साथय कक्षा कोठरी मे बइठि कै ऊ बाति सिखत है, जवने कै वनके गाँव समाज से कवनो सम्बन्ध नाही है । बाद मे, उ लोग आउर बाति सिखा होय के नाते अपने से सम्बन्धित हरेक बाति का खारिज कइ देत हैं ।[६]

जवने कै परिणाम का होत है कि अधिकतर लोग औपचारिक (स्कूली) शिक्षा पद्धति मे सफल होय के चक्कर मे जोखिम मोल लेत अपने भाषिक औ सांस्कृतिक पहिचान कै बलि चढाय देत है :

भाषिक अल्पसङ्ख्यक समुदाय का तब्बय मूल धार मे आवा मानि जात है जब ऊ लोग आपन जातीय औ भाषिक पहिचान छोडि के समाज के मुख्य भाषा औ संस्कृति का मानय लागत हैं । यी कवनो नवां बाति न होइकै संसार भर कै अल्पसङ्ख्यक समुदाय कै लम्मे समय से जाना सुना औ लिखा पढा दुखद इतिहास होय ।'[७]

५. *झिंग्रान, डी. २००५. लैंग्वेज डिसैडभांटेज. द लर्निङ चैलेंज इन प्राइमरी एजुकेशन. न्यू दिल्ली : ए.पी.एच. पब्लिशिङ ।*

६. *डेल्पिट, एल.डी. आ केमेलफिल्ड, जी. १९८५. एन इभैलुएशन आँद द भिलेस तोक प्लेस स्कूल स्कीम इन द नार्थ सोलोमन्स प्रोभिन्स इआर यू रिपोर्ट नं. ५१ बाइगानी, पपुआ न्यू गिनी : युनिभर्सिटी आँफ पपुआ न्यू गिनी ।*

७. *शेफर, एस. २००३ (७-९) नवंबर). लैग्वेज डिभेलस्प्मेंट एण्ड लैंग्वेज रिभाइटलाइजेशन : एक एजुकेशनल इंप्यरटिभ इन एशिया. इंटर नेशनल कन्फरेंस आँन लैंग्वेज डिभेलप्मेंट एक रिभाइटलाइजेशन एक मल्टिलिंगअल एजुकेशन बैंकक : थाइलैंड ।*

सवाल २ : स्कूले के शुरु के अवस्था मे मातृभषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कामकाजी भाषा बूझय औ बोलय कै न जानय वाले विद्यार्थिन के शैक्षिक अवस्था मे कइसय सुधार करी ?

मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थी का सबसे बढिया से जानय बूझय वाले भाषा मे पढाई कै सुरुवात करय कै वातावरण बनावत है । जब ऊ लोग पढाई मे अपने भाषा कै प्रयोग करय लागत है, तो धीरे धीरे ऊ लोगन का कामकाजिउ भाषा का सिखावय लागा जात है । जवने से ऊ लोग बहू भाषा मे बातचीत करयक शुरु कइ देत है । साथ साथय ऊ लोगन मे कामकाजी भाषा कै प्राज्ञिक शब्द भण्डार बढावय मे शिक्षकव लोग सहयोग करय लागत हैं । यहि किसिम से ऊ लोग यहू भाषा मे बेसी से बेसी बूझि पावत हैं औ वकरे बारे मे बोलि लेत हैं ।[८] बढिया कार्यक्रम मे तो सम्पूर्ण प्राथमिक तह मे विद्यार्थी मे लगातार दूनव भाषा मे बातचीत करय औ पढय लिखय कै क्षमता विकास किहा जात है ।[९]

सबल बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे भाषा सिखाइ का निम्नलिखित चरण मे देखावा जाय सकत है :

दूनव भाषा मे मौखिक औ लिखित सामर्थ्य कै निरन्तर विकास
शिक्षण औ सिखाई मे पहिले भाषा के साथेन दुसरव भाषा प्रयोग करय के परी

दुसरे भाषा मे पढाई लिखाई कै सुरुवात,
पहिला भाषा मे मौखिक औ लिखित के साथय दुसरे भाषा मे मौखिक रुप से निरन्तर पढावय औ सिखावय के खातिर पहिला के साथय दुसरे भाषा कै प्रयोग शुरु

मौखिक रुप मे कामकाजी (दूसर) भाषा के प्रयोग कै सुरुवात[९]
पहिले भाषा का मौखिक औ लिखित दूनव रुप मे निरन्तर प्रयोग
पढावय औ सिखावय मे पहिला भाषा कै निरन्तर प्रयोग

पहिला भाषा मे पढावय औ लिखावय कै सुरुवात
पहिला भाषा मे मौखिक विकास कै निरन्तरता
पढावय औ सिखावय मे पहिला भाषा कै प्रयोग

पहिला भाषा मे मौखिक रुप से सुनय औ बोलय खातिर क्षमता के साथय आत्मविश्वास कै विकास
(सुरु सुरु मे स्कूल जाय वाले लरिकन बिटियन के खातिर)
पढावय औ सिखावय मे घर के भाषा (पहिला भाषा) कै प्रयोग

घर के भाषा मे पढाई कै नेव बनावय के बाद विद्यार्थी लोग नवां भाषा (कामकाजी भाषा) मे पढाई शुरु करत है । यी पढाई पहिले मुह जबानी औ बाद मे लिखित रुप में आगे बढत है । नवां भाषा साधारण रुप मे जानय बूझय के तुरन्त बाद ऊ लोग आपन पहिला भाषा (मातृभाषा) नाही छोडि देत हैं । बलुक कम से कम प्राथमिक तह तक ऊ लोग पढय लिखय मे दूनव भाषा कै प्रयोग करत है :

८. यी प्रक्रिया एक अइसन शैक्षिक सिद्धान्त पर आधारित है जेकरे तहत एक भाषा मे सिखा धारणा दूसर भाषा में ओकरे शब्द भंडार कै विकास करते भरेम आसानी से किहा जाय सकत है ।

९. कुछ अनुसन्धानकर्ता लोग दुसरव भाषाका सुरूबय से प्राथमिक विद्यालय के अवधि भर पहिला भाषा के साथेन एक माध्यम भाषा के रूप मे प्रयोग कइ सका जात है, कहिकै पता लगाए रहें ।

लरिके बिटियय प्राथमिक तहतक दुइ वा दुइ से ढेर भाषा मे आपन पढय लिखय कै लगातार क्षमता विकास करत है। यकरे बाद ऊ लोग यी भाषन का बढिया से बूझत है औ यी सबका प्रभावकारी रुप से प्रयोग करय के जानि जात हैं। ऊ लोग अपने दूनव भाष मे साक्षरता हासिक करय के साथय दूनव भाषा मे वाक्य बनावय के तरीका के साथय दूनव भाषा कै आपस मे समानता औ विभेद जानय के नाते दूनव भाषा के हरेक संरचना (बनावट) का वास्तविक रुप मे बूझत हैं।[१०]

यहि प्रक्रिया कै मुख्य रुप यहि किसिम से हैं :

- विद्यार्थी स्कूली शिक्षा शुरु करत के भाषा औ संस्कृति के साथय जवन ज्ञान औ अनुभव लइकै आवत है, वही से वनके पढाई कै शुरुवात होत है।
- कामकाजी (नवां) भाषा का पढावय कै माध्यम बनावय से वहि भाषा कै प्रयोग होय के नाते विद्यार्थिन कै आत्मबल बढत है।
- शिक्षकव लोग, पढावत कै पहिला भाषा (मातृभाषा) के साथय कामकाजी भाषा कै प्रयोग करय के नाते विद्यार्थी लोग हरेक विषय का जानय बूझय के साथय वन मे शैक्षिक क्षमता विकसित होय के नाते ऊ लोग तहगत उपलब्धी हासिल करत है।

© विक्रम मणि त्रिपाठी

१०. कमिन्स, ज. २०००. बाइलिंगुअल चिल्ड्रेन्स मदर टङ : ह्वाई इज इट इम्पॉर्टंट फॉर एजुकेशन ?
http//www.iteachilearn.com/cummins/mother.htm (एक्सेस्ट आँन १७ नवम्बर २००६)

सवाल नं. ३ : सामान्य रुप मे मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा औ विकास के बीचे का सम्बन्ध है ?

जनसङ्ख्या के कुछ खास हिस्सा का बहरे राखि कै चलय वाले शिक्षा कार्यक्रम ऊ लोगन कै स्थानीय या राष्ट्रिय विकास मे आपन सक्रिय भूमिका निर्वाह करय का कठिन बनावत है । काहे से कि अइसन शिक्षा :

> *समुदाय कै राष्ट्रिय विकास मे सकारात्मक योगदान के खातिर जरुरी ज्ञान, हुनर औ धारणा से विद्यार्थिन का सुसज्जित करय मे पीछे राखत है ।* [११]

विकासमूलक शिक्षा हरेक विद्यार्थी चाहे वन कवनो भाषा बोलय वाले होय, वनके हरेक सम्भाव्यता कै पुरापूर विकास करत है औ साथेन यी सुनिश्चित करत है कि ऊ लोग खुद समुदाय औ राष्ट्र के कल्याण मे योगदान देवय लायक होंय :

हम्मन का यी विश्वास है कि राष्ट्र कै प्रमुख उद्देश्य अपने देश के सारे सदस्य औ बडे बडे संयन्त्र के विकास मे प्रोत्साहन देय वाला होय के चाहीं ..... । राष्ट्रिय विकास कै मतलब यी नाही होय कि सरकार कान करी ? बलुक यी होय कि अपने जनता से काव कराय सकत है ? [१२]

सारे सांस्कृतिक समूह अपने रहय वाले संसार से ढेर से ढेर सुविधा लेवय कै उपाय सिखे रहत हैं । हरेक भाषा मे येकां बोलय वाले, अपने बीचे पुस्ता दर पुस्ता विरासत के रुप मे विकास किहा ज्ञान औ बुद्धि का बतावय कै क्षमता राखत होत हैं ।

अलग अलग संस्कृति कै, अलग अलग भाषा बोलयवाले औ अलग अलग दृष्टिकोण वाले लोग अपने विकास औ योजना काँ एक दुसरे से बाटि के साझा भविष्य के ओर आगे बढय के बादय सारे राष्ट्र का फाइदा होई । अल्पसङ्ख्यक भाषिक समूहन मे बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै एक दीर्घकालीन लक्ष्य, वहि समूह के सदस्य लोगन का राष्ट्र के विकास मे सामिल कराय कै, अपने तरफ कै योगदान देवय खातिर वन मे ज्ञान, हुनर औ आत्म विश्वास बढावय का सुनिश्चित करब होय ।

'सांस्कृतिक विविधता हमरे देश कै सबसे बडा राष्ट्रिय स्रोत होय । विविधता कै अर्थ स्पष्ट करत कै ढेर दृष्टिकोण, समस्या समाधान कै ढेर उपाय, ढेर रचनात्मक विचार औ परिवर्तन का आत्मसात करय कै वृहत सामर्थ्य होब होय ... जहां विविधता का नजरअन्दाज किहा जात है .... राष्ट्र कमजोर औ विभाजित होत है ।'[१३]

---

११. डिपार्टमेंट आँफ एजुकेशन, १९९१, एजुकेशन सेक्टर रिभ्यू, बाइगानी, पपुआ न्यु गिनी : डिपार्टमंट आँफ एजुकेशन । पपुआ न्यू गिनी कै पचास लाख से बेसी जनता ८०० से अलग अलग भाषा बोलत है । १९९३ तक अंग्रेजी उहा कै औपचारिक शिक्षा प्रणाली कै भाषा रहा । एक मात्र अंग्रेजी शिक्षा के नकारात्मक प्रभाव के स्वीकार करत पपुआ न्यू गिनी सरकार १९९५ में आपन पूरा प्राथमिक शिक्षा प्रणाली कै पुनरावलोकन किहिस । २००५ तक मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम पपुआ न्यू गिनी के ८०० से बेसी भाषा सब में से ४०० से बेसी भाषा मे लागू होइ चुका रहा ।

१२. घरगेदाघी, जे. १९८६. अ प्रोलाँग टु नेशनल डिभेलप्मेंट प्लानिङ. न्यू योर्क : ग्रीनउड प्रेस ।

१३. डाँ जाँन वाइको, शिक्षा मंत्री, पपुआ न्यू गिनी, २००१ ।

सबल बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम मे सरकारी सहयोग से अल्पसङ्ख्यक भाषा औ वोका बोलय वाले लोगन का महत्त्व दिहा मिलत है । बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थिन के घर कै औ कामकाजी भाषा के बीचे पुल्ह कै काम करत है । यी ऊ लोगन का अपने भाषिक औ सांस्कृतिक विशेषता का बिना गवाये राष्ट्रिय एकता कायम करय मे सहयोग पहुचावत है । मनई के भाषिक औ सांस्कृतिक सम्पदा का महत्व न दिहे विभाजन औ सङ्घर्ष कै प्रमुख कारण होय कै बाति संसार कै अनुभव बतावत हैं । बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम विविधता का इनकार करय के जगही वोकां मानि के विविधतय मे एकता कायम करय मे सहयोग पहुचावत है ।

सवाल ४ : मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा औ लैङ्गिनक समानता के बीचे कइसन सम्बन्ध है ?

सन् १९९३ मे अनुसन्धानकर्ता कोर्सन का पता लगाइन कि शिक्षा मे विभेदकारी भाषा नीति औ योजना से खास कइकै तीन समूह सबसे ढेर प्रभावित होत हैं । यी होय मेहरारु औ बिटियय, गरीब औ औपचारिक शिक्षा मे भाषा कै प्रतिनिधित्व न करय बाला समूह । यी तीनव अवस्था का एकसाथ भोगय वाले लोगन पर सबसे ढेर अन्याय होत है । लैङ्गिक अनुसन्धान से यी पता चला है कि जब तक बिटियय औ मेहरारु बजार या कारखाना आदि मे काम नाही करत हीं, तबतक ऊ लोग लरिका या मर्द लोगन के तुलना मे कामकाजी भाषा से कम परिचित रहत हीं । येकर कारण यी होय कि बिटियय औ मेहरारुन कै जिनगी खाली घर औ परिवार मे सिकुडा रहत है । जहां खाली स्थानीय भाषा बोला जात है । येकर मतलब यी होय कि लरिकन के तुलना मे बिटियय स्कूल कै माध्यम भाषा बूझय मे पीछे हैं । बिटियन का बेटवन के तुलना मे बोलय कै कम मवक्का दिहे से ऊ लोगन मे बेटवन के तुलना कम सामर्थ्य कै विकास होब मानत के, यहि असमानता का अनदेखा किहा जात है । शिक्षा मे लैङ्गिक समानता पावय के जरुरत पर बढत अन्तर्राष्ट्रिय जागरण के बावजूद स्कूल मे बिटियन कै पहुँच अबहिन तक बेटवन से कम है औ अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कै बिटियय हरेक समुदाय मे सबसे कम लाभवन्वित है ।

बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम बिटियन काँ स्तरीय शिक्षा देवय मे बेसी अवसर देत है :

> *बिटियन औ मेहरारुन के खातिर लैङ्गिक विचार कै तुलना करत के ..... बिटियन औ मेहरारुन कै शैक्षिक जोखिम कै अवस्था विशेष समस्याजनक स्थिति मे है । सबसे बेसी परम्परागत मातृभाषी समाज मे बिटियय औ मेहरारु खुद कै भाई, बेटवा औ पति के तुलना मे कामकाजी भाषा मे पहुँच बनावय मे अभ्यस्त न होय के नाते यी लोगन मे एकभाषी रहय कै प्रवृत्ति ढेर है ।*[१४]

मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय के बिटियन काँ विशेष फाइदा पहुचावत है ।

- *समुदाय के भाषा के साथय संस्कृति औ मूल्य मान्यतन काँ सिखावय वाले स्कूल मे अभिभावक लोग बढी निहचिन्त होइकय अपने बिटियन का पढयक भेजि सकत हैं । यकरे साथय स्कूल मे भर्ती औ स्कूले के शिक्षा प्रक्रिया के बारे मे अभिभावक लोग अपनेन भाषा मे जानकारी पाय सकत हैं । कामकाजी भाषा के साथ साथय यदि अपनेव भाषा कै निरन्तर प्रयोग होई, तो बिटियन का बेसी समय तक स्कूल मे रहय कै हउसिला मिली ।*

१४. युनेस्को २००३. एजुकेशन इन अ मल्टिलिंगुअल वर्ल्ड. पेरिस. युनेस्को ।

- *बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम स्कूल के गतिबिधिन मे समुदाय कै सहभागिता बढाई, जवने से अभिभावक औ शिक्षक लोगन के बीचे सञ्चार सम्पर्क बढावय मे प्रोत्साहन मिली । येसे यी बाति सुनिश्चित होई कि समुदाय कै जरुरत औ मूल्य मान्यता के बारे मे स्कूल जिम्मेवार है ।*
- *विद्यार्थियय् कै भाषिक औ सांस्कृतिक समुदाय कै शिक्षक होय से बिटियन के उप्पर मर्द शिक्षक लोगन से होय वाला शोषण कै सम्भावन हटि जात है । काहे से कि वनलोग सामाजिक मर्यादा मे रहत हैं । साथय विद्यार्थी के परिवार से व्यवहारिक सम्बन्धव होय के नाते यइसन शिक्षक ढेरविश्वासी होत हैं । येसे पुरुष शिक्षा से विटियन के उप्पर होयवाला लैङ्गिक औ आउर दुर्व्यव्हार कै खतरा कम होत है ।*
- *अपने घरय के भाषा मे शिक्षण सिखाई क्रियाकलाप होय के नाते बिटियव बेटवनय के जइसय आपन क्षमता कक्षा कोठरी मे देखाय सकत हिन । अपने घर के भाषा मे लरिकनय के जइसय निधडक संवाद कइ सकत हिन । यही के नाते शिक्षक लोग बेटवन के जेतनय बिटियनव का मवक्का देय के बाति महसूस करत हैं ।*
- *शिक्षक तालिम के साथय अपने समुदाय काँ पढावय कै अवसर मिलय के नाते कइउ मेहरारुन का शिक्षक बनय कै खातिर प्रोत्साहित करत है । यी छात्रा लोगन के खातिर अनुकरणीय व्यक्तित्व* प्रदान करय के साथय येसे मेहरारुन का आय आर्जन कै अवसरो मिलत है ।[१५]

१५. बेंसन, सीं २००५ मदर टङ-बेस्ड टिचिङ एण्ड एजुकेशन फाँर गर्ल्स. बैंकक, युनेस्को ।
http://unesdoc.unesco.org/images/0014/001420/142079e.pdf (१७ नवंबर २००६ मे प्राप्त)

सवाल ५ : का बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम लागू करब औ चलाइब खर्चीला है ?

कुछ लोग मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम लागू करब ओ चलाइब खर्चीला होय कै तर्क दइकै येकर बिरोध करत हैं। लेकिन भाषा अर्थतन्त्र के क्षेत्र मे किहा अध्ययन औ भाषा सम्बन्धी सार्वजनिक नीति कै लागत विश्लेषण करत कै यी निष्कर्ष निकरत है कि बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम से होय वाले फाइदा के तुलना मे यी खर्च बहुत कम है :

> *एक भाषी शिक्षा प्रणाली से बहुभाषिक शिक्षा प्रणाली मे जात कै लागय वाला खर्च जेतना सोचा जात है, वोसे बहुत कम है। जगहीं जगहीं किहा मूल्याङ्कन से खाली ३-४ प्रतिशत के हाराहारी मे बढत पावा गा है, काहे से एकभाषी शिक्षा प्रणालिउ मे तो लरिकन बिटियन का तो स्कूले भेजहिक परत है। यही नाते तुलनातमक रुप मे नाँव मात्र कै खर्च बढाये द्विभाषिक शिक्षा/बहुभाषिक शिक्षा चलावा जाय सकत है।* [१६]

बहुभाषिक शिक्षा प्रणाली मे केतना खर्च लागत है यी कहय से अच्छा घर मे कामकाजी भाषा नबोलय वाले अधिकतर विद्यार्थिन का असफलता के ओर धकेलय वाला एक भाषी शिक्षा प्रणाली कै लागत केतना है, पूछब ठीक रही। शायद यहि मुद्दा का यही रुप मे देखब बाजिब होई। यदि हमरे बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे लागय वाले खर्चा अल्पसङ्ख्यक भाषाभाषी विद्यार्थिन के खातिर उपयुक्त न होयवाला औ असफल शिक्षा मे होयवाला सामाजिक औ आर्थिक लागत कै तुलना करत के, जइसन कि खर्च प्रभावकारिता के बारे कुछ अध्ययन समेत देखावत हैं, बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम एक बुद्धिमानीपूर्ण लगानी होय कै बाति स्पष्ट होइ जात है।

उदाहरण के खातिर ग्वाटेमाला के शिक्षा मन्त्रालय के तथ्याङ्क पर आधारित एक अध्ययन, जवने मे माया समुदाय के विद्यार्थिन का खाली कामकाजी भाषा (स्पेनिश) मे कक्षा चलय के नाते औ द्विभाषी शिक्षा कार्यक्रम चलावय से यहि समुदाय कै विद्यार्थिन मे कक्षा दोहरावय औ बीचय मे स्कूल छोडय वाले लोगन कै दर एक आपस मे तुलना किहा है। वोसे यी बाति पता चला है :

> *द्विभाषिक शिक्षा प्रणाली मे जाय से कक्षा दोहरावय के दर मे कमी आवय से ढेर खर्च कै बचत होत है। येसे सरकार का ५० हजार अमेरिकी डलर कै बचत भा है। जवन एक लाख विद्यार्थिन का एक वर्ष तक प्राथमिक शिक्षा चलावय मे लागय वाले खर्च के बराबर है।* [१७]

ग्वाटेमाला औ सेनेगल मे किहा एक दुसरेव अध्ययन के अनुसार स्थानीय भाषा कै पाठ्य सामग्री छापत कै लागय वाला खर्च, कक्षा दोहरावत के लागय वाले शैक्षिक बजेट कै एक प्रतिशतव से कम (ग्वाटेमाला के हम मे ०.१३ प्रतिशत मात्र) होत है ओ यह शुरुवाती खर्च का दुइ से तीन बरिस के बीचे उठावा जाय सकत है।[१८]

---

१६. ग्रिन, एफ २००५ इकाँनामिक कंसिडरेशन इन लैग्वेज पालिसी, रिसेतो, टी (एड) २००५. एक इट्रोडक्शन टु लैग्वेज पाँलिसी: थियरी एण्ड मेथड आँक्सफाँर्ड : बेसिल ब्लैक्वेल।

१७. डुचर, एन. २००४ एक्स्पाडिड एजुकेशनल आँपर्चुनिटिज इन लिग्विस्टिकली डाइभर्स कट्रिज वाशिङ्टन डी. सी. : सेटर आँफ एप्लाइड लिग्विस्टिक्स http://www.cal.org/resources/pubs/fordreport_040501.pdf (१७ नेवंबर २००६ में प्राप्त)

१८. वावद, ए.वाई. आ पैट्रिनस, एच.ए. १९९८ काँस्ट आँफ प्रोड्युसिड एजुकेशनल मटिअरिअल्स इन लोकल लैग्वेज, वाशिङ्शन डि.सी. : वर्ल्ड बैंक।

सवाल ६ : एक सबल औ दीर्घकालिन बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै विशेषता काव काव होय ?

बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के खातिर सरोकार वाले मनई, संस्था औ निकायन के बीचे नवा सोच औ सहयोग कै जरुरत परत है । नीचे रेखाचित्र के माध्यम से सबसे सबल कार्यक्रम के खातिर जरुरी चीजिन का देखावा है :[१९]

१९. मेलोन, एस. २००५, 'प्लानिङ कम्युनिटी-बेस्ड एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइन्युरिटी लैग्वेज कम्युनिटिज रिसोर्स मैनुअल फाँर मदर टङ स्पीकर्स फर माइन्युरिटी लैग्वेज इगेन्ड इन प्लालिङ एण्ड इप्लिमेंटिङ एजुकेशन प्रोग्राम्स इन देयर वोन कम्युनिटिज' पर आधारित ।

मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम लागू करत कै सामान्य रुप मे नीति निर्माता काँ सामिल नाही करावा जात है । लेकिन कार्यक्रम का दीर्घकालिक रुप मे सफल बनावय के खातिर वन लोगन कै सक्रिय सहयोग जरुरी है । ऊ लोग मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कै समर्थन करय के खातिर जरुरी राजनीतिक वातावरण तयार कइकै अपने ओर से महत्त्वपूर्ण योगदान दइ सकत हैं । अल्पसङ्ख्यक समुदाय कै भाषा बोलय वाले लोगन के साथय सबका स्तरीय शिक्षा देय खातिर भाषा औ शिक्षा नीति जरुरी हैं, आजकाल्हि अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर यहि विचार कै कदर पहिले से बढत जात है ।[२०]

सहयोगी राजनीतिक वातावरण बनावत के बहुभाषिक शिक्षा का औपचारिक औ अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली कै अङ्ग बनावय औ लागू करय के साथय सहयोग करय्क स्पष्ट निर्देशन देवयवाले नीति सबसे बढिया होत हैं । महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय मे यी बाति समावेश होत हैं :

- कार्यक्रम मे प्राथमिक विद्यालय कै (माध्यमिक विद्यालय कै समेत भये आउर बढिया) कवने कवने कक्षा का सामिल करय्क है, स्पष्ट रूप से उल्लेख होय के चाहीं ।
- उपयुक्त सरकारी निकाय के मातहत मे कार्यक्रम लागू करय औ समन्वय करयवाला निकाय बनाय कै कार्यक्रम का संस्थागत करय के चाहीं ।
- खास कइकै बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के खातिर विशेष रुप से निरन्तर रुप कै अलगै स्थानीय स्रोत कै व्यवस्था करयके चाहीं ।

नीति निर्माता लोग मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा काँ सफल बनावय के खातिर सरकारी, गैर सरकारी संस्था, विश्वविद्यालय औ आउर सहयोग संस्थन के बीचे सहकार्य के वातावरण बनाय के स्थानीय समुदाय के साथे कार्यक्रम बनावय औ येकां दीर्घकालिक रुप देवय मे मदत करत हैं । यहि किसिम से ऊ लोग मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम का सफल बनावय मे योगदान देत है । बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम काँ राष्ट्रिय, प्रान्तीय औ सामुदायिक स्तर पर योजना, कार्यान्ववयन औ निरन्तरता का सुनिश्चित करब तीसर औ सबसे जरुरी क्रियाकलाप होय ।

२०. अलिदोउ, एच: बोली, ए : ब्राँक-उत्ने, बी : डिआलो, वाई, हेफ, के आ वोल्फ, एच. ई २००६, ऑप्टिमाइजिड लर्निङ एण्ड एजुकेशन इन अफ्रिका : द लैग्वेज फैक्टर अ स्टाँक-टेकिङ रिसर्च आँन मदर टङ एण्ड बाइलिंगुअल एजुकेशन इन सब-साहारन अफ्रिका पेरिस, एसोशिएशन फाँर द डिभेलप्मेंट आँफ एजुकेशन इन अफ्रिका (एडीइए) ।

सवाल ७ : मातृभाषा पर आधारित सबल बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम काँ शुरु किहा औ वोकां दीर्घकालिक बनावा जाय सकत है ?

युनेस्को, युनिसेफ औ आउर बहुपक्षीय/द्विपक्षीय संस्थन के प्रोत्साहन औ सहयोग से विश्वभर मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम शुरु किहा है औ होत है । एशिया औ प्रशान्त क्षेत्र कै पपुवा न्यू गिनी, चीन, थाइल्यान्ड, कम्बोडिया, बङ्गलादेश, भारत, सोलोमन द्वीप लगायत आउर अधिकतर जगही मे यइसन कार्यक्रम या तो लागू होइ चुका है या योजना बनि चुका है । येसे यइसन कार्यक्रम कै जरुरत बुझि चुका लेकिन अब्बव 'सबके खातिर शिक्षा कार्यक्रम' सबके खातिर होय यी सुनिश्चित करय के ओर न लागय वालेन का रास्ता देखावय कै आशा किहा गा है ।

© ज्ञानु पौडेल, यूनेस्को, के सहयोग से सञ्चालित अवधी भाषामा साक्षरता कक्षा

भाषा औ शिक्षा सम्बन्धी युनेस्को कै सिद्धान्त[२१]

सिद्धान्त १ :

युनेस्को मातृभाषा के पढाई मे विद्यार्थी औ शिक्षक के ज्ञान औ अनुभव पर आधारित रहिकै शैक्षिक गुणस्तर बढावय कै माध्यम कै रूप मे समर्थन करत है ।

(१) मातृभाषा मे पढाई शिक्षा कै सुरुवाती माध्यम औ साक्षरता खातिर के जरुरी है । येकां जहा तक होइ पावय बादव के चरण मे बढावा देवय के चाहीं ।

(२) जवान लरिका लरिकी औ प्रौढ के साथय स्कूले कै लरिकन के खातिर जरुरी पाठ्यसामग्री होय के बादय साक्षरता कायम राखि सका जात है ।

(३) समूचा शैक्षिक योजना के हरेक अवस्था मे सुरुवाती औ अतिरिक्त तालिम कै व्यवस्था करय के परी । साथय सम्बन्धित देश के मनइन कै जीवन शैली से परिचित औ उहां कै मातृभाषा मे पढाय पावय वाले सक्षम औ योग्य शिक्षक लोगन कै पर्याप्त व्यवस्था करय के परी ।

सिद्धान्त २ :

युनेस्को शिक्षा के समूचे तह मे सामाजिक औ लैङ्गिक समानता कै प्रोत्साहन करय वाला साधन औ भाषिक विविधतायुक्त समाज के एक प्रमुख तत्व के रुप मे द्विभाषिक औ बहुभाषिक शिक्षा का समर्थन करत है ।

(१) सुरु मे मातृभाषा औ वकरेबाद (यदि मातृभाषा कामकाजी भाषा से अलग है ।) देश कै कामकाजी भाषा के साथ साथय एक या वोसे बेसी विदेशी भाषा मे संचार औ अभिव्यक्ति खातिर सुनय कै औ बातचीत करय के क्षमता का बढावा देवय के चाहीं ।

(२) विद्युतीय रुप मे नि:शुल्क पावा जाय वाले भाषा शिक्षा सामग्री कै विकास कै सहजता, कम्प्यूटर संजाल मे भाषा शिक्षण का प्रोत्साहन औ यहि क्षेत्र मे मानवीय संसाधन के साथय ओकर दक्षता बढावय के उद्देश्य से (खास कइकै विकासशील देशन खातिर) अन्तर्राष्ट्रिय समर्थन औ सहयोग का सबल औ बिस्तार करयवाले ढाँचा मे सबल राष्ट्रिय नीति बनावय पर जोर देवय के चाहीं ।

२१. युनेस्को २००३ एजुकेशन इन अ मील्टलिंगुअल वर्ल्ड पेरिस : युनेस्को ।

सिद्धान्त ३ :

युनेस्को विभिन्न जनसमुदाय समूह के बीचे समझदारी बढावय औ एक आपस मे मौलिक अधिकार कै सम्मान सुनिश्चित करय के खातिर अन्तर सांस्कृतिक शिक्षा मे जरुरी तत्व के रुप मे भाषा कै समर्थन करत है ।

१. शिक्षा के हरेक तह से लिङ्ग, जाति, भाषा, धर्म, उमिर या अपाङ्गता के नाते होय वाला भेदभाव हटावय के खातिर हरेक उपाय अपनावा जाय के चाहीं ।

२. अल्पसङ्ख्यक या आदिवासी जनता के शैक्षिक अधिकार का पूरापूर सम्मान यहि किसिम से कइ सका जात है :

- मातृभाषा मे पढय लिखय कै अधिकार कै कार्यान्यवयन, संचार औ ज्ञान के हस्तान्तरण मे संस्कृति अनुकूल शिक्षण विधि प्रयोग कइकै,

- मातृभाषी का खाली मातृभाषा के माध्यम से न पढाइ कै कामकाजी भाषव मे पढाये से ... येसे अल्पसङ्ख्यक औ जनजाति का बडे समुदाय के सहभागी होय औ योगदान देवय कै मवक्का दइ कै ।

३. शिक्षा से सांस्कृतिक औ भाषिक विविधता कै सकारात्मक मूल्य मान्यता के बारे मे जनचेतना बढावय के खातिर :

- पाठ्यक्रम मे अल्पसङ्ख्यक औ जनजाति कै वास्तविक औ सकारात्मक इतिहास, संस्कृति, भाषा औ पहिचान का सकारात्मक रुप मे सामिल करय मे प्रोत्साहित करय के चाहीं ।

- दुसरे संस्कृति का गहिराई से बूझय का सिखावत कै औ सिखत के यकरे सांस्कृतिक तत्वन मे जोड देवय के चाहीं । भाषा, खाली एक साधारण अभ्यास भर नाही होय के चाहीं येसे तो आउर जीवनशैली, आउर साहित्य औ आउर रीतिरिवाज देखय कै मवक्का देवय के चाहीं ।

सन्दर्भ सूची

अलिदोउ, एच., बोली ए., ब्रोक-उत्ने, बि., डिआलो, वाइ.एस., हेफ, के. र वोल्फ, एच. इ. २००६ अप्टिमाइजिङ लर्निङ एन्ड एजुकेसन इन अफ्रिका : द ल्याङ्वेज फ्याक्टर. अ स्टक-टेकिङ रिसर्च अन मदर टङ एन्ड बाइलिङ्गुअल एजुकेसन इन सब-साहारन अफ्रिका. पेरिस, एसोसिएसन फर द डेभलप्मेन्ट अफ एजुकेसन इन अफ्रिका (एडिइए). www.adeanet.org/biennial-2006/doc/document/B3_1_MTBLE_en.pdf. (नोभेम्बर १७, २००६ मा प्राप्त)।

अवस्थी, लवदेव २००४ एक्स्प्लोरिङ मोनोलिङ्गुअल स्कुल प्राक्टिसेज इन मल्टिलिङ्गुअल नेपाल. पिएचडी शोधग्रन्थ, कोपेनहेगेन : डेनिस युनभर्सिटी अफ एजुकेसन।

कमिन्स, जे. २००० बाइलिङ्गुअल चिल्ड्रेन्स मदर टङ : ह्वाइ इज इट इम्पोर्टेन्ट फ एजुकेसन : http:/www.iteachilearn.com/cummins/mother.htm (१७ नोभेम्बर २००६ मा प्राप्त)।

काफ्ले, वासुदेव, तिवारी, अरुण कुमार, पौडेल गणेश प्रसाद र पन्त हिरराम २०६३ समाहित शिक्षा र बालमैत्री विद्यालय : विद्यालय सहयोगी सामग्री, भक्तपुर नेपाल सरकार शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय, शिक्षा विभाग, समाहित शिक्षा शाखा।

ग्रिन, एफ. २००५. इकोनोमिक कन्सिडरेसनस इन ल्याङ्ग्वेज पोलिसी. रिसेन्तो, टि. (एड्.) २००५ एन इंट्रोडक्शन टु लैंग्वेज पालिसी: थियरी एण्ड मेथड ऑक्सफॉर्ड : बेसिल ब्लैक्वेल।

घरगेदाघी, जे. १९८६ अ प्रोलाँग टु नेशलन डिभेलप्मेंट प्लानिङ न्यू योर्क : ग्रीनउड प्रेस।

भिंग्रान, डी. २००५ लैंग्वेज डिसैडभान्टेस. द लर्निङ चैलेंज इन प्राइमरी एजुकेशन न्यु दिल्ली : ए.पी.एच. पब्लिशिङ।

डिपार्टमेंट आँफ एजुकेशन. १९९१एजुकेशन सेक्टर रिभ्यू वाइगानी, पपुआ न्यू गिनी, डिपार्टमेंट आँफ एजुकेशन।

डुचर, एन. २००४ एक्स्पांडिङ एजुकेशनल अपार्चुनिटिज इन लिंग्विस्टिकली डाइभर्स कंट्रिज वाशिङ्टन डी.सी. : सेंटर आँफ एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स। http://www.cal.org/resources/pubs/fordreport_040501.pdf (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

डेल्पिट, एल.डी. आ केमेलफिल्ड, जी. १९८५. एन इभैलुएशन आँफ द भिलेस तोक प्लेस स्कूल स्कीम इन द नार्थ सोलोमन्स प्रोभिंस. इआरयू रिपोर्ट नं. ५१ वाइगानी, पपुआ न्यू गिनी : युनिभर्सिटी आँफ पपुआ न्यू गिनी।

थाँमस, एस. १९९५. अ सर्वे आँफ भर्नाकुलर एजुकेशन प्रोग्रामिङ एट द प्रोभिसिअल लेभल विदिन पपुआ न्यू गिनी उकारुंपा : पपुआ न्यु गिनी, एसआईएल इंटरनेशनल।

बेंसन, सी. २००५. मदर टङ-बेस्ड टीचिङ एण्ड एजुकेशन फाँर गर्ल्स बैंकक : युनेस्को । http://unesdoc.unesco.org/images/001420/142079e.pdf (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त) ।

मेलोन, एस. २००५. प्लानिङ कम्युनिटी-बेस्ड एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइन्युरिटी लैंग्वेज कम्युनिटिज रिसोर्स मैनुअल फाँर मदर टङ स्पीकर्स फर माइन्युरिटी लैंग्वेजेज इंगेज्ड इन प्लानिङ एण्ड इंप्लिमेंटिङ एजुकेशन प्रोग्राम्स इन देयर वोन कम्युनिटिज ।

युनेस्को २००० दि इएफए २००० असेमसेंट : पपुवा न्यु गिनी कंट्री रिपोर्ट http://www2.unesco.org/wel/countryreports/papuanewguinea/contents.html

युनेस्को : २००३. एजुकेशन इन अ मल्टिलिंगुअल वर्ल्ड. पेरिस : युनेस्को httpM//www2.unesdoc.unesco.org/images/0012/001297/12978.pdf.

वाइको, जे १९९७ द भैलू आँफ ट्रेडिशनल नाँलेज इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी, वाइगानी सेमिनार वाइगानी, पपुवा न्यू गिनी : युनिभर्सिटी आँफ पपुआ न्यू गिनी http://pngbuai.com/600technology/information/waigani/w97-keynote.html

वाटर्स, जी. डनडर्प, ए: स्टिलिड्स, आई, वेमिन, जे: केरुवा, आर: स्टेफानिव, आर, वावदा, ए वाई. आ पैट्रिनस, एच. ए. १९९८ काँस्ट आँफ प्रोड्युसिङ एजुकेशनल मटिअरिअल्स इन लोकल लैंग्वेजेज. वाशिङ्टन डी.सी. : वर्ल्ड बैंक ।

शेफर, एस. २००३ (७-९ नवंबर) लैंग्वेज डिभेलप्मेंट एण्ड लैंग्वेज रिभाइटलाइजेशन : एन एजुकेशनल इंप्यर टिभ इन एशिया इंटरनेशलन कन्फरेंस आँन लैंग्वेज डिभेलप्मेंट, लैंग्वेज रिभाइटलाइजेशन एण्ड मल्टिलिंगुअल एजुकेशन ब्याङ्कक : थाइलैण्ड httpM//www.sil.org/asia/idc/plenary papers/sheldom shaeffer.pdf

परिभाषिक शब्दावली - भाषा

अलिखित भाषा : पढाई/लेखाई मे प्रयोग न आवा खाली बोलीचाली मे सीमित भाषा

अल्पसङ्ख्यक भाषा: अल्पसङ्ख्यक सामाजिक समूह वा जाति कै भाषा । कब्बव कब्बव सङ्ख्यात्मक रुप से बडा समूह मे बोलीचाली कै भाषा होय के बावजूद मुख्य भाषा के रुप मे प्रयोग न किहा जायवाले भाषा का बूझा जात है ।

कामकाजी भाषा : सरकारी कार्यालय, स्कूल सहित आउर संस्थन मे दैनिक कामकाज के खातिर प्रयोग होयवाला भाषा उदाहरण के रूप मे : भारत मे अङ्ग्रेजी औ हिन्दी का कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता दिहा है औ राज्यन मे अपनय आपन राज्य भाषा चलनचल्ती मे है । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज के भाषा कै मान्यता मिला है ।

घर कै भाषा : घर मे बोली जायवाली भाषा (पहिला भाषा औ मातृभाषा का देखा जाई) केहू केहू के घर कै भाषा एक से ज्यादव होइ सकत है ।

दूसर भाषा : पहिला या घर के भाषा का छोडि कै दूसर भाषा, व्यापक संचार सम्पर्क कै भाषा या विदेशी भाषा

सामान्य रुप मे घर से बहरे व्यापक समुदाय में बोला जाय वाले भाषाका बूझा जात है । द्विभाषिक शिक्षा में पहिला भाषा के बाद पढाई मे प्रयोग किहा जाय वाले भाष का दुसर भाषा (कामकाजी औ विदेशी) बूझा जात है ।

पहिला भाषा : मनई के मुह से निकरा पहिला भाषा, मौलिक भाषा (मातृभाषा, घर कै भाषा, स्थानीय भाषा का देखा जाई)

पैतृक भाषा : मनई कै पुर्वज या कवनो जाति या भाषिक समुदाय कै भाषा

भाषिका : भौगोलिक क्षेत्र या सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे होयवाला भिन्नता ('भेद' का देखा जाय ।)

भेद : भौगोलिक क्षेत्र औ सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे आवय वाला अन्तर

मातृभाषा : पहिला भाषा, मौलिक भाषा (पहिला भाषा, पैत्रिक भाषा, घर कै भाषा का देखा जाय ।)

मनई कै (१) सबसे पहिला सिखा भाषा (२) अपने या दुसरे से मातृभाषी वक्ता के रुप मे चिन्हावा भाषा (३) सबसे बेसी जानल भाषा (४) सबसे बेसी प्रयोग मे आवय वाली भाषा

माध्यम भाषा : स्कूल मे पढाई लिखाई कै माध्यम के रुपमे प्रयोग होयवाली भाषा

मुख्यभाषा : मुख्य समाज कै बोलय वाली या देश कै मुख्य भाषा के रुप मे रहा भाषा, देश मे ढेर जनसङ्ख्या कै बोलय वाली भाषा न होय के बावजूद राष्ट्रभाषा या कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता पावा भाषा ।

राष्ट्र भाषा : देश के भित्तर ब्यापक रुप मे बोला जायवाली भाषा, राष्ट्र से महत्वपूर्ण कहिकै किटान किहा भाषा, कब्बव कब्बव कामकाजिउ भाषा । उदाहरण : भारत मे दुई ठू कामकाजी भाषा औ बाइस ठू अनुसूचित भाषा किटान किहा है औ हरेक राज्य कै अपनय आपन राज्य भाषा चलन चल्ती मे हैं । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज कै भाषा तयँ किहा है । नेपाल कै अन्तरिम संविधान, २०६३ मे नेपाल के भित्तर बोला जायवाली हरेक मातृभाषा का राष्ट्रभाषा घोषित किहा है ।

विदेशी भाषा : अइसन भाषा जवन वक्ता के समुदाय मे न बोला जात होय ।

सम्पर्क भाषा : भाषिक समुदाय के बीचे एक दुसरे से सम्पर्क करय खातिर प्रयोग किहा जाय वाली भाषा । उदाहरण : नेपाल कै पहाडी क्षेत्र मे नेपाली, तराई मधेश के विभिन्न क्षेत्र मे मातृभाषा के साथेन हिन्दी औ हिमाली क्षेत्र मे तिब्बती

स्थानीय भाषा : अपने समुदाय मे बोला जायवाली भाषा । सम्पूर्ण रुप मे लेखन पद्धति कै विकास न भवा भाषव होइ सकत है ।

पारिभाषिक शब्दावली - सामान्य

आदिवासी : कवनो क्षेत्र वा देश मे आदिकाल से या बहुत पहिले से बसा मानव समूह/समुदाय

कार्यान्यवयन : कवनो नवां कानून लागू करय खातिर मनई या आउर स्रोत परिचालन करय वाला तरीका ।

गैरसरकारी संस्था : राष्ट्रिय सरकार कै अङ्ग न होय के बावजूद सामुदायिक विकास के खातिर काम करयवाला संस्था ।

जनचेतना बृद्धि : आपन जरुरत चीन्हि कै बोकां पावय खारि सहयोग देय वाला सूचना औ जानकारी देय कै काम ।

दुईभाषी : व्यक्ति : दुई भाषा बोलय औ बूझय (कब्बव कब्बव लिखिउ पढि सकय ।)

समाज : दुई भाषा बोलय वाले लोग साथय साथ रहय वाली समुदाय ।

दुइ भाषी शिक्षा (द्विभाषी शिक्षा) : साक्षरता औ औपचारिक लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे दुइ भाषा प्रयोग कइकै दिहा जाय वाली शिक्षा । यहमा व्यवहारिक रुप से साक्षरता औ पढाई लिखाई सिखावत के सबसे पहिले व्यक्ति कै पहिला भाषा/मातृभाषा से शुरु किहा जाला औ दुसरे भाषा का लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे धीरे धीरे सामिल किहा जाला ।

धारा प्रवाह : बिना कवनो अवरोध के बोलय, पढय औ लिखय मे उच्च दक्षता ।

निरक्षर : खुद कै जाना सुना भाषा मे लिखय पढय कै अवसर न पावा मनई ।

परिचालन : कवनो कार्यक्रम कै योजना बनावय औ लागू करय खातिर समुदाय औ समुदाय के सहयोगिन का सङ्गठित करय कै काम ।

पाठ्यक्रम : शैक्षिक कार्यक्रम के खातिर शिक्षण योजना, पढयवाला विषय वस्तु औ सहयोगी सामान ।

बहुभाषी : व्यक्ति : दुइ से ढेर भाषा जानय बूझय वाला (लिख पढ कइ सकय वाला) ।

समाज : दुइ से बेसी भाषा भाषी बसोबास करय वाला समाज ।

बहुभाषिक शिक्षा : साक्षरता औ औपचारिक शिक्षा मे दुइ से ढेर भाषा प्रयोग कइकै लिखाई पढाई (शिक्षण) करावा जायवाली शिक्षा - बच्चा या व्यक्ति के पहिला भाषा कै माध्यम से पढाई शुरु कराय कै दूसर तीसर भाषा से जोडत लइ जायवाली शिक्षा ।

भाषा विकास : शिक्षा मे केहू का कवनो भाषा बढिया से सुनय बोलय पढय औ लिखय कै सिखावय वाली काम ।

भाषिक अल्पसङ्ख्यक : कम जनसङ्ख्या होय के नाते या राजनीतिक औ आर्थिक कारण से समाज मे दुसरे के तुलना मे कमजोर रुप मे रहय वाला यक्कय भाषा बोलय वाले मनइन कै समूह ।

मातृभाषा पर आधारित

दुइ भाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई कै प्रक्रिया शुरु कइकै दूसर भाषा सिखावत जायवाला स्कूली शिक्षा प्रणाली (बहुभाषिक शिक्षा का देखा जाय ।)

बहुभाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई प्रक्रिया शुरु कइकै दुसरे भाषा के साथेन अउरो भाषा सिखावत जायवाला शिक्षा प्रणाली (दुइ भाषिक शिक्षा देखा जाय ।)

मुख्य समूह : बेसी जनसङ्ख्या होय के नाते या आर्थिक औ राजनीतिक कारण से देश मे शक्ति के रुप मे रहा सामाजिक समूह ।

मूलधार : मुख्य समूह कै भाषा औ संस्कृति (कब्बव कब्बव खाली मुख्य समूह के खातिर बनावा स्कूल औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक लोगन कै जरुरत न पूरा करयवाला स्कूल बूझा जाला ।)

लेखन पद्धति : लिपि हिज्जे नियम औ विराम चिन्ह सहित के लेखन कै मानक प्रणाली ।

लैङ्गिक समानता : मेहरारु औ मर्द, बिटिया या बेटवा के मानव अधिकार का पूरा पूर जानय बूझय खातिर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक औ राजनीतिक विकास मे योगदान करय खातिर औ वोसे लाभ लेवय खातिर समान परिस्थिति कै अवस्था ।

सल्लाहकार समिति : बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम मे सामिल अगुवा लोगन कै समिति, (यहमा प्राय: मातृभाषा बोलयवाले औ सहयोगी संस्था कै सदस्य होत हैं ।)

सहजकर्ता : आउर लोगन का लेखपढ मे सहयोग करयवाले मनई, शिक्षक ।

साक्षरता : जीवन मे जरुरी व्यवहार पूरा करय खातिर पढय, लिखय औ हिसाब करय के साथेन आउर भाषिक क्रियाकलाप ठीक से करय कै क्षमता ।

साझेदार : नवा कार्यक्रम लागू करय खातिर समुदाय से मिलि कै काम करय वाला मनई, संस्था या निकाय ।

सिखाई उपलब्धि : स्कूल मे होय वाले पढाई कै विषयवस्तु, भाषा कै ज्ञान, हुनर औ दक्षता ।

स्थायित्व : ज्यादे समय तक समय के हिसाब से निरन्तर स्थापित गुण ।

बहुभाषिक शिक्षा विस्तार के खातिर उपयोगी सामग्री :

स्कूल के पहुच से बहरे रहै वाले लोगन कै समावेशीकरण

एशिया औ प्रशान्त क्षेत्र कै शिक्षा नीति औ व्यवहार मे भाषा

© विक्रम मणि त्रिपाठी

एशिया औ प्रशान्त क्षेत्र कै शिक्षा नीति औ व्यवहार मे भाषा

१. नेपाल कै शिक्षा नीति औ व्यवहार मे भाषा

नेपाल भाषिक विविधता वाला देश होय । नेपाल मे केतना भाषा बोली जाति है, यहि बारे मे फरक फरक समय मे फरक फरक तथ्याङ्क मिलत हैं । नेपाल कै जनगणना २०५८ के अनुसार नेपाल मे ११३ से बेसी जाति कै लोग रहत हैं औ ऊ लोग ९२ से ज्यादे भाषा बोलत हैं (सम्पूर्ण जानकारी के खातिर परिशिष्ट १ देखा जाय) । एथनोलाग (२००५) मे दिहा सूचीअनुसार नेपाल मे १२६ भाषा बोली जाति है । नेपाल मे पावा जायवाले भाषा चार परिवार से है । ऊ होय भारोपीय, चिनी तिब्बती, द्रविड औ आग्नेय । यी भाषन मध्ये अधिकांश अबहिनो कथ्य परम्परा मे सीमित हैं । नेपाल मे मातृभाषा के रुप मे बोली जाय वाले भाषा दुसरेव भाषा के रुप मे बोली जात हैं । यी मध्ये नेपाल कै जनगणना २०५८ नेपाल मे दुसरे भाषा के रुपमे बोला जाय वाले १२ भाषा के तथ्याङ्क उपलब्ध कराये है । यी भाषा नेपाली, मैथिली, भोजपुरी, थारु, तामाङ, नेवार, मगर, अवधी, बान्तवा, गुरुङ, लिम्बू औ बज्जिका होय । दुसरे भाषा के रुप मे नेपाली बोलय वाले अधिकतर वक्ता भोट वर्मेली परिवार कै मातृभाषी है ।

यहि परिवार के अधिकांश लोगन कै सम्पर्क भाषा (दूसर भाषा) नेपाली होय । दुसरे भाषा के रुप मे हिन्दी कै प्रयोग मुख्य रुप मे तराई-मधेश क्षेत्र मे होत है ।[१]

समाज मे एक से ढेर भाषा बोली जाय वाले अवस्था मे सामान्य रुप मे ऊ फरक फरक भाषा बोलय वालेन के बीचे सञ्चार सम्पर्क सजिल नाही रहत । लेकिन नेपाल कै स्थिति येसे फरक है । यही सम्बन्ध मे सामान्य रुप मे दुई किसिम कै प्रवृत्ति देखा जात है :

१. तराई मधेश क्षेत्र मे पुरुब मेची से पच्छू महाकाली तक बोली जायवाली भाषा (राजवंशी, मैथिली, बज्जिका, भोजपुरी, अवधी, थारु आदि) कै सीमा स्पष्ट रुप से अलग करब कठिन है या कवने जगही एक भाषा खतम होत है औ दूसर भाषा शुरु होत है यी अलगियाइब गाढ़ है । यही नाते तराई मधेश कै नकचेरे कै बासिन्दा एक दुसरे के बोली का सहजय बूझत हैं । कम दूरी मे यइसन होय के बावजूद दूरी जेतनय बढत जात है वतनय बोली बूझय मे कठिनाई होत जात है । यही नाते दुई भाषा के अन्तिम छोर कै बासिन्दा एक दुसरे के बोली का नाही बूझि पवते । यही कारण के नाते तराई मधेश मे खास कइकै शिक्षित वर्ग हिन्दी का सम्पर्क भाषा के रुप मे अप(नावत देखा जात है ।

   मेची से महाकाली तक तराई मधेश औ भित्री मधेश मे बोली जायवाली थारु भाषा के सम्बन्धव मे यइसनय स्थिति देखा जात है ।

---

१. यादव, योगेन्द्र प्रसाद. २००३. लैंग्वेज, पपुलेशन मानोग्राफ आँफ नेपाल, भोलुम १. काठमांडू सेंद्रल ब्यूरो अँफ स्टाटिस्टिक्स ।

हिमाली औ पहाडी क्षेत्र मे बोली जायवाली नेपाली कै भाषिकन के बीचेव यही किसिम से तराई मधेश मे बोली जायवाली भाषिकन के जइसय सम्बन्ध मिलत है ।

२. मुख्य रुप से हिमाली औ पहाडी क्षेत्र मे बोली जायवाली औ एक दुसरे के बीचे ढेर अन्तर होयवाली भोट वर्मेली भाषा बोलय वाले एक दुसरे कै भाषा नाही बूझत हैं । यइसने स्थिति कै यी सब भाषा का बोलयवाले सामान्य रुप मे सम्पर्क भाषा के रुप मे नेपाली का प्रयोग करत हैं । यही किसिम से हिमाली क्षेत्र मे तिब्बती/शेर्पा भाषा काँ सम्पर्क भाषा के रुप मे प्रयोग करत देखा जात है ।

यकरे साथय नेपाली काँ छोडिकै आउर मातृभाषी लोग शिक्षा, प्रशासन आदि कामव काज के खातिर नेपाली काँ दुसरे भाषा के रुप मे प्रयोग करत है । नेपाल कै बहुभाषिक स्थिति सारे भाषन का विभिन्न किसिम से प्रभावित किहे है । यह मध्ये दुइ मुख्य अवस्था यहि किसिम से हैं :

१. अधिकतर भाषन मे एक भाषा कै विशेषता दुसरे भाषा मे जात देखा जात है । यही के नाते विभिन्न भाषा मे सम्पर्क कै कारण से यक्कय भाषव मे भिन्नता पावा जात है । मनाङ कै गुरुङ भाषा (मनाङ्वा), कास्की औ लमजुङ कै गुरुङ भाषा से अलग होब या रुपन्देही मे बोली जायवाली अवधी औ बाँके मे बोली जायवाली अवधी के बीच शब्द भण्डार औ संरचना मे सामान्य अन्तर होब येकर एक उदाहरण होय ।

२. कुछ जाति कै लोग अपने मातृभाषा काँ छोडि कै दुसरे भाषा कां आपन मातृभाषा बनाये है । खास कइके नेपाली मातृभाषी बाहुल्य पहाडी क्षेत्र मे रहय वाले या वहि जगहीं दुसरे जगही से आइकै बसय वाले अल्पसङ्ख्यक भाषा कै वक्ता नेपाली का आपन मातृभाषा बनाय लेत हैं । येसे भाषा लोप होय कै स्थिति बनि जात है ।[२]

नेपाल मे ढेर अल्पसङ्ख्यक लोगन कै भाषा लोप होय के अवस्था मे हैं । येकर कारण बोलय वाले लोगन कै सङ्ख्या कम होब, नवां पुस्ता मे भाषा कै हस्तान्तरण न होब, बसाई सराई, लेख्य परम्परा न होब औ पढाई, सरकारी कामकाज के साथय सञ्चार माध्यम मे यी भाषन कै प्रयोग न होब होय । अइसने अवस्था मे भाषिक समुदाय, भाषाविद, सरकार औ गैरसरकारी संस्थन का मिलिकै लोपोन्मुख भाषन कै अभिलेखीकरण संरक्षण औ यी सब का फिर से जीवित बनाइब उचित होई । यकरे बादय शिक्षा औ दैनिक जीवन मे प्रयोग कइकै यइसनेह भाषन का आवय वाले पुस्ता के खातिर बचावा जाय सकत है ।

नेपाल मे २०४६ साल तक एक भाषा नीति लागू किहा रहा । २०४६ साल मे प्रजातन्त्र का फिर से स्थापित करय के साथय नेपाली का छोडिकै आउर मातृभाषिन मे यी चेतना उभरि के आय कि भाषा औ संस्कृति कै आपन अस्तित्व है । वकरेबाद नेपाल अधिराज्य कै संविधान २०४७ बनावा गै । यहमा नेपाली के साथय दुसरेव भाषन का मान्यता मिला औ भाषा के बारे मे निम्न अनुसार कै व्यवस्था किहा गै :

२. राष्ट्रीय भाषानीति सुझाव आयोग कै प्रतिवेदन, २०५०. काडमांडू राष्ट्रीय भाषनीति सुझाव आयोग, प्रज्ञा भवन कमलादी ।

१. देवनागरी लिपि मे नेपाली भाषा नेपाल कै राष्ट्रभाषा होई औ यी सरकारी कामकाज कै भाषा रही (भाग - १, धारा ६.१)

२. नेपाल के भित्तर मातृभाषा के रुप मे बोली जायवाली कुलि भाषा नेपाल कै राष्ट्रिय भाषा होंय । (भाग - १, धारा ६.२)

३. नेपाल अधिराज्य मे बसोबास करय वाले हरेक समुदाय काँ अपने भाषा, लिपि औ संस्कृति कै संरक्षण सम्बर्द्धन करय कै अधिकार होई । (भाग ३, धारा १८.१)

४. हरेक समुदाय का अपने लरिकन के खातिर प्राथमिक तह तक अपने मातृभाषा मे शिक्षा देवय के हिसाब से स्कूल चलावय के मिली । (भाग ३, धारा १८.२)

५. विभिन्न धर्म, जात, जाति, सम्प्रदाय औ भाषा भाषिन के बीचे स्वस्थ्य औ सुमधुर सामाजिक सम्बन्ध विकसित कइकै हरेक भाषा, साहित्य, लिपि, कला के बीचे कै सुमधुर सामाजिक सम्बन्ध विकसित कइके भाषा, साहित्य, लिपि, कला औ संस्कृतिक कै विकास के जरिये सांस्कृतिक विविधता कायमै राखत राष्ट्रिय एकता का सुदृढ करय कै नीति राज्य अवलम्बन करी । (भाग ४, धारा २६.२)

यहि संविधान कै सबसे बडा कमजोरी यहि ब्यवस्थन का लागू करय के खातिर स्पष्ट नीति औ योजना न होब रहा । संविधान के यहि ब्यवस्थन का ध्यान मे राखि कै २०५० साल मे सरकार राष्ट्रिय भाषा नीति सुझाव आयोग कै गठन किहिस । यहि आयोग कै मुख्य दुई उद्देश्य रहा : पहिला राष्ट्रिय भाषन कै प्रवर्द्धन करब औ दूसर स्थानीय प्रशासन, प्राथमिक शिक्षा औ सञ्चार माध्यम मे ओकर प्रयोग करब । वकरेबाद प्राथमिक शिक्षा औ संञ्चार माध्यम मे अल्पसङ्ख्यक भाषन कै प्रयोग पर कुछ कामव भय । पाठ्यक्रम विकास केन्द्र १९ राष्ट्रिय भाषन मे कक्षा १ से ५ तक पाठ्यपुस्तक तइयार कराय चुका औ बाकिउ के खातिर तइयारी कै क्रम चलत है । यी कुलि भाषन का स्कूल तक लइ जाय खातिर शुरु शुरु मे भवा अइसन काम स्वागत योग्य है ।

यही भाषन मध्ये कै एक भाषा अवधिउ होय । अवधी भाषा मे औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र मे कक्षा १ से लइकै कक्षा - ५ तक औ कक्षा ९-१० के इच्छाधीन विषय के रुप मे पाठ्यक्रम औ पाठ्यपुस्तक बनि कै लागू होइ चुका हैं । साथ साथय यहि भाषा मे तीन ठउर बाल सन्दर्भ सामग्री (अवधी कथा, अवधी संस्कृति व्रत औ तिउहार औ अवधी समाज कै प्रेरक व्यक्तित्व) बनि कै अवधी भाषी जिलन के स्कूलन मे जाय चुका हैं । यकरे साथय युनाइटेड मिशन टु नेपाल के सहयोग मे बहुभाषिक शिक्षा के खातिर कक्षा १ कै अङ्ग्रेजी औ नेपाली छोडि कै बाकी विज्ञान, गणित, सामाजिक शिक्षा औ सिर्जनात्मक अभिव्यक्तिशील कला आदि कै पुस्तक तयार होइके कपिलवस्तु जिल्ला के ५ विद्यालय मे पढाई शुरु होइ चुका है ।

यही किसिम से अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र मे मथानी भाग - १, भाग - २ औ भाग - ३ पुस्तक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र औ युनेस्को, काठमाडौं कै द्वारा संयुक्त रुप से तयार होइकै साक्षरता कक्षा मे लागु होइ चुका है । यकरे साथय नव साक्षर लोगन के खातिर सात ठउर स्वाध्यन सामाग्रिउ बनाय कै अवधी भाषी क्षेत्र के विभिन्न सामुदायिक अध्ययन केन्द्रन औ साक्षरता कक्षन का उपलब्ध करावा जाय चुका है ।

जहां तक अवधी भाषा कै सवाल है, नेपाल मे अवधी भाषा भाषी समाज कै मुख्य वसोवास क्षेत्र तराई मधेश क्षेत्र के नारायणी नदी से पच्छू नवलपरासी, रुपन्देही, कपिलवस्तु, दाङ, बाके, वर्दिया, कैलाली औ कञ्चनपुर जिला होंय । २०५८ के जनगणना के तथ्याङ्क के अनुसार नेपाल मे यहि भाषा भाषी लोगन कै कुलि जनसङ्ख्या ५,६०,७४४ है । यकरे साथय नेपाल के यहि क्षेत्र से सटा भारत के उत्तर प्रदेस राज्य अन्तरगत के लगभग सम्पूर्ण भूभाग मे बसोवास करय वाले लोग यिहय भाषा बोलत है ।

यही किसिम से अवधी शब्द का देखत के अवधी प्राचीन अवध राज्य से सम्बन्धित है । येंका नबाब लोगन के शासन काल मे अवध राज्य कहा जात रहा तो वकरे पहिले यी क्षेत्र कोशल राज्य के नाँव से विश्व प्रसिद्ध रहा । यहि राज्य मे बर्तमान नेपाल कै शाक्य औ कोलीय गणराज्य के साथय वर्तमान भारत के उत्तर प्रदेस राज्य अन्तरगत कै मल्ल गणराज्य, काशी महाजनपद, कोशल महाजनपद लगायत कै आठ गणराज्य आवत रहें । वर्तमान मे कोशल या अवध राज्य तो नाही हैं, लेकिन आजव यहि क्षेत्र मे बोली जायवाली भाषा का अवधी भाषा के नाँव से जाना जात है ।

अवधी भाषा भारोपीय परिवार कै आर्य इरानेली शाखा के अन्तरगत आवत है । यी भाषा देवनागरी लिपि मे आधारित होय के साथय येकां लिखय के खातिर कैथी औ मुण्डा लिपियव कै प्रयोग किहा जात है ।

नेपाल सरकार जोम्तिन कन्भेंशन औ डकार फोरम जइसन विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय सभा सम्मेलन मे भाग लइकै आदिवासी औ अल्पसङ्ख्यक सहित हरेक लरिकन बिटियन का स्तरीय प्राथमिक शिक्षा कै अवसर देय्क प्रतिबद्धता जनाये है । यही सन्दर्भ मे 'सबके खातिर शिक्षा' कै छ ठउर सार्वभौम उद्देश्य निर्धारित किहा गा है । ऊ होय: [३]

१. बाल विकास कार्यक्रम कै विस्तार औ सुधार करब ।

२. समूचे लरिकन बिटियन कै प्राथमिक शिक्षा मे पहुच कै गारेन्टी करब ।

३. पिछडा जाति, जनजाति औ अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय के लरिकन बिटियन सहित समूचे लरिके बिटियन का सिखाई के जरुरत कै परिपूर्ति करब ।

४. प्रौढ निरक्षरता दर मे कमी लाइब ।

५. लैङ्गिक औ सामाजिक भेदभाव मिटाइब ।

६. गुणस्तरीय शिक्षा कै समूचे पक्ष मे सुधार लाइब ।

यहि उद्देश्यन के साथय नेपाल के खातिर एकठू आउर लक्ष्य निर्धारित किहा गा है - आदिवासी औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक लोगन का मातृभाषा के माध्यम से आधारभूत औ प्राथमिक शिक्षा लेवय कै हक सुनिश्चित करय के ।

३. सबके खातिर शिक्षा २००४-२००९ मुख्य दस्तावेज २००३. काडमांडू, नेपाल सरकार शिक्षा औ खेलकुद मंत्रालय, पृ. १२ ।

सबके खातिर शिक्षा/नेपाल (२००४-९) कै लक्ष्य पावय खातिर सङ्क्रमणीय बहुभाषिक शिक्षा नीति अपनावा गा रहा । जवने अनुसार लरिके बिटियय अपने मातृभाषा मे आधारभूत शैक्षिक कला हासिल कइ पइहैं औ क्रमिक रुप मे सम्पर्क भाषा औ कामकाजी भाषा कै प्रयोग कइ पइहैं । येसे ऊ लोग कामकाजिउ भाषव मे अपनत्व कै अनुभव करिहैं । वकरे बाद बृहत क्षेत्र मे संचार करय के खातिर, विज्ञान औ तकनीकि में पहुच बनावय कै खातिर औ पाठ्यसाग्री बूझय के खातिर अङ्ग्रेजी जइसन विदेसिउ भाषा सिखि पइहैं ।

जनआन्दोलन २ के बाद नेपाल कै अन्तरिम संविधान २०६३ प्रयोग मे आ है । यह में भाषा के बारे मे निम्नलिखित प्रावधान है :

१. नेपाल मे बोला जायवाली सारे मातृभाषा राष्ट्रभाषा होय ।

२. देवनागरी लिपि मे नेपाली भाषा सरकारी कामकाज कै भाषा होई ।

३. उपधारा (२) मे चाहे जवन लिखा होय लेकिन स्थानीय निकाय औ कार्यालय मे मातृभाषा प्रयोग करय मे कवनो बाधा पहुचब नाही माना जाई । यहि किसिम से प्रयोग किहा भाषा काँ राज्य सरकारी कामकाज के भाषा मे उल्था कराय कै अभिलेख राखी (भाग १ धारा ५) ।

शिक्षा औ संस्कृति सम्बन्धी अधिकार के सम्बन्ध मे यहि संविधान मे निम्नानुसार कै प्रावधान है :

१. हरेक समुदाय काँ कानून मे किहा व्यवस्था अनुसार अपने मातृभाषा मे आधारभूत शिक्षा पावय कै अधिकार रही ।

२. नेपाल मे बसा हरेक समुदाय काँ अपने भाषा, लिपि, संस्कृति, सांस्कृतिक सभ्यता औ सम्पदा कै संरक्षण सम्बर्द्धन करय कै अधिकार रही (भाग - ३, धारा १७) ।

कुछ समय पहिले नेपाल मे बहुभाषिक शिक्षा के क्षेत्र मे कुछ काम शुरु भय । शिक्षा मन्त्रालय फिनलैन्ड के सहयोग मे विभिन्न भाषिक परिवार के सात ठू अल्पसङ्ख्यक भाषा काँ मातृभाषा के रुप मे बोलय वाले समुदायन के बीचे बहुभाषिक शिक्षा के माध्यम से पाइलट परियोजना पूरा किहिस । वह मे तमाङ, आठपहरिया राई, संथाली, उराव, मैथिली, मगर ढुट औ राना थारु भाषा भाषी समुदाय रहा । यकरेबाद कुछ दिन पहिले शिक्षा मन्त्रालय, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, युनेस्को औ एस.आई.एल. इन्टरनेशनल के संयुक्त आयोजना मे बहुभाषी शिक्षा सम्मेलन सम्पन्न भय रहा । यी सम्मेलन आधारभूत शिक्षा मे मातृभाषा के प्रयोग के सम्बन्ध मे जनचेतना जगावय के खातिर आयोजित किहा गा रहा ।

यही किसिम से २०६५ माघ मे शैक्षिक जनशक्ति विकास केन्द्र औ शिक्षा विभाग के संयुक्त प्रयास से १५ दिन कै "वहुभाषी शिक्षा सम्बन्धी शिक्षक प्रशिक्षण सामग्री विकास" विषयक कार्यशाला गोष्ठी सम्पन्न भय । यकरेबाद अवधी भाषा मे बहुभाषी शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षक सामग्री औ स्वाध्ययन सामग्री तैयार किहा गै । वकरे बाद फिर से शैक्षिक जनशक्ति विकास केन्द्र औ वहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षा विभाग, सानोठिमी, भक्तपुर के आयोजना मे १२ दिन कै "वहुभाषी शिक्षा प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला गोष्ठी" सम्पन्न भय ।

हालय मे त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तरगत कै शिक्षा विकास तथा अनुसन्धान केन्द्र बल्खु मे बहुभाषिक शिक्षासम्बन्धी विविध जानकारी देवय खातिर युनेस्को काठमाडौँ के सहयोग से बहुभाषिक स्रोत केन्द्र कै स्थापना किहा गा है ।

यही क्रम मे २०६७ अषाढ २३ औ २४ गते पाठ्यक्रम विकास केन्द्र के आयोजना मे भक्तपुर मे मातृभाषा कै पाठ्यपुस्तक औ पाठ्यसामग्री कै प्रवोधीकरण औ प्रदर्शन कार्यक्रम सम्पन्न भय । कार्यशालाा मे पाठ् यक्रम विकास केन्द्र के द्वारा बनावा पाठ्यपुस्तक, पाठ्यसामग्री के बारे मे सामान्य जानकारी, वह सब कै प्रयोग कै अवस्था औ भविष्य मे वहुभाषिक शिक्षा के योजना के बारे मे विचार विमर्श भय । यहमा अन्तरिम त्रिवर्षीय योजना २०६७/०६८ औ २०६९/०७० मे यहमा बहुभाषिक शिक्षासम्बन्धी प्रावधान औ वहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम निर्देशिका २०६६ मे रहा वहुभाषिक शिक्षा कै कार्यान्यवयन सम्वन्धी प्रावधानव पर बहस बतकही चला ।

यकरे बाद यहि पाइलट परियोजना के अलावा अबहिन तक नेपाल मे राज्य के लगानी मे कवनो बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम लागू भवा नाही देखात है । विभिन्न मातृभाषा काँ विषय के रुप मे पढावय कै सोच औ अभ्यासव मे राज्य के ओर से कुछ त्रुटी हैं । सम्वन्धित मातृभाषिन सहित लागू करय कै इच्छा राखय वाले स्रोत व्यक्ति, शिक्षाविद, अभिभावक लोग के ओर से दर्शावा कुछ त्रुटिन का यहि किसिम से राखा जाय सकत है ।

- नीति निर्माता लोगन के बिचवय बहुभाषी चिंतन मे खोट है । यकरे चलते बहुभाषिक शिक्षा कै नेपाल मे हाथी के दात जइसै देखावय खातिर कुछ आउर औ खाय खातिर कुछ आउर कै स्थिति है । काहे कि नीति निर्धारक लोग नीति निर्धारण करय से पहिले देश कै भुगोल, हावापानी, समकालीन भौतिक परिवेश सहित कै सम्भाव्यता अध्ययन के बिना कार्यक्रम कै तर्जुमा करत हैं । जेकरे चल्ते नीति औ कार्यक्रम फेल होइ जात है । उदाहरण के रुप मे कब्बव समूचे विषय का मातृभाषा के रुप मे पढावय कै निर्णय, तो कब्बो मातृभाषा काँ एक विषय के रुप मे पढावय कै निर्णय तो कब्बव नेपाली से लक्षित मातृभाषा मे अनुवाद करावय कै अभ्यास आदि बिसङ्गति देखा गा है ।
- सम्भाब्यता अध्ययन औ कार्यान्वयन पक्ष यतना कमजोर है कि नीति औ कार्यक्रम रहिय्य भुलाय जात है ।
- शैक्षिक सामग्री के हक मे पर्याप्त परिमाण मे उत्पादन औ वितरण नाही होत है ।
- शैक्षिक सामग्री बनवहू मे कमजोरी है । एकबाजी जवन छपि गै ऊ छपि गै । वोकां जरुरत के अनुसार परिमार्जित नाही किहा जात है ।
- मातृभाषा मे अध्ययन अध्यापन के खातिर दक्ष जनशक्ति कै उत्पादन औ आपूर्ति नाही होत ।
- मातृभाषा पर आधारित वहुभाषिक शिक्षा के महत्व के प्रति जनचेतना कै कमी है । यही नाते प्रायोजित सामुदायिक स्कूलन मे कामकाजी भाषा नेपाली औ निजी शैक्षिक संस्थन मे तो कामकाजी भाषा नेपालिउ से दूर हटि के अङ्रेजियय मे पढय लिखय्क शुरु करत है । परिणाम स्वरुप भाषागत कष्ट सहत रटि कै कक्षा तो पास कइ लेत हैं, बहिर अपने समुदाय औ अपने लोगन से कटि कै रहि जात है ।

- मातृभाषा विषय कै अध्ययन कइउ लिहा जाय तो ऊ रोजगारीसे नाही जुडा है । विभिन्न अनुसंधानकर्ता लोगन के अनुभव के अनुसार कामकाजी भाषा से अलग रहय वाले मातृभाषी लोग सवाल करत हैं कि वनकै लरिके मातृभाषा पढि के का करिहैं, काहे कि रोजगारी के खातिर या तो नेपाली या अङ्ग्रेजी चाहीं ।

- ऐच्छिक बिषइयव के रुप मे मातृभाषा पढावय के खातिर बिषय कै बर्गीकरण त्रुटिपूर्ण देखा जात है । काहे कि मातृभाषा विषय कै विकल्प मे आउर स्थानीय विषय राखय कै कोशिस प्राथमिक औ निम्न माध्यमिक तह मे होत है । लेकिन माध्यमिक तह के कक्षा ९ औ १० मे ऐच्छिक विषय समूह मे आजव अवधी समूह मे अतिरिक्त गणित विषय राखा है । जवने के चाहिउ कै अवधी भाषी विद्यार्थी अतिरिक्त गणित छोडि के अवधी भाषा नाही लइ पावत हैं ।

२. दक्षिण पूर्वी एशिया के शिक्षा नीति औ व्यवहार मे भाषा

ब्रुनाई दारेसलाम :

ब्रुनाई मे १७ ठउर भाषा बोली जाय कै अनुमान किहा जात है । यिहां कै कामकाजी भाषा मानक मलय होय । लेकिन देश मे सबसे ढेर प्रयोग किहा जायवाला भाषा ब्रुनाई मलय होय । शिक्षा कै माध्यम भाषा मानक मलय औ अङ्ग्रेजी होय । यिहा स्थानीय भाषा काँ शिक्षा मे प्रयोग नाही किहा जात है ।

कम्बोडिया :

कम्बोडिया मे करिब २० भाषा बोली जात है । सबसे बडा जातीय समुदाय ख्मेर कुल जनसङ्ख्या कै करिब १० प्रतिशत हैं । कम्बोडिया मे हरेक तह के शिक्षा मे कामकाजी भाषा ख्मेर कै प्रयोग किहा जात है । हालय कै कुछ पाइलट परियोजना के तहत कम्बोडिया कै पूर्वी पहाडी क्षेत्र मे कइउ ठू अल्प सङ्ख्यक भाषन का शिक्षा कै माध्यम के रुप मे प्रयोग किहा गा है । यहि परियोजनन से प्रौढ औ लरिकन सबकाँ औपचारिक औ अनौपचारिक दूनव तरिका से द्विभाषी शिक्षा दिहा जात है । सन् २००३ कै शिक्षा सम्बन्धी कानून कै मसौदा अल्पसङ्ख्यक जाति के लोगन का अपने मातृभाषा मे पढय कै अधिकार दिहे है । लेकिन यी कानून अबहिन तक स्वीकृत नाही भा है ।

इन्डोनेशिया :

इन्डोनेशिया एशिया भर मे सबसे ढेर भाषिक विविधता वाला देश होय । यिहा ७०० से ढेर भाषा बोला जात है । भाषा इन्डोनेशिया यिहां कै कामकाजी भाषा होय । यी हरेक तह के शिक्षा मे माध्यम भाषा के रुप मे प्रयोग किहा जात है । भाषा इन्डोनेशिया का मातृभाषा के रुप मे बोलय वाले इन्डोनेशिया के कुल जनसङ्ख्या कै खाली १० प्रतिशत हैं । संविधान औ शिक्षा ऐन के द्वारा प्राथमिक कक्षा मे विद्यार्थिन के मातृभाषा का माध्यम भाषा के रुप मे प्रयोग करय पावय के बाति कै समर्थन किहे है । लेकिन व्यवहार मे कुछ क्षेत्र के सरकारी विद्यालयन मे एक विषय के रुप मे बाहेक आउर जगही स्थानीय भाषा कै प्रयोग कमय किहा जात है । स्थानीय भाषन का अनौपचारिक शिक्षा अन्तर्गत प्रौढ साक्षरता कार्यक्रम मे ढेर जगहीं प्रयोग किहा गा है ।

लाओ पिडिआर :

जनतान्त्रिक गणतन्त्र लाओ मे ८२ ठू भाषा बोलय कै अनुमान किहा जात है । हरेक तह मे पढाई कै माध्यम भाषा लाओ होय । यी यिहा कै कामकाजी भाषा होय औ करीब आधा जनसङ्ख्या मातृभाषा के रुप मे येकर प्रयोग करत हैं । अबहिन तक शिक्षा मे अउरो स्थानीय भाषा कै प्रयोग नाही किहा है । लेकिन यहि भाषन का अल्पसङ्ख्यक जातीय क्षेत्र के स्कूलन मे बोलीचाली मे ढेर प्रयोग किहा जात है ।

मलेशिया :

मलेशिया मे करिब १४० भाषा बोली जात हैं । उहा कै कामकाजी भाषा मलय होय । अधिकांश स्कूल मे मलय का पढाई कै माध्यम भाषा के रुप मे प्रयोग किहा जात है । राष्ट्रिय प्रकृति के प्राथमिक विद्यालयन मे मन्दारिन, तमिल औ आउर भारतीय भाषन का पढाई कै माध्यम के रुप मे प्रयोग किहा जात है । मलय भाषा का माध्यम के रुप मे प्रयोग करय वाले स्कूलन मे तमिल, मन्दारिन औ आउर आदिवासी समुदाय के भाषन का एक ठू विषय के रुप मे पढयक मिलत है । १९९० के दशक के अन्तिम अन्तिम मे पूर्वी मलेशिया कै आदिवासी समुदाय कै लोग स्थानीय भाषा मे शिक्षा कार्यक्रम कै शुरुवात किहिन । यइसनहा कार्यक्रम मे मुख्यत: स्कूल मे भाषन का माध्यम बनाई के विभिन्न विषयन कै पढाई करावा जात है । यकरे बावजूद यी प्रयासन का द्विभाषी शिक्षा के रुप मे नाही लिहा जाय सकत है । काहे कि यहि भाषन का औपचारिक रुप मे पढाई कै माध्यम नाही बनावा गा है ।

म्यानमार :

म्यानमार संघ मे १०० से ढेर भाषा बोली जात है । सरकारी शिक्षा प्रणाली मे बामा (वर्मेज) भाषा पढाई के माध्यम के रुप मे है । यी म्यानमार कै कामकाजी भाषा होय । सरकारी शिक्षा मे स्थानीय भाषा कै प्रयोग नाही किहा जात । तब्बव, खास कइकै जातीय औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक ढेर रहयवाले उत्तरी राज्यन मे नागरिक समाज संगठन औ भाषिक समुदायन का अनौपचारिक शिक्षा औ अनौपचारिक शिक्षा (प्रौढ साक्षरता) मे स्थानीय भाषा कै बहुत जगही प्रयोग होत है ।

फिलिपिन्स :

फिलिपिन्स मे करीब १७० भाषा बोली जाति है । अधिकतर भाषा मे लेख्य परम्परा है । यहि मध्ये १०० से ढेर मे लिखित साहित्यव है । अङ्ग्रेजी औ फिलिपिनो का शिक्षा औ साक्षरता मे प्रयोग करयके खातिर कामकाजी भाषा कै मान्यता मिला है । कुछ सरकारी स्कूलन मे स्थानीय भाषन का संक्रमणीय या सहायक भाषा के रुप मे शुरुवाती प्राथमिक कक्षन मे माध्यम के रुप मे प्रयोग किहा गा है । तब्बव स्थानीय भाषन का पाठ्यवस्तु कै व्याख्या करयके खातिर बेसी से बेसी मौखिकै रुप कै प्रयोग किहा जात है । प्रौढ लोगन का साक्षर बनावय खातिर अधिकतर जगही अनौपचारिक शिक्षा कै प्रयोग किहा जात है ।

सिङ्गापुर :

सिङ्गापुर मे २० से ढेर भाषा बोली जाति है । यिहा कै सरकार जनता जनता के बीचे सामाजिक बहुभाषिकता औ द्विभाषिकता संस्थागत करयक लक्ष्य राखत है । जनसङ्ख्या कै तीन चौथाई मनई चीि नया मूल कै हैं । ऊ लोग चिनिया भाषा कै विभिन्न भाषिका बोलत हैं । हरेक तह मे शिक्षा कै माध्यम भाषा अङ्ग्रेजी भर है । मातृभाषा के रुप मे मान्यता पावा तीन भाषा मलय, मन्दारिन, चिनिया औ तमिल दुसरे भाषा के रुप मे पढावा जात है । आउर भाषा बोलय वाले स्कूल के पाठ्यक्रम मे तीनव भाषा मध्ये कवनो एक का लेवय के पावत हैं । लेकिन दक्षिण पूर्वी एसिया कै अधिकतर देश के जइसय यिहा स्थानीय भाषा मे पढाई होय कै ब्यवस्था नाही है ।

थाइलैन्ड :

थाइलैन्ड मे ७० से ढेर भाषा बोली जात है । यथार्थ मे मानक थाई थाइलैन्ड कै कामकाजी औ राष्ट्रभाषा है । यी उहा के समूचे तह के शिक्षा मे पढाइ के माध्यम के रुप मे है । 'स्थानीय पाठ्यक्रम' के जगही कुछ स्थान पर स्थानीय भाषा पढावा जात है । स्थानीय गैर सरकारी संस्थन से चलावा अनौपचारिक शिक्षा मध्ये प्रौढ साक्षरता के खातिर कुछ परीक्षण परियोजनन का सहयोग किहे है । लेकिन यी मध्ये कवनो परियोजना का वास्तविक द्विभाषी शिक्षा के रुप मे नाही लिहा जाय सकत है । सन् २००४ से शिक्षा मन्त्रालय औ सञ्चार माध्यमन मे शिक्षा मे स्थानीय भाषा के प्रयोग के बारे मे बहस होय लाग है ।

भियतनाम :

भियतनाम मे १०० भाषा बोली जाति हैं । भियतनामी यिहां कै कामकाजी भाषा होयँ । यी यिहां कै करिब ९० प्रतिशत जनसङ्ख्या के द्वारा पहिला भाषा (या द्विभाषी शिक्षा मनईन के सन्दर्भ मे एकठू पहिला भाषा) के रुप मे बोली जाति है । द्विभाषी औ शिक्षा मे स्थानीय भाषा के प्रयोग के खातिर विभिन्न नीतिगत दस्तावेजन मे दृढता के साथ समर्थन किहा है । तब्बव शिक्षा के हरेक तह मे यिहां तक कि गैर भियतनामी भाषाभाषी कै घना बस्ती वाले इलाकव मे पढाई के मुख्य माध्यम के रुप मे भियतनामी स्थापित है । कुछ क्षेत्र कै शिक्षा मे स्थानीय भाषा कै प्रयोग होत है औ प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम कै २० प्रतिशत पाठ् यांश के रुप मे खास कइकै स्थानीय भाषा काँ विषय के रुप मे पढावा जात है । सन् २००६ से, कुछ अल्प सङ्ख्यक भाषनव मे नवा पाइलट परियोजना शुरु किहा गा है ।

३. पूर्वी एसिया कै शैक्षिक नीति औ व्यवहार मे भाषा

जनवादी गणतन्त्र चीन :

जनबादी गणतन्त्र चीन मे २०० से बेसी भाषा बोली जाति है । मन्दारिन चिनिया यिहां कै कामकाजी भाषा होय । अल्पसङ्ख्यक लोगन के क्षेत्र मे अल्पसङ्ख्यक भाषा का पढाई कै माध्यम बनावय मे सहयोग करय के खातिर कानून औ नीति बनावा है । लेकिन यी नीति हरेक जगही समान रुप मे लागू नाही भा हैं । खाली चुना ५५ ठउर अल्पसङ्ख्यक भाषा मे लागु भा हैं । शिक्षा मे स्थानीय भाषा कै प्रयोगव मे भौगोलिक क्षेत्र औ जाति भाषिक समुदाय के आधार पर बहुत बिविधता है । प्राथमिक स्कूल से लइके हाईस्कूल

तक करीब आधा दर्जन स्थानीय भाषन का पढाई कै माध्यम बनावा है । यहमा मन्दारिन चिनिया का दुसरे भाषा के रुप मे पढावा जात है । स्थानीय भाषा कै प्रयोग किहा जायवाले द्विभाषिक शिक्षा के कार्यक्रम मे विद्यार्थी कै पढाई मातृभाषा से शुरु कइके जल्दी से जल्दी मन्दारिन चिनिया मे लइ जाय कै तरिका चीन मे ढेर चलनचल्ती मे है । अल्पसङ्ख्यक लोगन के बसोबास क्षेत्र मे स्थानीय भाषा काँ विभिन्न तह मे खाली एक बिषय के रुप मे पढावा जात है ।

मङ्गोलिया :

मङ्गोलिया मे १२ ठउर भाषा बोली जाय कै अनुमान है । ९० प्रतिशत जनसङ्ख्या मङ्गोल होंय औ ऊ लोग कामकाजी भाषा मङ्गोलियन कै हाल्ह आ खाल्का मध्ये कै एक भेद बोलत हैं । शिक्षा के समूचे तह मे मङ्गोलिन पढाई कै माध्यम के रुप मे प्रयोग होत है, हला कि विश्वविद्यालय स्तर पर अङ्ग्रेजी कै भूमिका बढत जात है । समूचा जातीय अल्पसङ्ख्यक लोग हाल्ह मङ्गोलियन का दुसरे भाषा के रुप मे बोलत है । १९९२ मे बना संविधान अल्पसङ्ख्यक भाषन का पढाई के माध्यम के रुप मे समर्थन किहे है । तब्बव द्विभाषी शिक्षा मे अबहिन तक खाली काजाक कै प्रयोग भवा मिलत है ।

जापान :

जापान मे दुइ आदिवाी भाषा जापानी औ आइनू बोली जाति है । यी दूनव भाषा के अलावा च्युक्युआन कै ११ ठउर भाषिका बोली जाति हैं । यी ११ भाषिकन का कुछ लोग यक्कय भाषिक परिवार कै अलग अलग भाषव मानत हैं । करिब ९९ प्रतिशत जनसङ्ख्या के द्वारा बोला जायवाली जापानी भाषा जापान कै राष्ट्रभाषा होय । हाल के कुछ दशकन मे विदेशिन कै बसाई सराई के चल्ते दर्ता भवा मातृभाषा कै सङ्ख्या बढय कै सङ्केत मिला है । १.४ प्रतिशत जनसङ्ख्या यइसन भाषा बोलय वाले लोगन कै है । यिहा कै कामकाजी भाषा जापानी होय । हाल सालय जापान कै संस्कृति, खेलकुद, विज्ञान औ प्रविधि मन्त्रालय जापान मे बसाई सराई कइकै आवा लरिकन औ गैर जापानिन का लक्षित कइकै एक नवां नीति जारी किहे है । यहि नीति कै उद्देश्य स्कूलन मे जापानी का पढाई के माध्यम के खातिर दूसरे भाषा के रुप मे सुधार करत लइ जाय के जहां तक सम्भव होय समूह शिक्षण या आउर विधि मार्फत विद्यार्थी कै मातृभाषय मे पढावय औ जापानी के साथय गैर जापानी विद्यार्थिन के बीचे अन्तरराष्ट्रिय औ अन्तरसांस्कृतिक समझदारी बढावय खातिर गैरजापानी औ विदेश से लउटा जापानी लरिकन कै अनुभव प्रयोग करब होय ।

४. दख्खिन औ पच्छू एशिया मे शिक्षा नीति औ ब्यवहार मे भाषा

अफगानिस्तान :

अफगानिस्तान मे करीब ३० ठउर भाषा बोली जात है । वह मध्ये पश्तो, दारी, उज्वेक, तुर्कमेन, पाशी, नूरिस्तानी, बलोची औ शिग्नानी बेसी जगहिन मे बोली जात है । पश्तो औ दारी अफगानिस्थान कै राष्ट्रिय औ कामकाजी भाषा होय औ येकर शिक्षा के समूचे तह मे पढाई कै माध्यम के रुप मे प्रयोग किहा जात है । उहां कै संविधान आधारभूत शिक्षा मातृभाषा मे देवय के पक्ष मे होय के नाते शिक्षा मन्त्रालय औपचारिक

औ अनौपचारिक शिक्षा मे अल्पसङ्ख्यक भाषन कै प्रयोग करय के औ कुछ अल्पसङ्ख्यक भाषन का विषय के रुप मे पढावय कै योजना बनाये है ।

बङ्गलादेश :

बङ्गलादेश मे करिब ४० भाषा बोली जाति है । बाङ्ला बङ्लादेश कै कामकाजी औ राष्ट्र भाषा होय । यी उहां के शिक्षा के समूचे तह मे पढाई के माध्यम के रुप मे है । १४ करोड जनसङ्ख्या मध्ये कै ९४ प्रतिशत लोग यिहां बाङ्ला बोलत हैं । तिसरे तह कै शिक्षा (विश्वविद्यालय) मे अङ्रेजियव का पढाई कै माध्यम के रुप मे प्रयोग किहा जात है । सरकारी औ गैर सरकारी स्कूलेन के साथय साक्षरता कक्षनव के पढाई कै माध्यम बाङ्ला है । अल्पसङ्ख्यक आदिवासी भाषन का यिहा कै स्कूलन मे प्रयोग करय कै कवनो प्रावधान नाही है । कुछ अल्पसङ्ख्यक जातीय भाषा भाषी समूह मे भाषन का पाठ्यक्रम के व्याख्या के खातिर 'सङ्क्रमणीय या सहायक' भाषा के रुप मे मौखिक प्रयोग होत है । यही नाते बहुत से अल्पसङ्ख्यक समुदाय आपने भाषिक औ सांस्कृतिक सम्पदा लोप होय औ अपने बोलय औ बूझय वाले भाषा मे जरुरी शिक्षा न पावय के नाते दोहरे मार मे परा है ।

भूटान :

भूटान मे १८ भाषा बोली जात है । जोङ्खा यिहां कै राष्ट्र भाषा होय । जेकां अद्वित्तिय पहिचान कै एक प्रतिक रुप मे देश भर मे लिहा जात है । सरकारी स्कूल प्रणाली मे मुख्य पढाई कै माध्यम अङ्ग्रेजी है, बकिर कुछ कक्षन मे जोंखव पढावा जात है । भूटान भर कै अनौपचारिक शिक्षा जोंखा मे चलावा जात है । सरकार कइउ भाषन मे व्याकरण लिखहू के खातिर सहयोग किहे है । बकिर भाषा विकास कै समूचा प्रयास जोंखा पर केन्द्रित है ।

भारत :

भारत मे भाषा औ भाषिका के साथय वनके सङ्ख्या का लइके लगातार विवाद है । १९६१ जनगणना मे भाषा कै सङ्ख्या १,६५२ बताये है, जबकि १९९१ के जनगणना मे यी सङ्ख्या ११४ मे सीमित कइ दिहा है । एथनोलाग करिब ४३० भाषा कै सूची दिहे है । आजकाल्हि २२ भाषा का संविधान के अठवा अनुसूची मे दर्ज किहा है । यह में हिन्दी कामकाजी भाषा औ अङ्ग्रेजी सहायक कामकाजी भाषा के रुप मे सूचीकृत है ।

भारतीय संविधान कै कइउ धारा भाषा से सम्बन्धित हैं । वहि मध्ये धारा ३५० (क) उल्लेखनीय है । यही धारा मे कहा गा है 'हरेक राज्य औ राज्य के भित्तर के भाषिक अल्पसङ्ख्यक समुदाय के लरिकन का प्राथमिक तह तक कै शिक्षा वनके मातृभाषा के माध्यम से देवय खातिर जरुरी सुविधा देय कै दायित्व सम्बन्धित राज्य औ उहां कै स्थानीय अधिकारी कै रही ।' सन् १९५७ मे केन्द्रिय शिक्षा सल्लाहकार परिषद के द्वारा एक जटिल 'तीन भाषा सूत्र' नामक प्रस्ताव काँ आगे बढावा गै औ हरेक राज्य कै मुख्यमन्त्री लोग येकां १९६१ मे समर्थन किहिन । अलग अलग तह मे यी तीनव राष्ट्रिय भाषा मे पढाई कै अवधारणा समेटा रहा । बकिर उडीसा औ महाराष्ट्र जइसन कुछ राज्यन का छोडि कै बाकी राज्यन मे यहि सूत्र कै जरुरत से ढेर उल्लंघन भय ।

राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसंधान औ प्रशिक्षण परिषद (एन सी ई आर टी) हरेक पाँच बरिस मे स्कूली शिक्षा कै राष्ट्रिय पाठ्यक्रम अवधारणा पत्र निकारत है । जवने मे यइसन लिखा है कि 'स्कूली शिक्षा के हरेक तह मे' मातृभाषा पढाई कै माध्यम होय के चाहीं (एन सी ई आर टी २०००, पृ. ७६) । बकिर यी आधारपत्र खाली सुझाव के रुप मे काम करत है, ना कि कानून के रुप मे ।

शिक्षा खास कइकै स्थानीय, क्षेत्रीय भाषा (अनुसूची ८) या कामकाजी भाषा मे दिहा जात है । पढाई के माध्यम के रुप मे अङ्ग्रेजी का प्रतिष्ठित माना जात है । यही नाते राजनीतिक बहस मातृभाषा के प्रयोग से बेसी मुख्य भारतीय भाषा या अङ्ग्रेजी मध्ये कवने का चुना जाय, यही पर केन्द्रित है । उल्लेखनीय सङ्ख्या मे जनजाति रहय वाले कुछ राज्य जनजाति लोगनय के भाषा मे शिक्षा देवय कै प्रयास किहे है । आसाम औ नागालैन्ड मे यहि प्रयास का बढिया सफलता मिला है । राजस्थान, उडीसा औ आन्ध्र प्रदेश मे भवा यइसने प्रयास का लागू करत कै शुरुवाती चरण मे कुछ कठिनाई आय, लेकिन अब फिर से कुछ नवां प्रयास शुरु किहा गा है ।

पाकिस्तान :

पाकिस्तान मे ६३ भाषा बोली जात हैं । पंजावी (४४ प्रतिशत), पश्ता (१५ प्रतिशत, सिन्धी (१४ प्रतिशत), सिराइकी (११ प्रतिशत), उर्दु (८ प्रतिशत) औ बलोची (४ प्रतिशत) यिहां कै मुख्य भाषा होयँ । बाकी ५७ ठउर भाषा बोलय वाले लोगन कै जनसङ्ख्या ५ पतिशत है । यिहां कै राष्ट्र भाषा उर्दू है, जबकि कामकाजी भाषा अङ्ग्रेजी होय । पाकिस्तान के शहरी इलाका मे उर्दू कै प्रयोग दुसरे भाषा के रुप मे जमि कै होत है । काहे कि अधिकाधिक सरकारी स्कूल औ धार्मिक समारोह मे माध्यम भाषा के रुप मे उर्दू कै प्रयोग किहा जात है । कालेज औ विश्व विद्यालयव मे विज्ञान औ प्रविधि से जुडा विषयन के साथय बाकी विषय का पढावय के खातिर उर्दु कै प्रयोग होत है । यही नाते यी आउर पाकिस्तानी भाषन के तुलना मे रोजगारी खातिर बेसी उपयोगी माना जात है । चाहे निचले तह के कार्यालय औ वहू मे काहे न सिंध के कुछ सीमित जगहिन मे होय, रोजगारी के खातिर दुसर उपयोगी भाषा सिंधी होय । यी सिंध मे शिक्षा कै माध्यम होय औ कुछ कार्यालयन मे येकर प्रयोग होत है । पश्तो कुछ स्कूलन मे कक्षा ५ तक पढाई कै माध्यम के रुप मे तो है लेकिन बाकी क्षेत्र मे येकर प्रयोग नाही होत है । खाली २ प्रतिशत पाकिस्तानी अङ्ग्रेजी ठीक से बोलत हैं । यकर साथय १५ से १८ प्रतिशत आउर लोग काम चलाउ तरीका से अङ्ग्रेजी बोलत हैं । यकरे बादव सरकार, उच्चस्तरीय प्रशासन तन्त्र, सैनिक अधिकारी लोग, संचार, उच्च शिक्षा अनुसंधान, बाणिज्य सहित के सत्ता कै सम्भ्रान्त क्षेत्र के भाषा अङ्ग्रेजियय होय । भविष्य के अप्रवासिन औ उच्च तह मे उन्नती करय के खातिर अङ्ग्रेजी बहुत उपयोगी है । आज के अवस्था मे अङ्ग्रेजी कै माग पाकिस्तान मे बहुत तेजी से बढा है । यी बडा बडकवा के खातिर अङ्ग्रेजी माध्यम से चलावा जाय वाले निजी स्कूल औ सैनिक लोगन के द्वारा चलावा स्कूल (उदाहरण खातिर कैडेट कालेज) मार्फत यी उपलब्ध होत आ है । अङ्ग्रेजी औ उर्दू का कामकाजी भाषा के रुप मे प्रश्रय देवय के सरकारी नीति के नाते देश के आउर भाषन के उप्पर बहुत दबाव है । छोट छोट भाषा या तो प्रभावशाली बडे भाषन मे मिलत जात है, या तो सम्पूर्ण रुप से लोप होय के खतरा मे हैं ।

५. मध्य एशिया कै शिक्षा नीति औ व्यवहार मे भाषा

कजाकिस्तान :

कजाकिस्तान मे ४८ प्रतिशत जनसङ्ख्या कजाख औ ३४ प्रतिशत रुसी हैं । यकरे बाहेक उहां १२० जाति कै लोग बसोबास करत है । यी मध्ये ८ लाख से उप्पर उक्रेनी, ५ लाख जर्मन, ४ लाख उज्वेक औ ४ लाख से उप्पर ततार लोग हैं । कजाख राष्ट्र भाषा होय औ रुसी कामकाजी भाषा होय (यी राष्ट्र भाषा के साथेन प्रयोग होत है ।) । ३,६४७ (४५ प्रतिशत), साधारण माध्यमिक विद्यालय कजाख भाषा के माध्यम से, २१२२ (२६ प्रतिशत) मे रुसी भाषा के माध्यम से औ २०६९ (२५ प्रतिशत) मे कजाख औ रुसी दूनव माध्यम मे पढाई होत है । आउर ४ प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय 'राष्ट्रिय प्रकृति' कै हैं । यहमा उक्रेनी, ताजिक, उइगुर औ उज्वेक भाषा के माध्यम से पढाई होत है ।

किर्गिस्तान :

किर्गिस्तान मे किर्गिज औ रुसी औपचारिक कामकाजी भाषा के रुप मे हैं । सन् २००१ मे किर्गिस्तान कै संसद रुसिउ भाषा का किर्गिज के तरह कामकाजी भाषा के रुप मे घोषणा किहे है । यिहां के जनसङ्ख्या मे ५२ प्रतिशत किर्गिज, १८ प्रतिशत रुसी, १३ प्रतिशत उज्वेक, ३ प्रतिशत उक्रेनी, २ प्रतिशत जर्मन औ आउर १२ प्रतिशत हैं । यिहां के ६६ प्रतिशत विद्यालय किर्गिज भाषा मे, ७ प्रतिशत विद्यालय रुसी भाषा मे, ७ प्रतिशत उज्वेक भाषा मे औ २० प्रतिशत मे रुसी औ किर्गिज भाषा मे पढाई होत है ।

तजाकिस्तान :

तजाकिस्तान कै राष्ट्र भाषा ताजिक होय । विभिन्न जाति के लोगन के बीचे कै सम्पर्क भाषा रुसी होय । सारे अल्पसङ्ख्यक समुदाय काँ अपने मातृभाषा मे बोलि पावय्क अधिकार है । आम सञ्चार मे ताजिक औ रुसी भाषा कै प्रयोग होत है । अल्पसङ्ख्यक लोगन के खातिरव कुछ विद्यालय खुला हैं । यहमा उज्वेक, कजाख, तुर्की औ आउर भाषन के माध्यम से पढाई होत है । माध्यमिक तह मे ७३ प्रतिशत ताजिक भाषा के माध्यम से, २४ प्रतिशत विद्यार्थी उज्वेक भाषा मे, २ प्रतिशत रुसी भाषा मे औ आउर किर्गिज, कजाख औ तुर्की भाषा मे पढत हैं ।

उज्वेकिस्तान :

१०० से ढेर भाषा बोली जायवाली उज्वेकिस्तान बहुजातीय औ बहुभाषिक मुलुक होय । उज्वेकिस्तान के संविधान के धारा १८ मे 'कानुनी हैसियत, अधिकार औ स्वतन्त्रता पावय खातिर लिङ्ग, जाति, भाषा, धर्म, सामाजिक पृष्टभुमी, आस्था औ सामाजिक के साथय व्यक्तिगत हैसियत के आधार पर कवनो भेदभाव नाही किहा जाई' कहा है । अल्पसङ्ख्यक जाति औ भाषिक समुदाय के लरिकन कै शिक्षा दिक्षा नीति निर्माण कै महत्त्वपूर्ण विषय होय । अबहिन तक सरकार उज्वेक सहित सात राष्ट्रिय भाषन का आधारभूत शिक्षा देवय खातिर राजनीतिक प्रतिबद्धता जनाये है । तत्काल उज्वेकिस्तान के १० प्रतिशत विद्यालय मे अल्पसङ्ख्यक जातीन कै भाषा (रुसी, कजाख, ताजिक, काराकल्पक, तुर्की औ किर्गिज) के माध्यम से पढाई होत है । यकरे माध्यम से आधारभूत शिक्षा लेवय के खातिर भर्ना भवा विद्यार्थिन मध्ये १५ प्रतिशत का समेटा है ।

६. प्रशान्त क्षेत्र मे शिक्षा नीति औ ब्यवहार मे भाषा

पपुआ न्यु गिनी :

पपुआ न्यु गिनी मे करीब ८५० भाषा बोली जात है । यिहां ३५०-४०० के आसपास के भाषन मे पूर्व प्राथमिक औ प्राथमिक शिक्षा देय कै व्यवस्था है । पपुआ न्यु गिनी यतने ढेर स्थानीय भाषन कै शिक्षा मे प्रयोग संसार मे आउर कहुँ नाहीं पावा जात है । यकरे पहिले औपचारिक शिक्षा अङ्गैजी माध्यम से दिहा जात रहा । लेकिन अनौपचारिक शिक्षा मे स्थानीय भाषा कै प्रयोग करत के देखान उत्साह औ सफलता का आधार मानि कै औपचारिक शिक्षा प्रणाली कै पुनर्संरचना किहा गै । नवां प्रणाली मे अनौपचारिक शिक्षा कै पहिला तीन बरिस तक विद्यार्थी का बनके मातृभाषा मे पढावा जात है । बाद कै कक्षन मे पढाई कै माध्यम अङ्ग्रेजी होइ जात है । स्थानीय भाषा कै प्रयोग करय वाले कुलि विद्यालय स्थानीय समुदाय के द्वारा चलावा जात हैं । सबल सामुदायिक सहभागिता, विकेन्द्रीकरण, स्थानीय सांदर्भिकता, रियायत, लागत औ गैर सरकारी संस्थन के सक्रिय भूमिका के नाते उहाँ के स्थानीय भाषा कै प्रयोग सफल बतावा जात है ।

© ज्ञानु पौडेल/यूनेस्को, के सहयोग से सञ्चालित अवधी भाषामा साक्षरता कक्षा

सन्दर्भ सूची

गुरुङ, हर्क गुरुङ, योगेन्द्र औ चिदी, छबिलाल २००६. नेपाल एटलस आँफ लैंग्वेज ग्रप्स. आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रीय प्रतिष्ठान ।

नेपाल अधिराज्यको संविधान, २०४७ काठमाडौं : कानुन किताब व्यवस्था समिति ।

नेपालको अंतरिम संविधान, २०६३. काठमाडौं : कानुन किताब व्यवस्था समिति ।

यादव, योगेन्द्रप्रसाद २००३. लैंग्वेज पाँपुलेशन मानोग्राफ आँफ नेपाल, भाँलुम १, काठमाडौं : सैंट्रल ब्यूरो आँफ स्टाटिस्टिक्स ।

यादव, योगन्द्रप्रसाद २००७. लिंग्विस्टिक डाइभर्सिटी इन नेपाल : पर्स्पेक्टिभ्स आँन लैंग्वेज पाँलिसी इंटरनेशनल सेमिनार आँन कंस्टिट्युशनलिजम एण्ड डाइभर्सिटी इन नेपाल, २२-२४ अगस्ट, २००७ में प्रस्तुत कार्यपत्र, काठमाडौं : नेपाल तथा एशियाली अनुसन्धान केंद्र ।

राष्ट्रिय भाषा नीति सुझाव आयोगको प्रतिवेदन २०५०. काठमाडौं : राष्ट्रिय भाषा नीति सुझाव आयोग, प्रज्ञा भवन, कमलादी ।

सबैका लागि शिक्षा (२००४-२००९) मुख्य दस्तावेज २००३. काठमाडौं : नेपाल सरकार, शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय ।

परिशिष्ट १

मातृभाषा के आधार मे जनसंख्या (२०५८)

क्र.सं.	मातृभाषा	संख्या	प्रतिशत	सञ्चित प्रतिशत
१	नेपाली	११०५३२५५	४८.६१	४८.६१
२	मैथिली	२७९७५८२	१२.३०	६०.९२
३	भोजपुरी	१७१२५३६	७.५३	६८.४५
४	थारु (डगौरा/राना)	१३३१५४६	५.८६	७४.३१
५	तामाङ	११७९१४५	५.१९	७९.४९
६	नेवार	८२५४५८	३.६३	८३.१२
७	मगर	७७०११६	३.३९	८६.५१
८	अवधी	५६०७४४	२.४७	८८.९८
९	बान्तवा	३७१०५६	१.६३	९०.६१
१०	गुरुङ	३३८९२५	१.४९	९२.१०
११	लिम्बू	३३३६३३	१.४७	९३.५७
१२	बज्जिका	२३७९४७	१.०५	९४.६१
१३	ऊर्दू	१७४८४०	०.७७	९५.३८
१४	राजवंशी	१२९८२९	०.५७	९५.९५
१५	शेर्पा	१२९७७१	०.५७	९६.५२
१६	हिन्दी	१०५७६५	०.४७	९६.९९
१७	चाम्लिङ	४४०९३	०.१९	९७.१८
१८	सन्थाली	४०२६०	०.१८	९७.३६
१९	चेपाङ	३६८०७	०.१६	९७.५२
२०	दनुवार	३१८४९	०.१४	९७.६६
२१	झाँगड/धाँगड	२८६१५	०.१३	९७.७९
२२	सुनुवार	२६६११	०.१२	९७.९०
२३	बाङ्ला	२३६०२	०.१०	९८.०१
२४	मारवाडी (राजस्थानी)	२२६३७	०.१०	९८.११
२५	माझी	२१८४१	०.१०	९८.२०
२६	थामी	१८९९१	०.०८	९८.२९
२७	कुलुङ	१८६८६	०.०८	९८.३७
२८	धिमाल	१७३०८	०.०८	९८.४५
२९	अङ्गिका	१५८९२	०.०७	९८.५२
३०	याक्खा	१४६४८	०.०६	९८.५८

३१	थुलुङ	१४०३४	०.०६	९८.६४
३२	साङपाङ	१०८१०	०.०५	९८.६९
३३	भुजेल/खवास	१०७३३	०.०५	९८.७४
३४	दराई	१०२१०	०.०४	९८.७८
३५	खालिङ	९२८८	०.०४	९८.८२
३६	कुमाल	६५३३	०.०३	९८.८५
३७	थकाली	६४४१	०.०३	९८.८८
३८	छन्त्याल/छन्तेल	५९१२	०.०३	९८.९०
३९	नेपाली साङ्केतिक भाषा	५७४३	०.०३	९८.९३
४०	तिब्बती	५२७७	०.०२	९८.९५
४१	दुमी	५२७१	०.०२	९८.९८
४२	जिरेल	४९१९	०.०२	९९.००
४३	वाम्बुले/उम्बुले	४४७१	०.०२	९९.०२
४४	पुमा	४३१०	०.०२	९९.०४
४५	ह्युयोल्मो	३९८६	०.०२	९९.०५
४६	नाछिरिङ	३५५३	०.०२	९९.०७
४७	दुरा	३३९७	०.०१	९९.०८
४८	मेचे	३३०१	०.०१	९९.१०
४९	पहरी	२९९५	०.०१	९९.११
५०	लेप्चार/लाप्चे	२८२६	०.०१	९९.१३
५१	बोटे	२८२३	०.०१	९९.१४
५२	बाहिङ	२७६५	०.०१	९९.१५
५३	कोई/कोयु	२६४१	०.०१	९९.१६
५४	राजी	२४१३	०.०१	९९.१७
५५	हायु	१७४३	०.०१	९९.१८
५६	ब्यासी	१७३४	०.०१	९९.१९
५७	याम्फु/याम्फे	१७२२	०.०१	९९.१९
५८	घले	१६४९	०.०१	९९.२०
५९	खडिया	१५७५	०.०१	९९.२१
६०	छिलिङ	१३१४	०.०१	९९.२१
६१	लोहोरुङ	१२०७	०.०१	९९.२२
६२	पन्जावी	११६५	०.०१	९९.२३
६३	चिनियाँ	११०१	०.००	९९.२३
६४	अङ्ग्रेजी	१०३७	०.००	९९.२३

६५	मेवाहाङ	९०४	०.००	९९.२४
६६	संस्कृत	८२३	०.००	९९.२४
६७	काइके	७९४	०.००	९९.२५
६८	राउटे	५१८	०.००	९९.२५
६९	किसान	४८९	०.००	९९.२५
७०	चुरौटी	४०८	०.००	९९.२५
७१	बराम/भ्रामु	३४२	०.००	९९.२५
७२	तिलुङ	३२०	०.००	९९.२५
७३	जेरोङ/जेरुङ	२७१	०.००	९९.२६
७४	दुङमाली	२२१	०.००	९९.२६
७५	उडिया	१५९	०.००	९९.२६
७६	लिङ्खिम	९७	०.००	९९.२६
७७	कुसुन्डा	८७	०.००	९९.२६
७८	सिन्धी	७२	०.००	९९.२६
७९	कोचे	५४	०.००	९९.२६
८०	हरियान्वी	३३	०.००	९९.२६
८१	मगही	३०	०.००	९९.२६
८२	साम	२३	०.००	९९.२६
८३	कुरमाली	१३	०.००	९९.२६
८४	कागते	१०	०.००	९९.२६
८५	जोङ्खा	९	०.००	९९.२६
८६	कुकी	९	०.००	९९.२६
८७	छिन्ताङ	८	०.००	९९.२६
८८	मिजो	८	०.००	९९.२६
८९	नागामी	६	०.००	९९.२६
९०	ल्होमी	४	०.००	९९.२६
९१	आसामी	३	०.००	९९.२६
९२	सधानी	२	०.००	९९.२६
	अज्ञात भाषा	१६८३४०	०.७४	१००.००
	कुल	२२७३६९३४	१००.००	१००.००

स्रोत : राष्ट्रिय जनगणना (२०५८)

परिशिष्ट २

नेपाल मे प्रयोग मे रहा लिपि[४]

क्र.सं.	लिपि	भाषा
१.	देवनागरी	नेपाली, मैथिली, भोजपुरी, अवधी, नेवार, हिन्ही आदि
२.	मिथिलाक्षररतिरहुत्ता	मैथिली
३.	कैथी	मैथिली, भोजपुरी, अवधी
४.	साम्बोटारतिब्बती	तिब्बती, शेर्पा
५.	रञ्जना	नेवार
६.	भुजिमो:	नेवार
७.	पाचुमो:	नेवार
८.	गोलमो:	नेवार
९.	लितुमो:	नेवार
१०.	कुँमो:	नेवार
११.	सिरिजङ्गा	लिम्बू
१२.	रोङ	लेप्चा
१३.	बाङ्ला वा बङ्गाली	बाङ्ला वा बङ्गाली
१४.	तमु	गुरुङ
१५.	अक्खा	मगर
१६.	अरबी	उर्दू
१७.	रोमन	अङ्ग्रेजी, सन्थाल, गुरुङ

४. यादव, योगेन्द्रप्रराद २००७. लिङ्ग्विस्टिक डाइभर्सिटी इन नेपाल : पर्स्पेक्टिभ्स अन ल्याङ्ग्वेज पोलिसी. इन्टरनेसमल सेमिनार अन कन्स्टिच्युसनलिज्म एन्ड डाइभर्सिटी इन नेपाल, २२-२४ अगस्त, २००७ मे पेस कार्यपत्र, काठमाडौं : नेपाल तथा एसियाली अनुसन्धान केन्द्र ।

Languages of Nepal
0 50 100 150
Kilometers
Byansi
Rawat
Humla
Humla
Jumli
Mugom
Jumla Sign Language
Dolpo
Lowa
Seke
Rana Tharu
Raute
Raji
Raji
Sonha
Kathoriya Tharu
Raji
Nepali
Tichurong
Kaike
Chantyal
Thakali
Nar Phu
Manangba
Western Parbate Kham
Sheshi Kham
Eastern Parbate Kham
Gamale Kham
Dangaura Tharu
Eastern Gurung
Northern Ghale
Western Gurung
Kusunda
Eastern Gorkha Tamang
Western Magar
Darai
Kumhali
Western Tamang
Northwestern Tamang
Helambu Sherpa
Dangaura Tharu
Awadhi
Bhojpuri
Kumhali
Bote-Majhi
Chepang
Kathmandu
Newar
Dzongkha
Thangmi
Jirel
Eastern Tamang
Sherpa
Nepali
Dhanwar
Majhi
Wayu
Jerung
Eastern Magar
Wambule
Bahing
Marwari
Bhojpuri
Musasa
Tilung
Camling
Nepali
Yakha
Limbu
Lepcha
Kochila Tharu
Maithili
Kochila Tharu
Nepali
Musasa
Kayort
Mundari
Rajbangsi
Santali
Bagheli
Bengali
Walungge
Walungge
Lorung
Dumi
Sampang
Athpariya
Belhariya
© 2011 SIL International

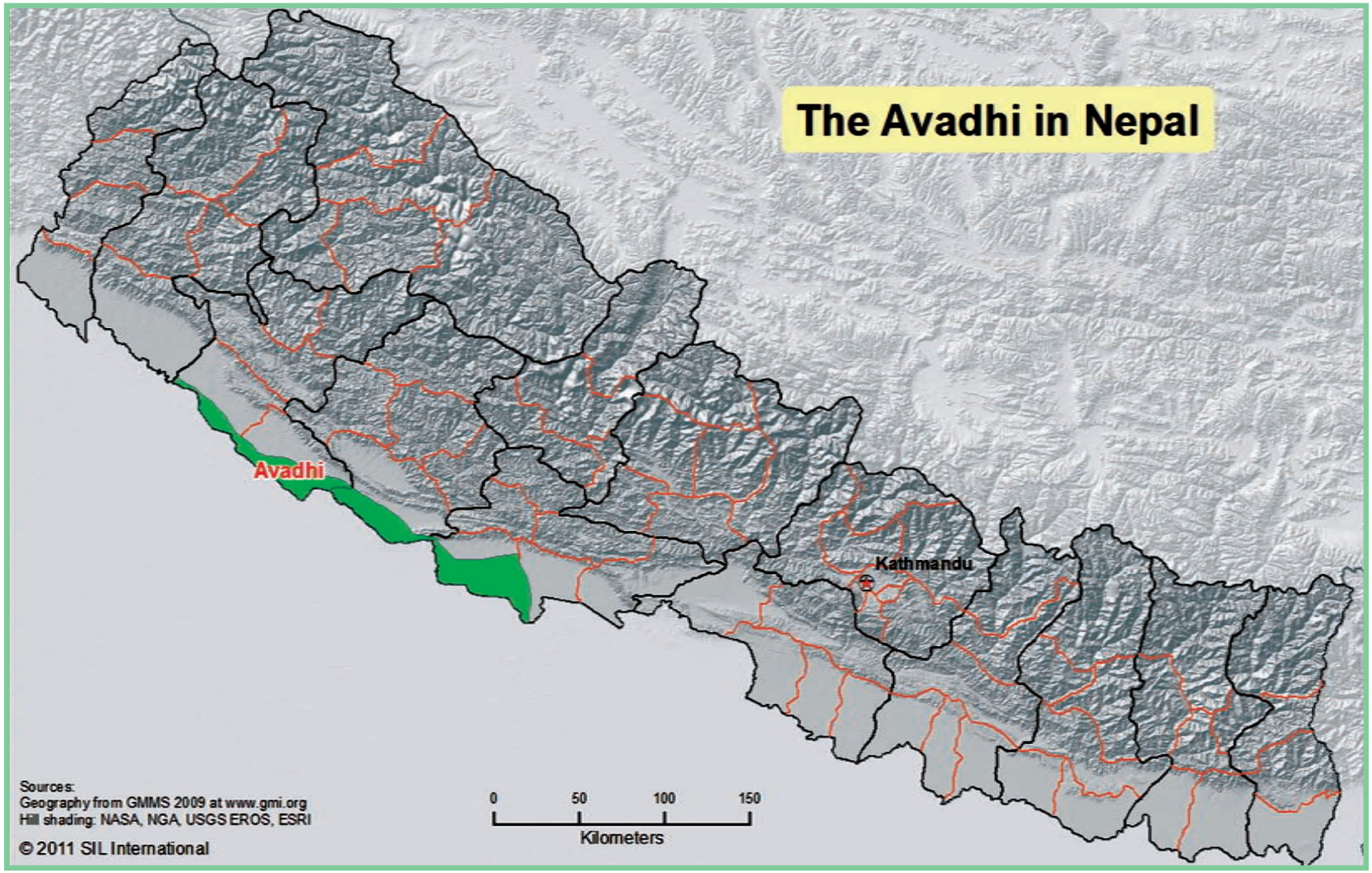
The Avadhi in Nepal
Avadhi
Kathmandu
Sources:
Geography from GMMS 2009 at www.gmi.org
Hill shading: NASA, NGA, USGS EROS, ESRI
© 2011 SIL International
0
50
100
150
Kilometers

परिभाषिक शब्दावली - भाषा

अलिखित भाषा : पढाई/लेखाई मे प्रयोग न आवा खाली बोलीचाली मे सीमित भाषा

अल्पसङ्ख्यक भाषा: अल्पसङ्ख्यक सामाजिक समूह वा जाति कै भाषा । कब्बव कब्बव सङ्ख्यात्मक रुप से बडा समूह मे बोलीचाली कै भाषा होय के बावजूद मुख्य भाषा के रुप मे प्रयोग न किहा जायवाले भाषा का बूझा जात है ।

कामकाजी भाषा : सरकारी कार्यालय, स्कूल सहित आउर संस्थन मे दैनिक कामकाज के खातिर प्रयोग होयवाला भाषा उदाहरण के रूप मे : भारत मे अङ्ग्रेजी औ हिन्दी का कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता दिहा है औ राज्यन मे अपनय आपन राज्य भाषा चलनचल्ती मे है । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज के भाषा कै मान्यता मिला है ।

घर कै भाषा : घर मे बोली जायवाली भाषा (पहिला भाषा औ मातृभाषा का देखा जाई) केहू केहू के घर कै भाषा एक से ज्यादव होइ सकत है ।

दूसर भाषा : पहिला या घर के भाषा का छोडि कै दूसर भाषा, व्यापक संचार सम्पर्क कै भाषा या विदेशी भाषा

सामान्य रुप मे घर से बहरे व्यापक समुदाय में बोला जाय वाले भाषाका बूझा जात है । द्विभाषिक शिक्षा में पहिला भाषा के बाद पढाई मे प्रयोग किहा जाय वाले भाष का दुसर भाषा (कामकाजी औ विदेशी) बूझा जात है ।

पहिला भाषा : मनई के मुह से निकरा पहिला भाषा, मौलिक भाषा (मातृभाषा, घर कै भाषा, स्थानीय भाषा का देखा जाई)

पैतृक भाषा : मनई कै पुर्वज या कवनो जाति या भाषिक समुदाय कै भाषा

भाषिका : भौगोलिक क्षेत्र या सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे होयवाला भिन्नता ('भेद' का देखा जाय ।)

भेद : भौगोलिक क्षेत्र औ सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे आवय वाला अन्तर

मातृभाषा : पहिला भाषा, मौलिक भाषा (पहिला भाषा, पैत्रिक भाषा, घर कै भाषा का देखा जाय ।)

मनई कै (१) सबसे पहिला सिखा भाषा (२) अपने या दुसरे से मातृभाषी वक्ता के रुप मे चिन्हावा भाषा (३) सबसे बेसी जानल भाषा (४) सबसे बेसी प्रयोग मे आवय वाली भाषा

माध्यम भाषा : स्कूल मे पढाई लिखाई कै माध्यम के रुपमे प्रयोग होयवाली भाषा

मुख्यभाषा : मुख्य समाज कै बोलय वाली या देश कै मुख्य भाषा के रुप मे रहा भाषा, देश मे ढेर जनसङ्ख्या कै बोलय वाली भाषा न होय के बावजूद राष्ट्रभाषा या कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता पावा भाषा ।

राष्ट्र भाषा : देश के भित्तर ब्यापक रुप मे बोला जायवाली भाषा, राष्ट्र से महत्वपूर्ण कहिकै किटान किहा भाषा, कब्बव कब्बव कामकाजिउ भाषा । उदाहरण : भारत मे दुई ठू कामकाजी भाषा औ बाइस ठू अनुसूचित भाषा किटान किहा है औ हरेक राज्य कै अपनय आपन राज्य भाषा चलन चल्ती मे हैं । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज कै भाषा तयँ किहा है । नेपाल कै अन्तरिम संविधान, २०६३ मे नेपाल के भित्तर बोला जायवाली हरेक मातृभाषा का राष्ट्रभाषा घोषित किहा है ।

विदेशी भाषा : अइसन भाषा जवन वक्ता के समुदाय मे न बोला जात होय ।

सम्पर्क भाषा : भाषिक समुदाय के बीचे एक दुसरे से सम्पर्क करय खातिर प्रयोग किहा जाय वाली भाषा । उदाहरण : नेपाल कै पहाडी क्षेत्र मे नेपाली, तराई मधेश के विभिन्न क्षेत्र मे मातृभाषा के साथेन हिन्दी औ हिमाली क्षेत्र मे तिब्बती

स्थानीय भाषा : अपने समुदाय मे बोला जायवाली भाषा । सम्पूर्ण रुप मे लेखन पद्धति कै विकास न भवा भाषव होइ सकत है ।

पारिभाषिक शब्दावली - सामान्य

आदिवासी : कवनो क्षेत्र वा देश मे आदिकाल से या बहुत पहिले से बसा मानव समूह/समुदाय

कार्यान्यवयन : कवनो नवां कानून लागू करय खातिर मनई या आउर स्रोत परिचालन करय वाला तरीका ।

गैरसरकारी संस्था : राष्ट्रिय सरकार कै अङ्ग न होय के बावजूद सामुदायिक विकास के खातिर काम करयवाला संस्था ।

जनचेतना बृद्धि : आपन जरुरत चीन्हि कै बोकां पावय खारि सहयोग देय वाला सूचना औ जानकारी देय कै काम ।

दुईभाषी : व्यक्ति : दुई भाषा बोलय औ बूझय (कब्बव कब्बव लिखिउ पढि सकय ।)

समाज : दुई भाषा बोलय वाले लोग साथय साथ रहय वाली समुदाय ।

दुइ भाषी शिक्षा (द्विभाषी शिक्षा) : साक्षरता औ औपचारिक लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे दुइ भाषा प्रयोग कइकै दिहा जाय वाली शिक्षा । यहमा व्यवहारिक रुप से साक्षरता औ पढाई लिखाई सिखावत के सबसे पहिले व्यक्ति कै पहिला भाषा/मातृभाषा से शुरु किहा जाला औ दुसरे भाषा का लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे धीरे धीरे सामिल किहा जाला ।

धारा प्रवाह : बिना कवनो अवरोध के बोलय, पढय औ लिखय मे उच्च दक्षता ।

निरक्षर : खुद कै जाना सुना भाषा मे लिखय पढय कै अवसर न पावा मनई ।

परिचालन : कवनो कार्यक्रम कै योजना बनावय औ लागू करय खातिर समुदाय औ समुदाय के सहयोगिन का सङ्गठित करय कै काम ।

पाठ्यक्रम : शैक्षिक कार्यक्रम के खातिर शिक्षण योजना, पढयवाला विषय वस्तु औ सहयोगी सामान ।

बहुभाषी : व्यक्ति : दुइ से ढेर भाषा जानय बूझय वाला (लिख पढ कइ सकय वाला) ।

समाज : दुइ से बेसी भाषा भाषी बसोबास करय वाला समाज ।

बहुभाषिक शिक्षा : साक्षरता औ औपचारिक शिक्षा मे दुइ से ढेर भाषा प्रयोग कइकै लिखाई पढाई (शिक्षण) करावा जायवाली शिक्षा - बच्चा या व्यक्ति के पहिला भाषा कै माध्यम से पढाई शुरु कराय कै दूसर तीसर भाषा से जोडत लइ जायवाली शिक्षा ।

भाषा विकास : शिक्षा मे केहू का कवनो भाषा बढिया से सुनय बोलय पढय औ लिखय कै सिखावय वाली काम ।

भाषिक अल्पसङ्ख्यक : कम जनसङ्ख्या होय के नाते या राजनीतिक औ आर्थिक कारण से समाज मे दुसरे के तुलना मे कमजोर रुप मे रहय वाला यक्कय भाषा बोलय वाले मनइन कै समूह ।

मातृभाषा पर आधारित

दुइ भाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई कै प्रक्रिया शुरु कइकै दूसर भाषा सिखावत जायवाला स्कूली शिक्षा प्रणाली (बहुभाषिक शिक्षा का देखा जाय ।)

बहुभाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई प्रक्रिया शुरु कइकै दुसरे भाषा के साथेन अउरो भाषा सिखावत जायवाला शिक्षा प्रणाली (दुइ भाषिक शिक्षा देखा जाय ।)

मुख्य समूह : बेसी जनसङ्ख्या होय के नाते या आर्थिक औ राजनीतिक कारण से देश मे शक्ति के रुप मे रहा सामाजिक समूह ।

मूलधार : मुख्य समूह कै भाषा औ संस्कृति (कब्बव कब्बव खाली मुख्य समूह के खातिर बनावा स्कूल औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक लोगन कै जरुरत न पूरा करयवाला स्कूल बूझा जाला ।)

लेखन पद्धति : लिपि हिज्जे नियम औ विराम चिन्ह सहित के लेखन कै मानक प्रणाली ।

लैङ्गिक समानता : मेहरारु औ मर्द, बिटिया या बेटवा के मानव अधिकार का पूरा पूर जानय बूझय खातिर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक औ राजनीतिक विकास मे योगदान करय खातिर औ वोसे लाभ लेवय खातिर समान परिस्थिति कै अवस्था ।

सल्लाहकार समिति : बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम मे सामिल अगुवा लोगन कै समिति, (यहमा प्राय: मातृभाषा बोलयवाले औ सहयोगी संस्था कै सदस्य होत हैं ।)

सहजकर्ता : आउर लोगन का लेखपढ मे सहयोग करयवाले मनई, शिक्षक ।

साक्षरता : जीवन मे जरुरी व्यवहार पूरा करय खातिर पढय, लिखय औ हिसाब करय के साथेन आउर भाषिक क्रियाकलाप ठीक से करय कै क्षमता ।

साझेदार : नवा कार्यक्रम लागू करय खातिर समुदाय से मिलि कै काम करय वाला मनई, संस्था या निकाय ।

सिखाई उपलब्धि : स्कूल मे होय वाले पढाई कै विषयवस्तु, भाषा कै ज्ञान, हुनर औ दक्षता ।

स्थायित्व : ज्यादे समय तक समय के हिसाब से निरन्तर स्थापित गुण ।

बहुभाषिक शिक्षा विस्तार के खातिर उपयोगी सामग्री :

स्कूल के पहुच से बहरे रहै वाले लोगन कै समावेशीकरण

कार्यक्रम संचालक लोगन कै पुस्तिका

कार्यक्रम संचालक लोग कै पुस्तिका

परिचय :

संसार भर मे स्कूले न जाय वाले लरिकन मध्ये ५० प्रतिशत अइसने समुदाय से रहत है, जहां घर मे स्कूल कै भाषा नहियय बोली जात है, औ बोलहू जात है तो घर मे नाही बोला जात है । सबके खातिर शिक्षा पावय मे यी स्थिति सबसे बडे चुनौती के रुप मे है । यहि अनुत्पादक अभ्यास कै निरन्तरता पढाई कै स्तर गिरावय औ स्कूल छोडय कै औ क्लास दोहरावय के दर का बढावय के दिशा मे आगे बढत जात है ।[१]

पुस्तिका मे यही उपर के उद्दरण मे देखावा जेस गौण या अल्पसङ्ख्यक भाषा बोलयवाले लोगन कै जरुरत पूरा करयवाले यही शैक्षिक कार्यक्रम के बारे मे केन्द्रित है । यी पुस्तिका निम्नलिखित विषय पर बातचीत करय के खातिर प्रश्न औ उत्तर के ढाचा मे तयार किहा है :

- *स्कूल मे कामकाजी भाषा न बोलय वालन कै शैक्षिक स्थिति*
- *मातृभाषा पर आधारित बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम कै परिभाषा औ उद्देश्य*
- *विद्यार्थी के मातृभाषा मे बढिंया शैक्षिक पुर्वाधार बनावय कै तरीका औ स्कूल के कामकाजी भाषा तक पहुचय खातिर बढिया 'पुल्ह' कै निर्माण*
- *प्रभावकारी बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै योजना औ कार्यान्वयन ।*

सवाल औ जबाब :

अल्पङ्ख्यक भाषिक समुदाय मे भाषा औ शिक्षा

सवाल १. : स्कूल कै कामकाजी भाषा न बोलय वालन कै स्थिति कइसन है ?

नेपाल के सन्दर्भ मे करीब सारे सामुदायिक स्कूलन मे कामकाजी भाषा के रुप मे नेपाली प्रयोग होत है । एक अध्ययन अइसने स्कूलन मे नेपाली मातृभाषा न होयवाले लरिकन बिटियन का तीन किसिम कै समस्या देखाय परत है :[२]

---

१. वर्ल्ड बैंक. २००५. एजुकेशन नोट्स. इन देअर वोन लैंग्वेज : एजुकेशन फाँर आँल, वाशिङ्टन डी.सी. : वर्ल्ड बैंक http://siteresources.worldbank.org/EDUCATION/Resources/Education-Notes/EdNotes_Lang_of_Instruct.pdf (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

२. चिराग, २००१ बाइलिंगुअल एजुकेशन : अ स्टडी रिपोर्ट काठमांडू : शिक्षा औ खेलकुद मंत्रालय, शिक्षा विभाग, अनुसंधान औ विकास शाखा ।

- **उच्चारण कै समस्या** : नेपाली मातृभाषा न होयवाले विद्यार्थी लोग नेपाली का बढिया से नाही उच्चारण कइ पावत हैं । जइसय तामाङ औ गुरुङ भाषा बोलय वाले विद्यार्थिन का 'अ' औ 'आ' अलगियाय कै बोलय मे समस्या है । जवने के नाते यी भाषा बोलय वाले लरिकन बिटियन का नेपाली कै मर्नु औ मार्नु जइसन शब्द अलगियावय मे कठिनाई होई ।

- **वाक्य तह मे समस्या** : नेपाली मातृभाषा न होयवाले विद्यार्थिन का नेपाली भाषा के काल आदरार्थी, लिङ्ग, बचन, तिर्यक रुप औ पदक्रम मे समस्या होई ।

- **लिपि कै समस्या** : दूसर लिपि प्रयोग करयवाले समुदाय से आवा लरिकन का देवनागरी लिपि मे पढय लिखय मे समस्या होई । खास कइकै मुस्लिम समुदाय के लरिकन बिटियन मे यइसन समस्या है ।

यइसन समस्या होय कै मुख्य रुप से तीन कारण देखा गये हैं :

- विद्यार्थिन के घर के भाषा से स्कूल के कामकाजी भाषा (नेपाली) के ओर क्रमशः लइ जाय कै स्कूल कै नीति न होब ।

- विद्यार्थिन का नवां भाषा (नेपाली) मे अभ्यास करय कै कम अवसर मिलब ।

- विद्यार्थिन के अडोस पडोस मे घर कै भाषा प्रयोग होय कै बातावरण होय के नाते नवां भाषा भुलाब ।

घर के भाषा स्कूल के कामकाजी भाषा से अलग होय के नाते लोग शिक्षा मे आपन पहुच नाही बनाय पावत हैं या स्तरीय शिक्षा से वंचित होय के पीडा सहय के खातिर मजबूर है :

- खास कइकै दुर्गम क्षेत्र मे रहय वाले बहुत लोगन का या तो स्कूल तक पहुँच हइयय नाही है या स्कूल है लेकिन शिक्षक नदारद हैं ।

- यदि स्कूल औ शिक्षक दूनव है तो शिक्षक लोग विद्यार्थिन के सामाजिक औ सांस्कृतिक पृष्ठभूमी से न तो घुलामिला है औ न तो विद्यार्थिन कै भाषा बोलि पावत हैं ।

- शैक्षिक सामग्री औ पाठ्यपुस्तक यइसन भाषा मे है जवने का विद्यार्थी बूझि नाही पावत हैं । कुलि पाठ विद्यार्थिन कै अपने ज्ञान औ अनुभव पर आधारित न होइकै मुख्य भाषा औ संस्कृति पर आधारित है ।

- विद्यार्थी लोग स्कूल कै कामकाजी भाषा बूझि न पावय के नाते पाठ कै बिषयवस्तु नाही बूझि पावत हैं । यही नाते अधिकतर लोग कक्षा मे बढिया से नाही बूझि पावत हैं । जवने के नाते ऊ लोगन काँ कक्षा दोहरावय के परत है अन्त मे निरुत्साहित होइकै ऊ लोग कुलि मिलाय कै स्कूल छोडि देत है ।

सवाल २ : मातृभाषा पर आधारित शिक्षा काव होय औ यी विद्यार्थिन का सफल होय के खातिर कइसय मदत करत है ?

मातृभाषा पर आधारित बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थिन कै पहिला या घर के भाषा मे शुरु होत है । येसे विद्यार्थी के विद्यालय कै कामकाजी भाषा औ जरुरत के अनुसार कै अउरो भाषन के सिखाई मे रफ्तार औ आत्मविश्वास बढावय मे मदत मिलत है । यकरे साथवय स्तरीय शिक्षा पावय के खातिर ऊ लोगन मे अपने औ कामकाजी दूनव भाषा प्रयोग करय के खातिर प्रेरित करत है ।

प्रभावकारी बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय के विद्यार्थिन का मुख्य भाषा (कामकाजी भाषा) मे पढाई होय वाले विद्यालय मे देखायमान तमाम शैक्षिक समस्यन का समाधान करय मे मदत करत है ।

मूलधार के स्कूल कै समस्या : पढाई शुरु करत कै विद्यार्थी सै स्कूल कै भाषा बोलय कै आशा करत हैं, विद्यार्थी भले ऊ नवां भाषा कब्बव न सुने होय ।

नेपाल के मूलधार वाले विद्यालय के कक्षा कोठरी मे भाषा प्रयोग के बारे मे एक जने विशेषज्ञ कै आखिन देखा हाल यहि किसिम कै है :

> *जब हम स्कूल मे देखेन तो हम्मय विद्यार्थी का मातृभाषा प्रयोग करयक न देवय खातिर किहा जाय वाले उपाय पता लाग । उदाहरण के खातिर शिक्षक कक्षा मे खाली नेपाली भाषा बोलत रहें औ खाली नेपाली भाषा सिखावत रहें । यकरे साथय विद्यालय कै हरेक काम नेपाली मे होत रहा । येसे लरिकन पर आपन भाषा छोडय खातिर मनोवैज्ञानिक दबाब परत है । अङ्ग्रेजी के कक्षा मे हम अङ्ग्रेजी का छोडि के दूसर भाषा न बोलय पावयक नियम बना पायन । यइसन नियम बना विद्यालय मे अङ्ग्रेजी बाहेक कै दूसर भाषा बोलय वाले विद्यार्थी कम अङ्क पावत है ।*[३]
>
> बहुभाषी शिक्षा समाधान : विद्यार्थी लोग अपने घर कै या पहिला भाषा प्रयोग कइकै पढाई शुरु करत हैं । यक्कय कक्षा मे यदि एक से ढेर भाषाभाषी समुदाय कै विद्यार्थी हैं तो कवनो एक स्थानीय भाषा का सम्पर्क भाषा के रुप मे प्रयोग कइ सका जात है ।

मूलधार के स्कूल कै समस्या : विद्यार्थी का नवां भाषा बूझय औ वहि भाषा मे नवां धारणा कै प्रयोग करय के खातिर शब्द भण्डार चाहीं । लेकिन जरुरत के अनुसार कै शब्द भण्डार बनावय से पहिलेन विद्यार्थिन का नवां भाषा के माध्यम से अमूर्त धारणा सिखय के परत है ।

> बहुभाषी शिक्षा समाधान : शुरु के कक्षा मे शिक्षक लोग शैक्षिक धारणा सिखावय के खातिर विद्यार्थी लोगन के जानल भाषा कै प्रयोग करत हैं । साथय साथ विद्यार्थी लोग नवां भाषा पहिले बोलाई औ बाद मे पढाई औ लिखाई के माध्यम से सिखयक शुरु करत हैं । जइसै जइसै लरिके बिटियय नवां भाषा सिखत जात हैं, शिक्षक लोक वही हिसाब से वहि भाषा का पढाई के माध्यम के रुप मे प्रयोग

३. अवस्थी, लवदेव २००४. एक्स्प्लोरिङ स्कूलप्रैक्टिसेज इन मल्टिलिंगुअल नेपाल पीएचडी शोधग्रंथ, कोपेनहेगेन : डेनिस युनिभर्सिटी आँफ एजुकेशन, पृ. १९७ ।

करय लागत हैं । बकिर ऊ लोगन का नवां बाति सिखावय के खातिर, वन लोग काव सिखिन यी बाति जाचय के खातिर औ न बूझा बाति बुझावय के खातिर शिक्षक लोग वन लोगन के घर कै भाषा प्रयोग करिहैं ।

विद्यार्थी का एक बाजी अपने भाषा मे कवनो बाति समझय के बाद दुसरे भाषा मे फिर उहय बाति सिखय कै जरुरत नाही परी । ऊ लोगन का वहि भाषा मे जाना बाति का दुसरे भाषा मे कहय के खातिर खाली नवा भाषा के शब्द भण्डार कै जरुरत परी । यही नाते बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम से जुडा शिक्षक लोग कहत हैं कि 'यी पहिलावाजी होय कि हमार विद्यार्थी यहि धारणन का समझे होइहैं ।'

बढिया से योजना के बनाय कै चलावा मातृभाषा पे आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम से नीचे दिहा जेस विद्यार्थी तयार होइ है :

- बहुभाषी : ऊ लोग स्कूल मे पढत के रोज छलफल मे दुई वा दुइ से ढेर भाषा कै प्रयोग करत हैं ।
- बहु साक्षर : ऊ लोग दुई वा दुई से ढेर भाषा मे पढिलिखि सकत हैं ।
- बहुसांस्कृतिक : अपने संस्कृति औ समुदाय के प्रति माया मोह औ आदर कायमै राखत ऊ लोग अपने समुदाय के बहरे कै मनइन के साथे सहजय घुलमिल कइकै आवश्यक काम कइ सकत हैं ।

सवाल ३ : लरिकन कै पहिला भाषा से स्कूल कै कामकाजी भाषा के ओर जाय कै प्रक्रिया काव होय ?

यदि शिक्षक तालिम पाये हैं औ विद्यार्थी के घर कै औ विद्यालय कै दूनव भाषा मे स्तरीय सामग्री मौजूद है तो भाषा सिखावय कै काम जल्दी होइ सकत है । बकिर एशिया औ प्रशान्त क्षेत्रके अनुभव से यी देखा गा है कि शिक्षक लोगन का पेशा अनुसार कै तालिम नाही मिला है, पढय पढावय वाला सामान सीमित है औ स्कूल से बहरे विद्यार्थिन का नवां भाषा सिखय कै मवक्का कम है तो, धीरेन धीरे आगे बढब उचित रही । यइसन किहे से विद्यार्थी औ शिक्षक केहू में दुबिधा नाही रही ।

मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कै एकठू अन्तरनिहित सिद्धान्त यी होय कि विद्यार्थी लोग तब्बय बढिया से सिखि पावत हैं, जब ऊ लोग नवां तथ्य, धारणा औ भाषा जानय खातिर आपन पहिलेन से जाना भाषा, ज्ञान औ अनुभव कै प्रयोग करत हैं । यही नाते बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम पहिला भाषा मे मजबूत शैक्षिक आधार बनाय कै दुसरे भाषा तक पहुचय वाला पुल्ह बनावय मे विद्यार्थिन का मदत करत है ।

पहिला भाषा मे सुरुवात : बढिया बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे विद्यार्थी लोग बढिया से बोलय औ समझय वाले भाषा मे पढाई शुरु कइकै एक सबल शैक्षिक आधार बनावय्क शुरु कइ देत हैं । पाठ मे विद्यार्थी के ज्ञान औ अनुभव का जोडि कै नवां विषय दिहा रहत है । पहिला भाषा मे बना यिहय आधार विद्यार्थी का दुसर भाषा बढिया से सिखय मे मदत करत है । अनुसन्धान से पता चलत है कि पहिला भाषा मे बनावा यी आधार विद्यार्थिन का नवां भाषा सफलतापूर्वक सिखय मे विशेष रुप से मदत करत है ।

> *विद्यार्थिन के अपने मातृभाषा के विकास कै स्तर ऊ लोग मे दुसर भाषा विकास कै सबल सम्भावना देखावत है । अपने मातृभाषा मे मजबूत आधार बनावय वाले लरिके बिटिय्य स्कूलव के भाषा मे मजबूत साक्षरता क्षमता (सामर्थ्य) कै विकास करत हैं ।*[४]

नवां भाषा मे जाय खातिर पुल्ह कै निर्माण : अपने घर के भाषा मे शैक्षिक आधार बनावय के बाद विद्यार्थी लोग नवां भाषा मे पहिले बोलय औ फिर लिखय औ पढय के सिखत हैं । यकरे बावजूद ऊ लोग नवां भाषा मे आधारभूत क्षमता हासिल करतय भरेम आपन पहिला भाषा नाही छोडि देत हैं । बलुक कम्ती मे प्राथमिक तह तक के सिखाई मे दूनव भाषा प्रयोग करत है ।

४. कमिन्स, जे. २०००. वाइलिंगुअल चिल्ड्रेन्स मदर टङ : □वाई इज इट इम्पार्टंट फाँर एजुकेशन ?
http://www.iteachilearn.com/cummins/mother.htm (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

विद्यार्थी लोग प्राथमिक विद्यालय मे दुई वा दुई से ढेर भाषा मे आपन क्षमता बढावत जात हैं औ ऊ लोग भाषा का गहन रुप से बूझत औ ओकरे प्रभावकारी प्रयोग कै क्षमता विकसित करत है । वन लोग भाषा प्रक्रिया कै आउर से ढेर अभ्यास करत हैं । यइसन लोग दूनव भाषा मे साक्षर होय के बाद दुई अलग अलग भाषा मे यथार्थ का कवने रूप मे व्यवस्थित किहा है, यहू कै तुलना औ बिबेचना करय लायक होइ जात हैं ।[५]

सबसे पहिले विद्यार्थी के पहिला भाषा से शुरु कइकै धीर धीरे पहिले मुहजबानी औ बाद मे लिखित रुप मे नवां भाषा से परिचित करावा जात है । भाषा शिक्षण के खातिर सामान्य रूप मे चार चरण कै निर्धारण कइ सका जात है (नवां भाषा सिखय के खातिर अउरो चरण कै जरुरत परि सकत है) । हरेक चरण वकरे पहिले कै चरण पर आधारित होत है औ हरेक चरण मे शिक्षक लोग लरिकन काँ पहिले से सिखा बातीन कै सबलीकरण करत हैं ।

उचित भए आउर भाषा थपा जाय
पहिला भाषा के साथय दुसरे भाषा मे मौखिक औ लिखित रुप कै निरन्तरता

दुसरे भाषा मे पढाई औ लिखाई सुरू
पढावय औ सिखावय के खातिर पहिला के साथय दुसरे भाषा कै प्रयोग शुरु

मौखिक रुप मे कामकाजी (दूसर) भाषा के प्रयोग कै सुरुवात
पहिले भाषा का मौखिक औ लिखित दुनव रुप मे निरन्तर प्रयोग, पढावय औ सिखावय मे पहिला भाषा कै निरन्तर प्रयोग

पहिला भाषा मे पढावय औ लिखावय कै सुरुवात
पहिला भाषा मे मौखिक विकास कै निरन्तरता
पढावय औ सिखावय मे पहिला भाषा कै प्रयोग

पहिला भाषा मे मौखिक रुप से सुनय औ बोलय के खातिर क्षमता के साथय आत्मविश्वास कै विकास
(सुरु सुरुमे स्कूल जाय वाले लरिकन बिटियन के खातिर)

प्राथमिक तह में शिक्षा कै चरण [७]

---

५. कमिन्स, जे. २००० वाइलिंगुअल चिल्ड्रेन्स मदर टङ : ह्वाई इज इट इम्पांर्टंट फांर एजुकेशन http://www.iteachilearn.com/cummins/mother.htm (१७ नवंबर २००६ मे प्राप्त)

६. पहिला भाषा : लरिकन बिटियन घर कै/पैतृक भाषा, ऊ लोग कै सब से बेसी जाना भाषा दूसर भाषा : लरिकन बिटियन कै दूसर/कामकाजी/राष्ट्र भाषा

७. मेलोन, एस. २००५ प्लानिङ कम्युनिटी-बेस्ड एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइनारिटी लैंग्वेज कम्युनिटिज रिसोर्स मैनुअल फार मदर टङ स्पीकर्स आँफ माइनारिटी लैग्वेजेज इंगेज्ड इन प्लानिङ एण्ड इम्प्लिमेंटिङ एजुकेशन प्रोग्राम्स इन देअर वोन कम्युनिटिज पर आधारित ।

सवाल ४: मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा का प्रभावकारी रुप से लागु करय के खातिर काव काव चाहीं ?

संसार भर कै बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम पर किहा एक अध्ययन के अनुसार सफल औ दीर्घजीवी कार्यक्रमन मे यहि किसिम कै कुछ समान रुप कै विशेषता पावा गा हैं :

१. अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कार्यक्रम कै योजना बनावय्क, लागू करय्क, मूल्याङ्कन करय्क औ वोकां स्थायित्व देवय कै साझा जिम्मेवारी लेत हैं ।

२. सरकारी निकाय, गैरसरकारी संस्था, विश्व विद्यालय औ आउर इच्छुक सङ्घ संस्थन के कार्यक्रम मे मिलिकै काम करत हैं ।

३. कार्यक्रम के सम्पूर्ण पक्ष खास कइकै तालिम, सामग्री औ स्थानीय शिक्षक कै पारिश्रमिक के खातिर जरुरी रकम का छुटियावा जात है ।

४. विद्यार्थी अभिभावक औ ऊ लोगन कै समुदाय आपन शैक्षिक लक्ष्य पावय खातिर सहयोग करय वाले कार्यक्रमन से होय वाले फाइदा के बारे मे जाने रहत हैं ।

यइसन कार्यक्रमन का लागू करय औ कायम राखय के खातिर कुछ यहि किसिम के सामान्य क्रियाकलाप किहा जात है :

उप्पर के रेखा चित्र मे दिहा समूचा क्रियाकलाप कार्यक्रम लागू करय वाले लोगन के जिम्मेवारी मे भित्तर नहियव परि सकत है । उदाहरण के खातिर बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के खातिर सहयोग नीति बनावय मे औ सुरक्षित कोष खडा करय मे ऊ लोग सहभागी नहियव होइ सकत हैं । बकिर आउर क्रियाकलाप मे ऊ लोग बेसी से बेसी सहभागी होइ हैं । यहि क्रियाकलापन के बारे कै छोट औ सामान्य परिचय नीचे दिहा हैं ।

सहयोगी राजनीतिक वातावरण निर्माण : मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे राजनीतिक औ आर्थिक सहयोग लेवय के खातिर नीति निर्माता औ आउर निकायन का परिचालित करय के परत है । यकरे खातिर ऊ लोगन का कार्यक्रम औ फाइदा के बारे मे स्पष्ट जानकारी देय के चाहीं । कार्यक्रम संचालक लोग मिलि कै अनुकूल राजनीतिक बातावरण बनावय खातिर लरिकन काँ पूर्व प्राथमिक शिक्षा औ स्कूल छोडय के बाद दिहा जाय वाला शिक्षा कै छोट छोट अनौपचारिक कार्यक्रम बनाय कै शुरु कइ सकत हैं । यी काम औपचारिक नीति बनय से पहिलवय कइ सका जात है । यइसन छोट छोट निजी कार्यक्रम का सफल होय के बाद वोसे बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै महत्व स्पष्ट होत है औ कार्यक्रम खातिर जरुरी राजनीतिक सहयोग जुटावय मे मदत पहुचत है ।

कार्यक्रम सञ्चालक लोगन कै ऊँच तह कै सरकारी अधिकारी तक पहुच या ऊ लोगन के नीति निर्माण के तह मे आवाज पहुचावय के स्थिति नहियव होइ सकत है । यकरे बावजूद आउर भाषिक समुदाय, सरकारी निकाय, गैरसरकारी संस्थन के साथे सरकारी सम्बन्ध कै विकास कइ सका जात है । अकेलय से अच्छा मिली कै काम किहे पर यइसन समूह कै आवाज बेसी शक्तिशाली होत है । यही नाते उप्पर कहा परिवर्तन लावय खातिर औ वोकां कायम राखय के खातिर सम्बन्ध बढावय के काम का हरदम प्राथमिकता देवय के चाहीं ।

योजना के खातिर सूचना संकलन : सफल कार्यक्रम बढिया योजना से सुरु होत है औ बढिया योजना के खातिर बढिया सूचना चाहीं । नीचे दिहा सवाल कै जवाफ बढिया बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै योजना बनावय के खातिर कुछ जरुरी सूचना देवय मे मदत करी :

भाषिक समुदाय कै लोग आपन अबहिन तक के शैक्षिक अवस्था के बारे मे का कहत है ? (अपने लरिकन बिटियन कै शिक्षा के खातिर ऊ लोगन कै लक्ष्य का है ? वन लोगन कै समस्या औ जरुरत कइसन कइसन हैं ?)

- बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम शुरु करय खातिर कवन कवन अल्पसङ्ख्यक समुदाय तयार हैं। (शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्य के खातिर ऊ लोग अपने भाषा के विकास कै अठोट लिहे हैं ? वन लोग शिक्षक औ लेखक लोगन कै खोजी किहे हैं ? वन लोगन के लगे कक्षा चलावय्क जगहि है ? ऊ लोग यइसन कार्यक्रम लागू करय्क औ मिलिकै चलावय्क इच्छुक हैं ?

- स्थानीय भाषा कै स्थिति कइसन है ? (येकर मातृभाषी वक्ता, शिक्षविद, औ सरकारी अधिकारिकन कै मान्यता दिहा लेखन पद्धति हैं ?)

- कवन कवन स्रोत प्रयोग कइ सका जात है ? (तालीम कहा होत है ? तालिम के देत है ? कक्षा कै निरीक्षण के करत है ? बहुभाषिक शिक्षा पाठ्यक्रम बनावय मे के मदत करत है ?, विद्यार्थिन के भाषा मे पाठ्य सामग्री के बनावत है ?)

- कार्यक्रम लागू करय औ येकां दीर्घकालिक बनावय मे कवन कवन बाति बाधा पुरियाय सकत हैं औ समस्या है तो समाधान का होइ सकत है ? (तालिम, निरीक्षण औ सामग्री का बाटय खातिर यातायात कै समस्या है कि ? स्थानीय तहय मे तालिम दइ सका जात है कि ? आउर शिक्षक लोगन के निरिक्षण करय के खातिर वहीं आसपास से केहू का मुख्य शिक्षक के रुप मे राखि सका जात है कि ?)

- मिला प्रतिवेदन औ आउर अभिलेख के आधार पर भाषा औ शिक्षा कै स्थिति आज के दिन मे कइसन देखात है ? (हरेक भाषिक समुदाय कै केतना प्रतिशत लरिके स्कूले जात हैं ? वहि मध्ये केतना लोग कक्षा ६ औ केतना लोग कक्षा १० तक पढे है ? केतना प्रतिशत प्रौढ लोग छपा सामान पढि सकत हैं ? कवने कवने भाषा मे पढि सकत हैं ?

© बखत भण्डारी

नेपाल कै उदाहरण

भाषा प्रयोग के बारे में भाषिक समुदाय कै धारणा[८]

नेपाल के भाषिक विविधता के स्थिति के बारे मे किहा एक अध्ययन के अनुसार विभिन्न मातृभाषी लोग अपने अपने मातृभाषा के बारे मे सकारात्मक धारणा राखत हैं । नेपाल के ७८ ठउर भाषा कै भाषिक संस्था कै प्रतिनिधि औ आउर लोगन का पूछा गै रहा 'आपका मुख्य भाषा कै वक्ता के आगे आपन मातृभाषा/पहिला भाषा बोलत के गौरव लागत है/दु:ख लागत है/कवनो अनुभव नाही है ?'' बहिमध्ये ७६ ठू (९७ प्रतिशत) भाषा कै वक्ता अपने मातृभाषा का बोलत के गौरव लागत है बताइन तो दुई भाषा (बराम औ संस्कृत) कै वक्ता लोग हमरे नेपाली भाषा का पहिला भाषा के रुप मे प्रयोग करय लागा गा है । यही नाते हम्मन का कवनो अनुभव नाही है' कहिकै तटस्थ जबाफ दिहिन । येसे यी स्पष्ट होत है कि नेपाल कै लगभग हरेक मातृभाषी वक्ता अपने भाषा का प्रतिष्ठापूर्ण मानत हैं ।

मातृभाषा प्रयोग करत के कइसन लागा ला ?

सङ्ख्या - ७८

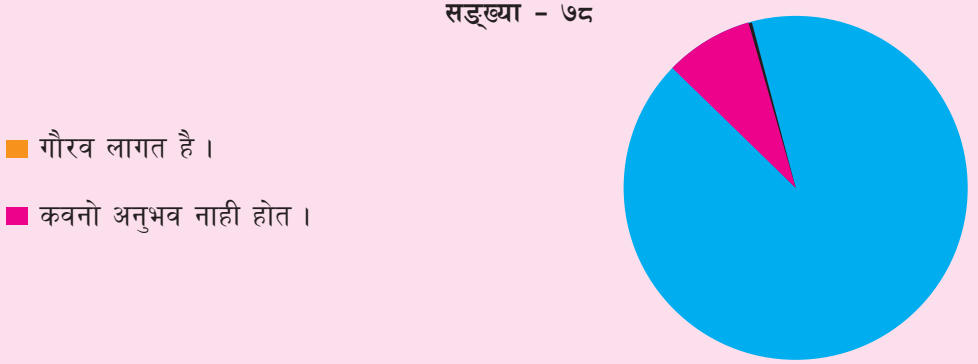

८. यादव, योगन्द्रप्रसाद औ आउर लोग (तैयारी के क्रम मे) लिंग्विस्टिक डाइभर्सिटी इन नेपाल : सिचुएशन एण्ड पालिसी प्लानिङ ।

फिलिपिन्स कै उदाहरण

अनौपचारिक प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम के खातिर प्रारम्भिक अनुसंधान[९]

फिलिपिन्स कै अनौपचारिक शिक्षा ब्यूरो विभिन्न भाषिक समुदाय मे "पहिला भाषा पहिले" नाँव कै द्विभाषिक कार्यक्रम शुरु किहिस । बकिर पाठ्य सामग्री औ तालिम प्राप्त सहजकर्ता लगायत कै स्रोत सामाग्रिन कै कमी के नाते, सोचे जइसन सारा कार्यक्रम योजनाबद्ध ढंग से लागू नाही होइ पाय । वहि मध्ये कै एक दीर्घकालिक रुप मे चला वतान कै मोरोइ्मा मक्बिकिन भाषिक समुदाय के आदिवासी जनतन कै शिक्षा कार्यक्रम होय । यहि कार्यमूलक अनुसन्धान परियोजना कै दुइ चरण हैं । पहिले चरण मे सिखाई के खातिर जरुरी चीज कै पहिचान करय्क औ स्थानीय पाठ्यक्रम के साथय पाठ्य सामग्री बनावय मे जोड दिहा है । दुसरे चरण मे पाठ्य सामग्री कै उत्पादन, क्षमता विकास औ विद्यार्थिन कै समूह बनावय्क काम भय । कार्यक्रम कै सहजकर्ता लोग भाषिक समुदाय कै लक्ष्य औ जरुरत के बारे मे वनही लोगन से पता लगावय के खातिर ढेर रणनीति प्रयोग किहे रहें । यहि कार्यक्रम के प्रतिवेदन मे वहि अनुसन्धान कै रणनीतियव सामिल किहा है । ऊ यहि किसिम कै है :

- कार्यमूलक अनुसंधान के माध्यम से सूचना एकट्ठा करय खातिर परियोजना कै उद्देश्य औ प्रक्रियन पर अभिमुखीकरण सत्र केन्द्रित किहा जाय ।
- समुदाय कै नेता औ आउर सदस्य लोगन के साथे सम्बन्ध बढावय के खातिर समुदाय के साथे संवाद कार्यक्रम किहा जाय ।
- समुदाय के बारे मे सूचना लेय खातिर खास खास बिषय मे समूहगत छलफल चलावा जाय ।
- समूह छलफल से मिला सूचना का प्रमाणित औ आउर सूचना जोडय खातिर दुआरे मोहारे कार्यक्रम चलावय औ समुदाय के खास खास सदस्य लोगन कै अन्तर्वाता लेय ।

यी कार्यक्रमन के माध्यम से समुदाय से मिला सूचनन के आधार पर वन लोगन के जरुरत औ समस्या के बारे मे जानकारी मिला । फिर वहि जरुरत औ समस्या का बर्गीकृत किहा गय औ प्राथमिकता क्रम मे राखा गय । कार्यक्रम कै सहजकर्ता यहि जरुरतन औ समस्यन का अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम मे खास समुदाय के खातिर पाठ्यक्रम बनावत कै ध्यान दिहिन ।

जनचेतना अभिबृद्धि औ साझेदार लोगन कै परिचालन : बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे जेसे जेसे सहयोग लेय के है, ऊ लोगन का बहुभाषिक शिक्षा कै उद्देश्य औ फाइदा के बारे मे जानकारी देय कै जरुरत है । जनचेतना बढाइ कै औ विभिन्न कार्यक्रम कइके वन लोगन का बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे मिलिकै योजना बनावय्क, लागु करय्क औ वोका मदत करयवाले हिसाब से उत्साहित बनावय वाला सूचना देवय

९. भाल्लेस, एम.सी. २००५. एक्शन रिसर्च आँन द डिभेलप्मेंत आँफ एक इंडिजेनस पीपुल्स एजुकेशन प्रोग्राम फाँर द माग्बिकिन ट्राइब इन मोरोङ, बतान, फिलिपिंस, युनेस्को, फर्स्ट लैंग्वेज फर्स्ट : कम्युनिटी - बेस्ड लिटरसी प्रोग्राम्स फाँर माइनारिटी लैग्वेज कंटेक्स्ट इन एशिया बैंकक, युनेस्को, पृ. १८१-१९५ ।

के चाहीं, जवने के माध्यम से वन्हय कार्यक्रम कै योजना लागू करय औ सहयोग करय वाले लोगन के साथे मिलिकै काम करय्क उत्प्रेरित करी । अइसन क्रियकलाप समुदाय, जिल्ला, प्रान्त या राष्ट्रिय स्तर पर चलावा जाय सकत है ।

समुदाय मे जनचेनता अभिवृद्धि औ परिचालन : अल्पसङ्ख्यक समुदाय जे सालव साल से भेदभाव औ अपहेलना का झेलत आ हैं, समझि सकत हैं कि वनके भाषा औ संस्कृति कै कवनो मोल नाही है । वन लोग यिहव मानि सकत हैं कि जेतना जल्दी होइ पावय लरिकन का 'सत्ता कै भाषा' सिखाइब फाइदेमन्द रही । वन लोगन का डेर है कि यदि कक्षा मे हमरही लोगन कै भाषा प्रयोग भय तौ वन लोगन के लरिकन का कामकाजी या मुख्य भाषा सिखय कै बहुत कम अवसर मिली ।

अइसने सोच का बदलय के खातिर, जनचेतना वृद्धि कार्यक्रम कै बहुभाषिक शिक्षा कै शैक्षिक औ सांस्कृतिक दूनव के महत्व पर केन्द्रित होय के चाहीं । अइसने क्रियाकलाप मे बहुभाषिक शिक्षा के बारे मे अभिभावक औ समुदाय के आउर सदस्यन से बातचीत, वहि लोगन के तयार पाठ्य सामग्री कै प्रदर्शन, नाटक या हास्यव्यङ्ग्य (उदाहरण के रुप मे विद्यार्थिन के न बूझय वाले भाषा कै प्रयोग करत के कक्षा मे पढावत कै दृश्य औ विद्यार्थिन के घर के भाषा मे शिक्षक के पढावत कै दृश्य) औ वकरे बाद मे हास्य व्यङ्ग्य से मिला सनेस पर बातचीत, अउरो समुदाय के बहुभाषिक शिक्षा कक्षा कै अवलोकन भ्रमण या अन्तरक्रियात्मक बहुभाषी कक्षा कै श्रव्य दृश्य सामग्री (भिडियो) प्रदर्शन जइसन क्रियाकलाप कइ जाय के चाहीं ।

© बिक्रम मणि त्रिपाठी

फिलिपिन्स कै उदाहरण

प्राथमिक स्कूल कार्यक्रम के खातिर समुदाय स्तर पर जनचेतना वृद्धि अभियान[10]

फिलिपिन्स मे शिक्षा के क्षेत्र मे काम करय वाले लोग एकठू स्थानीय समुदाय मे भ्रमण किहिन । ऊ लोग विद्यालय मे चला बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के बारे मे अभिभावक लोगन से बातचीत किहिन । कुछ अभिभावक लोग अबहिन तक बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के बारे मे पूरा पूर जानि नाही पाये रहें । यकरे साथय ऊ लोग यहू बाति का लइकै चिन्तित रहें कि कहूँ ऊ लोगन कै लरिके देश कै कामकाजी भाषा फिलिपिनो औ अङ्ग्रेजी का बढिया से सिखय मे पीछे न रहि जांय । भ्रमण मे जाय वालेलोग वन लोगन का बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के बारे में बढिया से बताइन कि यी कार्यक्रम ऊ लोगन के लरिकन बिटियन का वनही लोगन के घर के भाषा मे सबल शैक्षिक आधार बनावय में औ कामकाजी भाषा तक पहुचय के खातिर बढिया से पुल्ह बनावय मे मदत करी । भ्रमणकर्ता लोग अभिभावक लोगन के सवाल कै सावधानीपूर्वक जवाफ दिहिन औ देश के आउर जगहिन कै उदाहरणव दिहिन । बैठक के अन्त में अभिभावक लोग कहिन कि हमरे कार्यक्रम चलाइब । लेकिन आप लोग म्नलि जाव औ यहि बाति कै ग्यारेन्टी करय खातिर तयार करौ कि वन लोग हम्मन के लरिकन के खातिर सबल शैक्षिक आधार औ कामकाजी भाषन तक पहुचय के खातिर मजबूत पुल्ह बनावय मे मदत करिहैं ।

जिल्ला औ प्रान्तीय तह में जनचेतना वृद्धि औ परिचालन : यदि स्थानीय, जिल्ला औ प्रान्तीय स्तर कै शिक्षा अधिकारी लोग प्राथमिक स्कूलन मे गैर कामकाजी भाषा के प्रयोग कै कारण नाही बूझे है तो ऊ लोगन का बहुभाषिक शिक्षा मे सहयोग करय मे कठिनाई होई । यही नाते स्थानीय, जिल्ला औ क्षेत्रिय तह कै शिक्षा अधिकारिन का बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै काहे जरुरत है ? येकर उद्देश्य का होय ? औ येसे का फाइदा होत है ? यहि बाति कै जानकारी देय के चाहीं । वन लोगन का बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम लागू करय औ येकां सहयोग करब जरुरी है, यहि बाति पर पूर्ण रुप से आश्वस्त बनाइब जरुरी है ।

परिचालन कार्यक्रम मे यी कुलि बाति परत है :

- स्कूल कै कामकाजी भाषा न बोलय वाले विद्यार्थिन कै शैक्षिक समस्यन के बारे मे वहि विद्यार्थिन का अल्पसङ्ख्यक समुदाय के सदस्य लोगन से बातचीत करावा जाय,
- ऊ लोगन का अपनेन साथे शिक्षा कक्षन कै भ्रमण करय्क औ यइसन कक्षन कै भिडियो देखाइ के वहि बारे मे छलफल किहा जाय,
- सुरुवाती अनुसन्धान, तालिम, कार्यशाला औ पाठ्यक्रम विकास मे वन लोगन का सामिल करावा जाय, औ
- कइसय सफल कार्यक्रम बनावा जाय के चाहीं, यहि बिषय पर नवां सिरा से सोचय के खातिर ऊ लोगन का उत्साहित करय के चाहीं ।

१०. लेखक के व्यक्तिगत बातचीत पर आधारित २००१. फिलिपिंस ।

पपुआ न्यू गिनी कै उदाहरण

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के खातिर प्रान्तीय तह मे जनचेनता वृद्धि कार्यक्रम[११]

जब काउगेल भाषिक समुदाय कै सदस्य लोगन अपने लरिकन बिटियन के खातिर पूर्व प्राथमिक मातृभाषा शैक्षिक कार्यक्रम शुरु किहिन, तो सबसे पहिले ऊ लोग अपने भाषा कै शिक्षा सङ्गठन खडा किहिन औ एकठू गैरसरकारी संस्था के रुप मे सरकारी निकाय मे दर्ता कराइन । कार्यक्रम कै सङ्योजक, जे कि एक स्कूल कै पूर्व शिक्षक रहें, यी बाति बूझिन कि यदि स्थानीय कार्यक्रम शुरु करय के है, तो प्रान्तीय शिक्षा कार्यालय के अधिकारिन के ओर से स्वीकृत औ अनुमोदित होय के परा । सङ्योजक कार्यक्रम के खातिर तैयार किहा कक्षा अनुसार कै काउगेल भाषा कै पाठ्यसामग्री कै नमूना लइकै प्रान्तीय राजधानी के शिक्षा कार्यालय मे पहुचें । वन तालीम कै कार्यशाला औ कक्षन का अवलोकन करय के खातिर प्रान्तीय शिक्षा अधिकारी का नेवता दिहिन औ शिक्षा कार्यालय मे नियमित रुप से कार्यक्रम सम्बन्धी प्रतिवेदन भेजत गयें । यकरे साथय साथ काउगेल सङ्योजक पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम चलावय के इच्छा राखय वाले अउरो भाषिक समुदाय के लोगन का तालीम देवय मे सहयोग करय खातिर प्रान्तीय शिक्षा अधिकारी से सहयोग करय के कहिन । काउगेल कार्यक्रम औ प्रान्तीय शिक्षा कार्यालय के बीच कै यहि सम्बन्ध से दोहरा फायदा भय । काउगेल प्रशिक्षक लोग शिक्षक तालिम कार्यशाला मे सहयोग किहिन तो शिक्षा कार्यालय काउगेल कार्यक्रम का कक्षा कोठरी खातिर सामान दिहिस् । सन् १९८४ मे शुरु भवा काउगेल भाषा मे पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम बीस बरिस तक बढिया से चलत आ है । आज 'काउगेल पहिला' कार्यक्रम पपुआ न्युगिनी के शिक्षा मे समेटा है ।

राष्ट्रिय तह मे जनचेतना बढाइब औ परिचालन : नीति बनावय वाले औ आउर सरकारी अधिकारिन का देश के भित्तर औ बहरे उम्दा कार्यक्रमन कै भ्रमण करावय के चाहीं । यी सबसे बढिया जनचेतना बढावय वाला क्रियाकलाप होय । बहुभाषिक शिक्षा पर केन्द्रित राष्ट्रिय या क्षेत्रीय स्तर कै सम्मेलन औ कार्यशाला कै आयोजना दुसरे रणनीति के रुप मे आय सकत है ।

११. काउगेल भाषा कै कार्यक्रम में सन् १९८२ से १९८७ तक काम करत के लेखक के अनुभव पर आधारित ?

नेपाल कै उदाहरण

बहुभाषिक शिक्षा के बारे मे राष्ट्रिय तह मे जनचेतना बढावय खातिर बहुभाषिक शिक्षा सम्मेलन

नेपाल मे शिक्षा तथा खेलकूद मन्त्रालय, त्रिभुवन विश्व विद्यालय (भाषा विज्ञान केन्द्रिय, विभाग औ नेपाली तथा एशियाली अनुसन्धान केन्द्र) युनेस्को औ एस आइ एल इन्टरनेशनल के आयोजना मे अक्टूबर १२, २००७ मे बहुभाषिक शिक्षा सम्मेलन शुरु भा रहा । येकर मुख्य उद्देश्य बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के औचित्य, सिद्धान्त औ व्यवहार के बारे मे साझा अवधारणा बनावय के खातिर मुख्य साझेदार लोगन का एक जगही लावय्क रहा । यकरे साथय सम्मेलन कै लक्ष्य सहभागिन मे नेपाल का बहुभषिक शिक्षा के खातिर बिचार निर्माण के साथय योजना औ दृष्टिकोण विकास करय के खातिर व्यवसायिक अन्तरक्रिया कै बातावरण बनाइब रहा । यी सम्मेलन खास कइकै बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै योजना कइसन बनावा जाय, कइसय लागू किहा जाय यहि बारे मे रुची लेवय वाले मनईन के खातिर बढी उपयोगी देखान ।

सम्मेलन कै मुख्य विषय यहि किसिम कै रहा :

- काहे हरेक अनुसंधान अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय के लरिकन बिटियन का शिक्षा के दृष्टि से पाछे परा देखावत है ?
- बहुभषिक शिक्षा से कवन कवन फाइदा है ?
- अनुसन्धान बहुभाषिक शिक्षा के बारे मे काव काव कहत है ?
- बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के सफलता औ दीर्घजीवीपना के खातिर काव काव चाहीं ?

१२. अक्टोबर १-३, २००७ में काठमांडू में आयोजित बहुभाषी शिक्षा सम्मेलन कै प्रतिवेदन ।

अन्तमे सहभागिन कै सयुक्त प्रयास से नेपाल के सन्दर्भ मे बहुभाषिक शिक्षा कै विस्तार सम्बन्धी निम्नलिखित सुझाव आय रहे :

का करय के चाहीं ?	कइसय करय के चाहीं ?	केकां करय के चाहीं ?
बहुभाषी कक्षा खातिर		
शिक्षक लोग का जरुरत वाले जगही एक से बेसी भाषा कै प्रयोग करय के चाहीं, या मातृभाषी सहायक लोग कै व्यवस्था करय के चाहीं ।	शिक्षक लोगन का मूल्यांकन औ तालीम कै व्यवस्था औ बहुभाषी शिक्षण-सिखाई सामग्री कै विकास होय के चाहीं ।	शिक्षक/विश्वविद्यालय/आउर निकाय का करय के चाहीं ।
विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण-सिखाई सामग्री (विद्यार्थिन कै बनावा) कै प्रयोग करय के चाहीं ।	विद्यार्थी के नवा सामग्री बनावय के औ अपने रचनात्मक इलिम कै उपयोग करय के चाहीं ।	विद्यार्थिन का करय के चाहीं ।
ढेर समूह बनावा नाही जाय सकय तब्बव कक्षा कै भाषा के आधार पर विभिन्न समूह मे बाटय के चाहीं ।	कक्षा में कुलि भाषा कै पहिचान कइके सहायक शिक्षक लोगन कै व्यवस्था करय के चाहीं ।	स्कूल व्यवस्थापन समिति का करय के चाहीं ।
समूचे विद्यार्थिन के खातिर उपयुक्त स्कूल बनावय के खातिर		
मातृभाषा पर आधारित शिक्षा में शिक्षक के दक्ष होय के चाहीं । (दक्ष शिक्षक औ जरुरत अनुसार कै साधन सब कै व्यवस्था करय के चाहीं)	तालीम, अनुभव, पुरस्कार औ डंड कै व्यवस्था करय के चाहीं ।	शिक्षक का करय के चाहीं ।
मातृभाषा पर आधारित बहुभाषी शिक्षा के प्रति सचेत होय के चाही औ शिक्षण-सिखाई में शामिल होय के चाहीं ।	अभिभावकका शिक्षा दइके समुदाय के जानकारी कै स्तर बढावय के चाहीं ।	समुदाय औ स्कूल व्यवस्थापन समिति का करय के चाहीं ।
समावेशी शिक्षा देवय के खातिर सरकारी निकायन का योजना बनावय के, बजेट कै व्यवस्था करय के, मानव स्रोत कै विकास करय के, कार्यक्रम लागू करय कै औ अनुगमन करत रहय के चाहीं ।	समुदाय, विशेषज्ञ, गैरसरकारी संस्था औ समुदाय पर आधारित संगठन सब से अंतरक्रिया करय के चाहीं ।	सरकारी संरचना (शिक्षा मंत्रालय, शिक्षा विभाग, जिल्ला शिक्षा कार्यालय, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, शैक्षिक जन(शक्ति विकास केन्द्र, श्रोत व्यक्ति का करय के चाहीं ।
कार्यक्रम कै मूल्यांकन		
समूचा पक्ष कै मूल्यांकन करय के खातिर जरुरी उपकरण बनावय के चाहीं ।		जिल्ला शिक्षा कार्यालय स्कुल निरीक्षक, श्रोत व्यक्ति का करय के चाहीं ।

शिक्षक तालीम कै मूल्यांकन करय के चाहीं ।	संलग्नता, सिखाई उपलब्धी के प्राप्ति, विद्यार्थी मूल्यांकन उपकरण कै सदुपयोग, आलोचनात्मक दृष्टिकोण औ समस्या समाधान, शिक्षण, कक्षा कोठरी कै व्यवस्थापन, शिक्षक अभिवृत्ति औ संप्रेषण कै इलिम, शिक्षक कै ज्ञान औ विशेषज्ञता कै मूल्यांकन करय के चाहीं ।	शिक्षक सहजकर्ता औ अनुसंधानकर्ता का करय के चाहीं ।
स्थानीय मानव श्रोत कै एकीकरण		
भाषा सर्वेक्षण करय के चाहीं ।	लागू करै के खातिर समुदाय सिखाई केंद्र का उत्तरदायी होय के चाहीं ।	स्थानीय मानव श्रोत का करय के चाहीं ।
सर्वे पर आधारित होइके कार्यक्रम बनावय के चाहीं ।	समुदाय सिखाई केंद्र के श्रोत का उपयोग करय के चाहीं ।	गाँव विकास समिति/समुदाय पर आधारित संगठन, शिक्षक राजनीतिक दल औ लरिकन बिटियन का करय के चाहीं ।
लागू करय के खातिर श्रोत केंद्र कै स्थापना करय चाहीं ।	समुदाय सिखाई केंद्र के लागू करय के चाहीं ।	त्रिभुवन विश्वविद्यालय के विद्यार्थी का करय चाहीं ।
सामग्री कै विकास करय के		
पाठ्यक्रम विकास (चालू पाठ्यक्रम कै संशोधन) औ आवश्यकता मूल्यांकन करय के चाहीं ।	आवश्यकता मूल्यांकन कै प्रचार करय के औ विभिन्न तह में पृष्ठपोषण कइकै प्रतिवेदन तैयार करय के चाहीं ।	समुदाय, स्कूल व्यवस्थापन समिति, शिक्षक-अभिभावक संघ, शिक्षक, अभिभावक, विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, राज्य कै बहुभाषीक शिक्षा नीति, मंत्रालय, विभाग, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, शैक्षिक जनशक्ति विकास केन्द्र, भाषा विज्ञान समाज, स्कूल समाज औ विद्यार्थिन का करय के चाहीं ।
औपचारिक औ अनौपचारिक दूनव शिक्षा के खातिर केंद्रीय औ क्षेत्रीय का अलग अलग पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक निर्देशिका औ हरेक भाषा में संदर्भ/सहायक पुस्तक तैयार करय के चाहीं ।	पाठ्यक्रम कै खाका बनावय के, (राष्ट्रिय उद्देश्य, सिखाई उद्देश्य, मूल्यांकन) पूर्वपरीक्षण, नमूना अध्ययन औ तालीम, पुनरावलोकन, तैयारी सामग्री/पाठ्यपुस्तक, नीचे से राष्ट्रिय स्तर तक हरेक तह मे क्षमता विकास कार्यक्रम जइसन काम सब करय के चाहीं ।	समुदाय, स्कूल व्यवस्थापन समिति, शिक्षक-अभिभावक संघ, शिक्षक अभिभावक, विशेषज्ञ, शिक्षाविद् राज्य कै बहुभाषी शिक्षा नीति मंत्रालय,

समुदाय कै सहयोग लेवय के		
आधारभूत सूचना (जनसंख्या, सांस्कृतिक मूल्य, आर्थिक स्तर, राज(नीतिक औ सामाजिक मूल्य) संकलन करय के चाहीं ।	समुदाय कै अगुवा लोग का परिचालन करय मे उपलब्ध सूचना औ तकनीकी कै उपयोग करय के चाहीं ।	विभाग, पाठ्यक्रत्रम विकास केन्द्र, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, शैक्षिक जनशक्ति विकास केन्द्र, भाषा विज्ञान समाज, स्कूल समाज औ विद्यार्थिन का करय के चाहीं ।
हरेक तह में लैंगिक समानता बढावय के चाहीं ।	भ्रमण करय कै नीति बनावय के चाहीं ।	समुदाय पर आधारित संगठन, स्थानीय गैरसरकारी संस्था, धार्मिक समूह, शिक्षक अभिभावक संघ, स्कूल व्यवस्थापन समिति औ नेता लोग का करय के चाहीं ।
साझेदार कै परिचालन कइके औ अभिभावक औ साझेदार के जानकारी दइकै जनचेतना बढावय के चाहीं ।	स्कूल व्यवस्थापन समिति/शिक्षक अभिभावक संघ का तालीम देवय के चाहीं ।	समुदाय पर आधारित संगठन, स्थानीय गैरसरकारी संस्था, धार्मिक समूह, शिक्षक अभिभावक संघ, स्कूल व्यवस्थापन समिति औ नेता लोग का करय के चाहीं ।
प्रारंभिक अनुसंधान करय के		
वैधानिक बनावय के चाहीं/सरकार औ राजनीतिक दल सब कै स्वीकृति लेवय के चाहीं ।	सरकार के ओर से नेपाल बहुभाषी शिक्षा कार्यदल/प्रबंध समिति बनावा जाय के चाहीं ।	समूचे भाषिक समूह कै प्रतिनिधि विशेषज्ञ औ साझेदार लोगन का करय के चाहीं ।
राष्ट्रीय स्तर पर भाषिक सर्वेक्षण करय के चाहीं ।	श्रोत वितरण करय के चाहीं ।	हरेक समूह का करय के चाहीं ।
शैक्षिक व्यवस्थापन सूचना प्रणाली औ समुदाय - शैक्षिक व्यवस्थापन सूचना प्रणाली बनावय के औ शिक्षक सर्वेक्षण करय के चाहीं ।	दातृसंस्था, एसआईएल औ नागरिक समाज कै निरंतर पक्षपोषण, समर्थन औ सहकार्य करय के चाहीं ।	हरेक साझेदार औ विशेषज्ञन के सहकार्य मे शिक्षा मन्त्रालय, शिक्षा विभाग, जिल्ला शिक्षा कार्यालय औ राष्ट्रय औ अन्तराष्ट्रीय गैरसरकारी संस्थन काँ करय के चाहीं ।
मानवीय, आर्थिक औ भौतिक श्रोत कै पहिचान करय के चाहीं ।	सहभागितामूलक विधि से करय के चाहीं ।	समुदाय का करय के चाहीं ।

यही किसिम से नेपाल मे सङ्क्रमणीय बहुभाषिक शिक्षा नीति के सम्बन्ध मे प्रा.डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव यहि किसिम कै सुझाव दिहे है :

क्र.सं.	योजना	क्रियाकलाप	कैफियत
१.	बहुभाषी शिक्षा संबधी तथ्यांक तैयार करय के	१. शिक्षा विभाग औ आउर संबधित संस्थन के सहयोग मे मातृभाषी स्कूल निर्धारण करय के २. जीआइएस डेटाबेस कै सर्वेक्षण	बहुभाषी शिक्षा कै डेटाबेस के किसिम से जीआइएस डेटाबेस मे राखय मे जवन जनसंख्या वितरण औ पठन पाठन कै नीति के खातिर महत्वपूर्ण है ? यह संवंध मे सुझाव दिहा जाई तो हमरे आभारी रहा जाई।
२.	बहुभाषी शिक्षा के खातिर मातृभाषा कै चयन करय के	१. भाषिक समुदाय, अभिभावक लोग लरिके, औ शिक्षक सहित आउर सरोकारवाला लोगन के खातिर जागरुकता बढाइब । २. सहयोगी सामग्री जइसै बहुभाषी शिक्षा विस्तार के खातिर तरफदारी सामग्री औ पहिला भाषा पहिले जइसन सामग्रिन कै अनुवाद औ अनुकूलन करब ।	
३.	बहुभाषी शिक्षा के खातिर राष्ट्रिय कार्यक्रम कै ढाँचा तैयार करब	१. नीचे के क्रम कै अनुशरण किहा जाय मातृभाषा > (प्रान्तीय भाषा)> (केंद्रीय भाषा)> अंतराष्ट्रिय भाषा	विज्ञान प्रविधि औ विश्वव्यापीकरण औ संचार के खातिर उच्च शिक्षा, कार्यालय कै लेनदेन औ अंतराष्ट्रीय भाषा में (स्पष्ट रुप मे अंग्रेजी औपनिवेशिक दान जइसय है ।) बृहत संचार कै दक्षता हासिल करयके खातिर मातृभाषा के अलावा आउर भाषा के शुरुवात में देरी होब ठीक है ।
४.	मातृभाषा का मा(ध्यम भाषा के रुप मे स्थापना करब	१. लरिकन के सुरुवाती विकास से मातृभाषा का माध्यम के रुप में स्थापना कइकै औ बाद में क्रमश: व्यापक संचार के भाषा मे औ अंतराष्ट्रीय भाषा में	
५.	मातृभाषा का विषय के रुप में स्थापना करब	१. येका के बहुभाषी शिक्षा के बाद में शुरु किहा जाय ।	
६.	बहिर लरिकन के खातिर सांकेतिक भाषा कै स्थापना	१. नेपाली सांकेतिक भाषा कै आधारभूत अध्ययन किहा जाय । २. सांकेतिक भाषा के माध्यम से पढावय के खातिर उचित नीति औ योजना बनावा जाय ।	

७.	भाषा पुनर्जीवन कार्यक्रम कै स्थापना करब	१. यह कार्यक्रम का वहि लरिकन के खातिर स्थापना करय परी जवन भाषिक बदलाव के कारण आपन मातृभाषा नाही सिखि पाये है । जइसै बराम औ नेपाल के आउर अल्पसंख्यक भाषिक समुदायन कै लरिके बिटियय लोग ।	टिप्पणी : १. कुछ अवस्था में लोगन का अपने पैतृक भाषा मे पर्याप्त या नगण्य दक्षता होई । २. यकरे बावजुद ऊ लोग आपन मातृभाषा बूझत है । ३. मातृभाषा का यहि किसिम से पुन: परिभाषित करय के परत है कि मातृभाषा खाली पहिला भाषा ना होइकै यी पैतृक भाषा होय जवन ऊ लोग नाही बुझत हैं ।
८.	शिक्षण सामग्री तैयार करब	१. स्थानीयवासिन के साथय बातचीत कइकै स्थानीय रीतिरिवाज चालचलन कै विवरण तैयार करब । २. स्थानीय संस्कृति का प्रतिबिंबित कइके शैक्षिक सामग्री कै विकास करब । ३. लोककथा, कविता, गीत आदि कै प्रयोग कइके सहायक पाठ्यसामग्री कै विकास करब ।	
९.	शिक्षक	१. सम्बन्धित भाषिक समुदाय कै मातृभाषा /सांकेतिक भाषा कै शिक्षक नियुक्त करब । २. वहि लोगन के खातिर उचित तालिम कै व्यवस्था करब । ३. स्थानीय भाषिक समुदाय के सदस्यन का पूर्णकालीन या आंशिक शिक्षक के रुप में सहभागी कराइब ।	
१०.	मूल्यांकन	१. निर्माणत्मक मूल्यांकन करब । २. लेख्य परंपरा में मातृभाषा के खातिर लिखित परीक्षा संचालन करब औ मातृभाषा में कथ्य परंपरा के खातिर मौखिक परीक्षा औ तिउ तिउहार कै जानकारी के माध्यम से मूल्यांकन करब । ३. विद्यमान कानूनी प्रावधान कै तदअनुसार अनुकूलन करब ।	

११.	संयुक्त व्यवस्थापन निर्माण	१. सरोकारवाला लोगन के बीचे संयुक्त साझेदारी औ प्रभुत्व स्थापन करब जइसै कि स्कूल व्यवस्थापन समिति, अभिभावक शिक्षक संघ, मातृभाषी शिक्षक संघ ।	
१२.	निरीक्षण औ सहयोग प्रणाली निर्माण	१. येकर संयुक्त प्रभुत्व औ स्थानीय क्षमता कै उपस्थिति के साथेन विचार करब । २. बहुभाषी शिक्षा केंद्र के साथेन स्थानीय स्तर पर श्रोत केंद्र कै स्थापना करब जइसै कि शिक्षा विभाग में उच्च निकाय है । ३. मातृभाषी स्कूल सीमा निर्धारणद्वारा स्थापित मातृभाषी स्कूल के समूह कै उचित स्थान पर स्थानीय श्रोत केंद्र कै स्थापना करब । ४. बहुभाषी शिक्षा के शैक्षणिक औ व्यावहारिक पक्ष का जोड़य के खातिर बहुभाषी शिक्षा कै सिद्धांत औ भाषा विज्ञान केंद्रय विभाग औ शिक्षाशास्त्र केंद्रीय विभाग, त्रि.वि. औ आउर विश्वविद्यालयन मे होय वाले अभ्यासन के बीचे संबंध स्थापन करब । ५. गैरसरकारी संस्था औ अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्था (जइसै युनेस्को/युनिसेफ आदि) से सहयोग कै आशा करब	
१३.	आर्थिक श्रोत के खोजी	१. सरकारी, गैरसरकारी/अंतराष्ट्रीय गैरसरकारी संस्था औ स्थानीय समुदाय से आर्थिक श्रोत कै खोजी करब ।	स्थानीय समुदाय का नेतृत्व कै भूमिका निर्वाह करय के परी । जइसै: बहुभाषी शिक्षा वही लोगन के इच्छानुसार चलत है ।
१४.	स्रोत केंद्र कै स्थापना करब	१. बहुभाषी शिक्षा के विधान के संचालन के खातिर केंद्रीय औ स्थानीय बहुभाषी शिक्षा श्रोत केंद्र कै स्थापना करय के परी । वही किसिम से बहुभाषी शिक्षा के योजनन कै प्रभावकारी कार्यान्वयन के खातिर अतिरिक्त श्रोत साधन कै परिचालन करय के परी ।	यी बहुभाषी शिक्षा योजना में संस्थागत आधार पर कार्यान्वयन करय में एकरुपता लावय कै इच्छा रहत है ।

भारत कै उदाहरण

बहुभाषी शिक्षा करतीन पर राष्ट्रिय तहपर जनचेतना बढावयके खातिर जनचेतना वृद्धि कार्यक्रम[13]

सन् २००५ मे भारत के मैसूर मे आदिवासी शिक्षा का केन्द्रविन्दु मा राखि के बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै आयोजना किहा गय रहा । तीन दिन कै यी कार्यशाला युनेस्को, युनिसेफ, शिक्षा तालिम अनुसंधान परिषद औ भारतीय भाषा संस्थान के द्वारा आयोजित रहा ।

कार्यशाला कै उद्देश्य अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कै सदस्य, शिक्षा के क्षेत्र मे काम करयवाले लोग, विद्वान औ नीति निर्माता लोगन का छलफल के खातिर एक जगही लाइकै यहि विषय पर बिचार विमर्श कराइब रहा । कार्यशाला मे भाषिक समुदाय कै जरुरत के अनुसार कै औ विद्यार्थी कै भाषा औ संस्कृति का सबल बनावय वाला शिक्षा कार्यक्रम के योजना के बारे मे छलफल करय कै रहा । छलफल के क्रम मे सहभागी लोगन के बीचे एक आपस मे अनुभव औ ज्ञान कै साटफेर करय कै मवक्का मिलय कै अपेक्षा आयोजक लोग किहे रहें ।

भारत मे प्रान्त तह पर नीति बनावा जात है । यह नाते यहि कार्यशाला कै मुख्य मनसाय वही तह के सरकारी अधिकारिन के बीचे चेतना बढाइब रहा । अल्पसङ्ख्यक भाषाभाषी लोग, बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम मे सहयोग करयवाले गैरसरकारी संस्थन कै सदस्य औ राष्ट्रिय स्तर कै कइउ विद्वान औ सरकारिउ अधिकारिन का नेवता दिहा गा रहा । समुदाय मे काम करय वाले लोग, विद्वान औ नीति निर्माता लोगन के बीचे सन्तुलन कायम करब येकर लक्ष्य रहा ।

कार्यशाला के अन्त मे सहभागी लोग भारत मे मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम खातिर अति आवश्यक चारसूत्रीय कडी कै पहिचान किहिन :

- लेखन पद्धति के विकास के काम कै शुरुवात के साथय समुदाय कै सहभागिता होय के चाहीं ।
- पाठ्यक्रम मे स्थानीय विषयवस्तु सामिल करय के परी ।
- वेटवन लरिकन के भाषिक समुदाय कै शिक्षक होय के परी ।
- लरिकनय के घर के भाषा मे विभिन्न किसिम कै पाठ्य सामग्री बनाय कै देय के परी ।

लेखन पद्धति कै विकास : अबहिन तक न लिखा भाषा के खातिर लेखन पद्धति कै विकास करब जरुरी है । लेखन पद्धिति कै विकास मे भाषा कै महत्वपूर्ण अङ्ग के रुप मे वकरे उच्चारण कै प्रतिनिधित्व करय वाले लेख्य चिन्ह या अक्षर औ बर्णविन्यास कै नियम (पूरा आधा औ हलन्त लिखय कै नियम, बडा औ छोट अक्षर लिखय कै नियम, बिराम चिन्ह के प्रयोग कै नियम, विभिक्ति जोडि कै या छोडि के लिखय कै नियम आदि) आदि का चयन करय कै औ परिक्षण कै काम परत हैं । लेखन पद्धिति कै विकास कै दुइ ठउर लक्ष्य होत है १) लेखन पद्धति का भाषा का बोलय वाले मानत हैं औ वोकां यक्कय किसिम से प्रयोग करत है । औ २) सम्बन्धित सरकारी निकाय वहि लेखन पद्धिति का मानत हैं ।

१३. लेखक के अनुभव पर आधारित ।

लेखन पद्धति के विकास मे निम्न किसिम कै क्रियाकलाप समेटा रहत है :

१. **भाषा कै सर्बेक्षण :** भाषा के बारे में भाषा के वक्ता कै सङ्ख्या, बोली जायवाली भौगोलिक क्षेत्र, भाषिक भेद कै सङ्ख्या औ वन लोगन के बीच कै समानता औ भिन्नता कै स्थिति, अपने भाषा के प्रति मनइन कै धारणा औ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सूचना एकट्ठा किहा जाय ।

२. **भाषा कै विश्लेषण :** भाषा मे अक्षर या चिन्ह के द्वारा प्रतिनिधित्व किहा जाय वाले वर्ण, शब्द आदि के एकाइन कै पहिचान किहा जय ।

३. **परिक्षात्मक लेखन पद्धति :** एकठू लेखन पद्धति कै विकास कै कार्यशाला आयोजित किहा जाय । यह मा भाषाविद लोगन के सहयोग से मातृभाषा बोलय वाले लोग अपने भाषा का लिखय के खातिर अक्षर औ चिन्ह बनावत है औ एकठू कामचलाउ लेखन पद्धति कै विकास करत हैं ।

४. **परीक्षण :** विकसित किहा परीक्षात्मक लेखन पद्धति कै औपचारिक औ अनौपचारिक दूनव किसिम से परीक्षण किहा जाय । औपचारिक परीक्षण के क्रम मे भाषाभाषी लोग वहि काम चलाउ पद्धति मे लिखा भाषा का देखयँ औ वहमा देखान समस्या कै टिपोट करयँ । अनौपचारिक रुप मे परिक्षण करत के सकभर ढेर मनइन का वहि लेखन पद्धति कै प्रयोग करयँ औ वन लोगन से सुझाव लेय ।

५. **पुनरावलोकन :** मूल वा संशोधन किहा लेखन पद्धति मे समस्या देखाय परे वकरे बिकल्प मे प्रयोग किहा जाय सकय वाले अक्षर या चिन्ह कै पहिचान किहा जाय ।

६. **स्वीकृति :** दूसर लेखन पद्धति कै कार्यशाला आयोजित किहा जाय औ वहमा संशोधित लेखन पद्धति मातृभाषा बोलय वाले वक्ता लोगन के सामने स्वीकृति के खातिर पेश किहा जाय । सम्बन्धित सरकारी निकायव से स्वीकृति के खातिर अनुरोध किहा जाय ।

लेखन पद्धति कै विकास करत कै सबसे पहिले भाषा कै विश्लेषण करय के परत है । भाषा के विश्लेषण मे वर्ण, शब्द जइसन एकाइन कै पहिचान करय के खातिर पहिले से अलिखित रुप मे रहा भाषा मे अक्षर औ चिन्ह प्रयोग कइकै लिखा जायवाले एकाइन का अलगियावा जात है । कब्बव कब्बव समुदाय कै सदस्य लोग भाषा कै विश्लेषण बिना किहे बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम शुरु करय चाहत हैं । वन लोगन का यी लागि सकत है कि भाषा कै विस्तृत विश्लेषण करय कै समय नाही है । यकरे खातिर सबसे बढिया तरीका भाषाविद लोगन कै सहयोग लइकै मातृभाषा बोलय वाले अपने भाषा के लेखन पद्धति कै विकास कइ सकत हैं । यकरे बादव यी ध्यान देब जरुरी है कि जेतना जल्दी बर्णमाला बनावा जाय, वतनय सावधानी से येकर परिक्षणव करय के चाहीं । यकरे साथय जबतक मातृभाषा कै वक्ता औ सम्बन्धित सरकारी निकाय बर्णमाला कै स्वीकृति नाही देत हैं, तब तक महङ पाठ्यसामग्री न बनइबय उचित रही ।

पपुआ न्युगिनी कै उदाहरण

देर भाषन के खातिर लेखन पद्धति कै विकास

वर्णमाला निर्माण कार्यशाला अल्पसङ्ख्यक समुदाय काँ अपने भाषा के लेखन पद्धति (वर्णमाला) कै विकास करयमे मदत करत है । कार्यशालाा कै योजना मनई काँ आपन भाषा कइसय बोलय के चाहीं औ लिखय के चाहीं, यहि बाति कै बढिया ज्ञान होत है, यही आधार पर बनावा होत है ।

अइसन बर्णमाला निर्माण कार्यशाला एकठू भाषिक समूदाय के खातिर सामान्य रुप मे दस दिन तक चलत है । कार्यशाला मे बर्णमाला बनावय वाले विशेषज्ञन कै प्रेरणा औ सहयोग मे मातृभाषा कै वक्ता लोग कथा लिखत हैं औ सम्पादन करत हैं । अपने भाषा के ध्वनि कै विशेषता पहिचान करत है औ बर्णमाला, हिज्जे कै नियम औ संक्षिप्त शब्दकोष सम्मिलित एक परीक्षणात्मक हिज्जे निर्देशिका तयार करत हैं । कार्यशाला मे लिखा कथन कै अलगै किताब बनावा जात है औ बाद मे वहू काँ समुदाय महिया परिक्षात्मक बर्णमाला कै परिक्षण करय के खातिर प्रयोग किहा जात है । यहि क्रियाकलापन के माध्यम से सहभागी लोगन का अपने भाषा के संरचना औ वर्णमाला के विकास मे ध्यान देवय वाली बिषयन कै बढिया से जानकारी होत है :

वर्णमाला निर्माण कार्यशाला मे निम्नअनुसार के आधारभूत ढाँचा कै अनुसरण किहा जात है :

१. सहभागी लोग अपने भाषा मे पहिले कथा लिखत हैं औ बाद मे पढत है ।
२. लिखय औ पढय कै प्रक्रिया पूरा करय के बाद वन लोग वर्णमाला के समस्या कै पहिचान करत हैं ।
३. ऊ लोग वहि समस्यन के समाधान के विकल्पन पर बातचीत करत हैं ।
४. कवन कवन अक्षर या चिन्ह प्रयोग किहा जाय, यहि बारे मे निर्णय लेत हैं, औ
५. ऊ लोग अपने निर्णय कै परीक्षण करत हैं ।

निर्णय प्रक्रिया के क्रम मे जबतक जरुरत होत है, यी पाचव चरण दोहरावा जात है । यी क्रियाकलाप सहभागिन काँ अपने नवां वर्णमाला कै मूल्याङ्कन करय्क औ जरुरत अनुसार कै परिवर्तन करय्क उत्साहित करत है । यी प्रक्रिया वन लोगन का यिहव समझय के खातिर प्रेरित करत है कि ऊ लोगन कै लेखन पद्धति अचल या अपरिवर्तनीय नाही है, बलुक यी एक उपकरण होय, जवने का भाषिक समुदाय कै जरुरत अनुसार प्रयोग औ परिमार्जन किहा जाय सकत है ।

१४. इस्टोन, सी. २००६. (७-९ नवंबर) अल्फावेट डिजाइन वर्कशाप्स इन पपुआ न्यू गिनी : अ कम्युनिटी-बेस्ड अप्रोच टु आँर्थोग्राफी डिभेलप्मेंट इंटरनेशनल कन्फ्रेंस आँन लैंग्वेज डिभेलप्मेंट, लैंग्वेज रिभाइटलाइजेशन एण्ड मल्टिलिंगुअल एजुकेशन बैंकक । http://www.sil.org/asia/ldc/parallel/_papers/catherine_easton.pdf (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

१५. पपुआ न्यू गिनी में वर्णमाला निर्माण कार्यशाला एसआईएल इंटरनेशनल आयोजन किहा रहा । देखा जाय इस्टोन, सी. २००३ (७-९ नवंबर) अल्फाबेट डिजाइन वर्कशाँप्स इन पपुआ न्यू गिनी : अ कम्युनिटी-बेस्ड अप्रोच टु आँर्थोग्राफी डिभेलप्मेंट, इटरनेशनल कन्फ्रेंस आँन लैंग्वेज डिभेलप्मेंट, लैंग्वेज रिभाइटलाइजेशन एण्ड मल्टिलिंगुअल एजुकेशन, बैंकक । http://www.sil.org/aisa/ldc/parallel/_papers/catherine_easton.pdf (१७ नवंबर २००६ मे प्राप्त ।

पपुआ न्यु गिनी मे ८०० सौ से बेसी भाषा बोला जाला आ उहां कै कुल जनसङ्ख्या साठ लाख है । बर्णमाला निर्माण कार्यशाला उहां के ढेर जरुरत का पूरा किहे है । जब उहां कै राष्ट्रिय शिक्षा बिभाग सन् १९९० कै दशक मे बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम शुरु किहिस, तो ढेर भाषिक समुदाय कार्यक्रम मे प्रवेश करय खातिर लेखन पद्धति के विकास कै जरुरत महशुस किहिन । सन् १९९८ से लइके २००२ तक के बीचे मे ४७ ठउर वर्णमाला निर्माण कार्यशाला कै आयोजना किहा गय, जेह मा १०० से ढेर भाषिक समुदाय कै लोग परिक्षणात्मक वर्णमाला तयार किहिन ।

बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै पाठ्यक्रम निर्माण : कम से कम ६ बरिस तक मातृभाषा काँ पढाई के माध्यम के रुप मे प्रयोग करयवाला कार्यक्रम मातृभाषा पर आधारित एक सबल बहुभषिक शिक्षा कार्यक्रम होय । यहि कार्यक्रम के तहत विद्यार्थी लोगन का तीन ठउर सामान्य सिखाई उपलब्धी हासिल करय कै अपेक्षा किहा जात है :

१. वन लोगन काँ मूल विषयन मे कक्षा अनुसार कै शैक्षिक अवधारणा समझय औ प्रयोग करय कै सामर्थ्य हासिल करय के चाहीं ।

२. वन लोगन का स्कूल कै कामकाजी भाषा के प्रयोग करय मे सामर्थ्य औ आत्मविश्वास के विकास करब शुरु करय के चाहीं ।

३. वन लोगन काँ अपने लिखि कै औ बोलि के सिखय के साथय आउर काम करय्क क्षमता औ आत्मविश्वास विकास कइ लेय के चाहीं । बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै विषयवस्तु उहय होय के चाहीं, जवन मूल पाठ्यक्रम मे हैं ।

ये से प्राथमिक स्कूल पूरा करय के बादव या पहिले भाषा मे शिक्षा के खातिर सहयोग बन्द भयेव पर विद्यार्थी लोग आसानी से मूल धार के कक्षा में समाहित होइ सकयँ के चाही । (बकिर यी ध्यान राखय के चाहीं कि पहिला भाषा के प्रयोग कां जल्दी न हटावा जाय ।) बहुभाषिक शिक्षा पाठ्यक्रम मे 'भाषा विकास' काँ विशेष प्राथमिकता के साथ सामिल करय के चाहीं (उप्पर के सूत्र २ औ ३ का देखा जाय ।) । शिक्षक लोगन का विद्यार्थिन के घर कै भाषा औ कामकाजी भाषा दूनव में सुनाई, बोलाई, पढाई औ लिखाई मे सामर्थ्य औ आत्मविश्वास बनावय मे मदत करय वाला उचित रणनीति अपनावय के चाहीं ।

बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै पाठ्यक्रम बनावय खातिर कुछ चरणवद्ध सुझाव नीचे दिहा है :

१. पहिले, मूलधार के पाठ्यक्रम मे हरेक विषय मे दिहा सिखाई क्षमता का सूचीकृत करय के चाहीं । याद राखा जाय कि यी स्कूल के कामकाजी भाषा का अपने मातृभाषा के रुप मे बोलय वाले विद्यार्थिनवका क्षमता हासिल करय खातिर लिखा गा रहा ।

२. हरेक विषय मे अइसने क्षमतन कै अध्ययन किहा जाय औ विद्यार्थिन के सिखय वाले जरुरी धारणा गणित, विज्ञान, सामाजिक शिक्षा, स्वास्थ्य औ आउर विषयन के क्षेत्र मे खाली 'खास भाषय' मे सिमित नाही है, ताकि यी धारणा हरेक भाषा मे लिखा जाय सकय । बहुभाषिक शिक्षा यहि जरुरी धारणन पर केन्द्रित औ मूलधार मे न आय पावय वाले भाषा औ संस्कृति मे आवा विद्यार्थिनव खातिर पर्याप्त रुप कै बहुभषिक शिक्षा सामर्थ्य विकास करी ।

३. वकरे बाद, बहुभाषिक शिक्षा केन्द्रित लरिकन के घर कै भाषा औ कामकाजी भाषा दूनव मे भाषा शिक्षा सिखाई कै विकास किहा जाय । (भाषा विकास कै विभिन्न चरण उप्पर दिहा है ।) यी सुनिश्चित किहा जाय कि अइसन सिखाई दैनिक बातचीत औ शैक्षिक विषयन के पढाई खातिर दूनव भाषा केन्द्रबिन्दु मे है ।

- बातचीत के खातिर प्रयोग होयवाली भाषा प्रयोग से जुडा सिखाई, नवां भाषा मे शैक्षिक शब्द भण्डार बनावय पर केन्द्रित होत है । जइसय : गुणा औ भाग के खातिर गणितीय शब्द औ जमाव या प्रकाश संश्लेषण खातिर वैज्ञानिक शब्द) । अइसन शब्द अमूर्त होत हैं औ सीमान्तकृत भाषाभाषी विद्यार्थी का सिखब, याद करब औ प्रयोग करब बहुत कठिन होत है । यही नाते यी सबके सम्बन्ध मे ऊ लोगन के खातिर विशेष शिक्षण रणनीति कै जरुरत परत है ।

४. सिखाई क्रियाकलाप के खातिर सुझाव दिहा किहा जाय ताकि बहुभाषिक शिक्षा कै शिक्षक लोग हरेक तरह कै सिखाइ क्षमता हासिल करय में विद्यार्थिन का मदत कइ सकयँ । पाठ्यक्रम के साथय भाषा सिखावय के खातिर शिक्षक का इन्टरनेट या आउर स्रोत सामग्रिन कै जरुरत परि सकत है ।

५. हरेक पाठ में स्थानीय विषयवस्तु काँ समावेश करय के खातिर शिक्षक लोगन काँ आसानी होय के हिसाब से कुछ खाका सहित कै शिक्षक निर्देशिका तयार किहा जाय । उदाहरण के रुप मे स्वास्थ्य के पाठ मे स्थानीय जनता के बारे मे घर के भाषा मे लिखा स्वास्थ्य से सम्बन्धित कथा कै शीर्षक होइ सकत है ।) मूलधार कै पाठ्यपुस्तक प्रयोग करय में विद्यार्थिन का क्षमता हासिल होय के बादव शिक्षक लोगन कां पाठ से सम्बन्धित स्थानीय विषय वस्तु का थपि कै पढाइब जारी राखय के चाहीं । येसे विद्यार्थी लोगन खातिर अपने अनुभव पर आधारित दूनव भाषा मे ज्ञान आर्जन करय्क जारी राखय मे आसानी होई ।

थाइलैण्ड कै उदाहरण

प्राथमिक स्कूल में भाषा पुनर्जीवन कार्यक्रम खातिर बहुभाषी शिक्षा केन्द्रित शिक्षण सामग्री निर्माण

थाइलैण्ड कै छन्ताबुरी प्रान्त कै छोङ भाषिक समुदाय कै सदस्य वनके लरिकन बिटियन का आपन भाषा औ संस्कृति भुलात जाव देखिकै चिन्तित रहें। ऊ लोग नियमित थाई भाषा कै प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम मे छोङ भाषा के खातिर अलगय समय मिलावय चाहत रहें। यकरे खातिर समुदाय कै अगुवा लोग विद्यालय के नियमित पाठ्यक्रमय मे 'स्थानीय अध्ययन' कक्षा प्रयोग करय खातिर शिक्षा अधिकारी से अुनमती माङ्इन औ ऊ लोग अपने भाषा औ संस्कृति का सिखावय खातिर अनुमती पाइन।

समुदाय कै सदस्य लोग छोङ भाषा औ संस्कृति कै कक्षा के खातिर पाठ्यक्रम बनावय लागें। वन लोग मौखिक भाषा पाठ के खातिर बिषयसूची बनाइन, हरेक के खातिर शिक्षण सामग्री औ पाठ्यसामग्री तयार किहिन औ शिक्षक के रुप मे स्वयंसेवक शिक्षक का पढाइन। छोङ कार्यक्रम के खातिर बना पाठ्यक्रम कै दुई उद्देश्य रहा: घरेलु बातावरण मे छोङ लरिक का वनकै भाषा बूझय, बोलय औ पढय लिखय का सिखय मे मदत करब, औ अपने भाषा कै सम्मान करय के साथय अपने सांस्कृतिक धरोहर का पुनर्जिवित करय खारित सामिल होय मे अपने का गौरवान्वित मानय मे लोगन का मदत करब।

छोङ भाषा बूढ पुरनिया लोग कै एक समूह छोङ भाषा सिखाइ क्रियाकलाप में प्रयोग करय खातिर आधारभूत शब्दावली बनाइस। बूढ पुरनिया लोगन के एक दूसर समूह छोङ संस्कृति औ मौखिक इतिहास पर आधातिर कथा लिखिस। यहि सामग्री से छोङ पाठ्य पुस्तक कै श्रङ्खला तयार किहा गय। अभिभावक लोगन कै तिसरा समूह सत्ताइस ठउर बडा किताब लिखिस। यी बडा किताब शिक्षक लोगन का कुल विद्यार्थिन के साथय पढय वाला 'समूह पठन' क्रियाकलाप के खातिर लिखा गा रहा। माध्यमिक विद्यालय कै छोङ विद्यार्थी लोग वहि बडे किताबिन के खातिर चित्र बनाइन। बूढ पुरनिया छोङ वक्ता लोग लरिकन बिटियन का कक्षा मे सिखय खातिर परम्परागत गीतव लिखिन। पहिलेन से थाइभाषा लिखय पढय कै जानय वाले छोङ लरिकन बिटियन का आपन पैतृक भाषा सिखय खातिर पुल्ह के रूप मे एकठू स्थान्तरण पुस्तक तयार किहा गय।

यहि अनुभव से बहुभषिक शिक्षा कार्यक्रम के खातिर पाठ्यक्रम विकास करय में अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कै सदस्य लोग सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत होंय, यहि बाति कै पुष्टि किहे है।

---

१६. मेलोन, डी. आ सुविलाई, पी. २००५ लैंग्वेज डिभेलप्मेंट एण्ड लैंग्वेज रिभाइटलाइजेशन इन एशिया। मोन ख्मेर स्टडिज, भाँलुम ३५, पृ. १०१-१२०

१७. यह कार्यक्रम में आउर विषय पढावै खातिर लरिकन बिटियन का पहिले भाषा कै प्रयोग शामिल नाही रहा।

तहगत पाठ्यसामग्री निर्माण : पढाई साइकिल चलइबय जेस होय, खाली एकबाजी हमरे सिखि लिहा जाय बस । अपने भाषा मे एकबाजी पढाइ सिखय के बाद विद्यार्थी आपने ज्ञान का नवां भाषा मे आराम से बदलि सकत है । यिहां तक कि नवां भाषा कै लिपि अलग होय के बाबजूद समस्या नाही होत । विद्यार्थी का अपने भाषा औ कामकाजी भाषा दूनव मे धारा प्रवाह रुप से पढय मे मदत करयके खातिर सबसे महत्वपूर्ण बाति वहि दूनव भाषा मे विविध किसिम कै पाठ्यसामग्री उपलब्ध होत होय ।

विद्यार्थिन का महङ पाठ्यसामग्री नाही चाहीं । यी बाति अधिकतर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम कै अनुभव देखावत हैं । खास कइके कार्यक्रम कै शुरुवाती चरण मे कडा कागज कै जिल्द औ एक रङ्ग मे चीन्हा खीचि कै साफ सुथरा रुप तरिका से छपा किताबव भये काम चलि जाई । यहि शैक्षिक सामाग्रिन कै विशेषता कुछ यहि किसिम से हैं । १) विषय वस्तु रोचक होय के चाहीं । २) भाषा स्पष्ट औ बूझय लायक होय के चाहीं औ ३) उदाहरण पाठ से सम्बन्धित औ स्थानीय परिवेश के अनुकूल होय के चाहीं ।

© एम एल ई नेपाल

यइसनहा सामग्री बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम का फाइदा पहुचावत है । यी सब जनता कै इतिहास औ कथा आदि लिपिवद्ध करत हैं । साथय मुलुक के विभिन्न भाषा मे साहित्य कै विकास कइके राष्ट्रिय सम्पदा काँ आउर धनी बनावत हैं ।

चीन कै उदाहरण

तहगत पाठ्यसामग्री निर्माण[१८]

चीन के गूइझौ प्रान्त के ग्रामीण हिमाली भूभाग मे काम[१९] भाषा बोलय वाले १६ लाख मनई रहत हैं। सन् २००० मे काम समुदाय कै अगुवा लोग अपने क्षेत्र मे द्विभाषी शिक्षा कै पाइलट परियोजना शुरु किहिन। परियोजना मे कक्षा १ मे मौखिक चीनिया भाषा मे पढावय से पहिले ५-६ वर्ष उमिर के लरिकन काँ पूर्व विद्यालय मे राखा जात है। वहि शुरु मे दुई बरिस तक बच्चन का खाली काम भाषा मे पढावा जात है।

बढिया से पढय कै सिखय के खातिर लरिकन का अधिकतर विभिन्न बिषय कै रोचक पाठ पढय के पावय्क चाहीं। यी जवने भाषा मे लिखित साहित्य थोरय हैं, या लिखित साहित्य हइयय नाही हैं, यइसनहे अल्पसङ्ख्यक भाषन के खातिर चुनौती बनि जात है। काम परियोजना कै अगुवा लोग यहि परियोजना के खातिर जरुरी पाठ्यसामग्री बनावय कै काम तुरन्त शुरु करय औ कडा मिहनेत कै जरुरत महशूस किहिन। पाठ्यसामग्री बनावय के खातिर लेखक लोगन कै कार्यशाला शुरु भय। अन्त मे काम सांस्कृतिक पत्तरा औ सांस्कृतिक विषयवस्तु कै सूची के आधार पर मातृभाषा कै लेखक लोग काम भाषा मे किताब तयार किहिन। वहमा १६० ठउर पढय मे सजिल कथन का पूर्व विद्यालय कै पहिले वर्ष के खातिर औ १६० कथा दुसरे वर्ष के खातिर बनावा गय। लरिकन का कक्षा १ से लइकय ६ तक पढत जाय के क्रम मे वन लोगन आउर ढेर कथा औ पाठ चाहीं, यी बाति काम भाषा शिक्षा मे काम करय वाले लोग पता पाइन। लरिके चीनिया लिखय औ पढय्क सिखत रहें, यी बनहू कै काम भाषा मे आपन क्षमता बढावय मे मदत किहिस। यही नाते काम भाषा के लेखक लोग हरेक सालि के खातिर ४०-४० ठउर कथा तयार किहिन। यहि कथा कै विषयवस्तु लरिकन से सम्बन्धित औ वनके खातिर रोचक रहें। यकरे बाहेक काम भाषा बोलयवाले लोग लरिकन काँ स्वतन्त्र रूप से पढय के खातिर आउर १२० पाठ्यक्रम इतर कथा तयार किहिन।

काम समुदाय के विद्यार्थिन का प्रशस्त पाठ्यसामग्री मिलय के नाते वन लोगन का अपने भाषा मे बढिया सिखाई उपलब्धि हासिल करय मे मदत पहुचा। साथय वन लोगन का चीनिया भाषा मे सिखाई पढाई औ लिखाई काँ अपने भाषा मे लावय मे आत्मविश्वास बढा। शुरुवाती अवलोकन से प्राथमिक विद्यालय के शुरु के तह में काम समुदाय कै विद्यार्थी लोग चीनिया पढाई औ लिखाई पहिले से बहुत अच्छा किहा बाति कै सङ्केत मिला है।

१८. जेरी, एन. आ पान, वाई. २००१ (१९-२१ सेप्टेंबर) एट हंड्रड स्टोरिक फाँर दोङ डिभेलप्मेंट : अ बाइलिंगुअल एजुकेशन पाइलट प्रोजेक्ट इन गुइझोउ प्रोभिंस, चाइना. छठा आँक्सफोर्ड इंटरनेशनल कन्फ्रेन्स आँन एजुकेशन एण्ड डिभेलप्मेंट आँक्सफोर्ड : यूनाइटेड किङडम।

१९. 'काम' कै उच्चारण 'गम' जइसय सुनात है आ यी जातिउ कै नाम होय चीन में रहयवाला आउर लोग यह समुदाय का 'दोङ' कहब पसन करत हैं।

बहुभाषिक शिक्षा के खातिर चयन औ तालीम : प्रेरक औ प्रतिष्ठित लोगन काँ जरुरी जनशक्ति के रुप मे चयन कइकै वहि लोगन के खातिर निर्धारित भूमिका के खातिर जरुरी ज्ञान, हुनर, सृजनशीलता औ प्रतिबद्धता कै संचार करयवाला बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम सबसे सफल माना जात है । यइसने जनशक्ति खातिर नीचे दिहा दूनव किसिम कै क्रियाकलाप करब जरुरी है :

ढेर भाषन के खातिर	एक भाषा के खातिर
- कार्यक्रम कै योजना औ सङ्योजन - पाठ्यक्रम निर्माण - शिक्षक सहित कार्यक्रम मे सामिल जन(शक्ति का प्रशिक्षण (प्रशिक्षक सहित) - हरेक भाषा कै सामग्री विकास औ उत(पादन के निरीक्षण - कक्षा कै निरीक्षण (अवलोकन)	- कार्यक्रम कै योजना औ सङ्योजन - कक्षा मे शिक्षण - पाठ्यसामग्री कै विकास - कार्यक्रम का सहयोग (वहुभाषिक शिक्षा सहयोग समिति निर्माण)

अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय मे विगत मे शिक्षा कै आभाव या बढिया शिक्षा न पावय के नाते पेशागत दक्षता वाले मातृभाषिक वक्ता लोगन कै सङ्ख्या बहुत कम होइ सकत है । यइसने अवस्था मे बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम काँ चलावत कै आवय वाले चुनौतीन मध्ये कै यी एक प्रमुख चुनौती होय । जइसय जइसय प्रभावकारी बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम लागू होई या होत चला जाई यह अवस्था मे सुधार होत जाई । परिवर्तन न आवय तक स्थानीय भाषा का बेरोकटोक बोलि पावय वाले, स्थानीय संस्कृति जाना सुना औ ओकर कदर करयवाले समाज मे सम्मानित मनई का शिक्षक बनाइब उचित होत है । प्रयोग करय्म सजिल सिखाई सामग्री, बढिया पूर्वसेवाकालीन औ सेवाकालीन तालिम औ सहयोगात्मक निरिक्षण (अवलोकन) पाये गैर व्यवसायिक शिक्षकव बढिया से पढाय सकत हैं । यी बाति विभिन्न मुलुक कै अनुभव बतावत है । यदि स्थानीय शिक्षक कामकाजी भाषा मे दक्ष नाही हैं तो शिक्षक तालिम के समय में एकठू भाषा सिखाई सम्बन्धी पाठयांशव का सामिल करय के चाहीं । एक प्रभावकारी अभ्यास के रुप मे पावा जाय वाला 'समूह शिक्षणव' कै उपयोग करय के चाहीं । यह मा स्थानीय समुदाय कै एक सहयोगी शिक्षक औ समुदाय के बहरे कै प्राथमिक विद्यालय कै नियमति शिक्षक एक साथ काम करयँ औ अपने अपने भाषा के कक्षा मे दूनव जने जिम्मेवार होय वाले हिसाब से काम किहा जात है ।

कम्बोडिया कै उदाहरण

शिक्षक कै चयन औ प्रशिक्षण[२०]

कम्बोडिया के रतनकिरी प्रान्त मे 'हाइल्याण्ड चिल्ड्रेन्स एजुकेसन परियोजना' चलत है। यहि परियोजना के उद्देश्य शिक्षा औ आउर आधारभूत सरकारी सेवा मे नाव मात्र कै पहुच पावय वाले अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदायन के बीचे ग्रामीण स्कूल स्थापना करब होय। प्रणालीगत हिसाबय से ढेर समय से शिक्षक कै कमी, स्कूल मे अनियमित उपस्थिति औ संस्कृति अनुसार कै पढय पढावय वाले सामाग्रिन कै कमी होय के नाते यहि दुर्गम पहाडी क्षेत्र मे शिक्षा पहुचाइब बहुत चुनौतीपूर्ण है। अपने स्कूल कै ब्यवस्थापन औ शिक्षक चयन करय कै जिम्मेवारी ग्रामीण स्कूल समितियय कै है। शिक्षक लोग स्थानीय भाषा के साथय कामकाजिऊ भाषा 'ख्मेर' बोलत हैं। शिक्षक लोग लरिकनय के समुदाय कै होय के नाते ऊ लोग लरिकन बिटियन के ज्ञान औ हुनर औ अनुभव का बूझत हैं। जइसन कि उपरय कहा है, चुनौती यी है कि विगत मे शिक्षा मे सीमित पहुच होय के नाते ग्रामीण विद्यालय मे पढावय के खातिर चुना लोगन मध्ये केहू प्राथमिकव स्कूल तक कै शिक्षा नाही पूरा किहे हैं। यी परियोजना यइसने लोगन के खातिर दुर्गम द्विभाषिक औ द्विसांस्कृतिक परिवेश कै शिक्षक बनावय के खातिर शिक्षक तालिम पाठ्यक्रम तयार किहे है। पाठ्यक्रम कै लक्ष्य निम्नलिखित क्रियाकलाप का कइकै अल्पसङ्ख्यक समूह मे आवा सहभागिन का संस्कृति अनुकूल के शिक्षक कै तालीम देब होय :

- सहभागी लोगन काँ अपने प्राज्ञिक ज्ञान कै विकास औ विस्तार करय मे सक्षम बनावा जाय।
- वन लोगन काँ शिक्षणविधि के ज्ञान औ हुनर से सुसज्जित बनावा जाय।
- ऊ लोगन का अपनेव का निरन्तर रुप से सुधार करय मे लागि परयवाला औ पारस्परिक कक्षा अभ्यासकर्ता बनय खातिर तयार करब।
- ऊ लोगन का सहभागिता मूलक सङ्गठन औ विद्यालय शिक्षा के माध्यम से सामुदायिक विकास मे योगदान पहुचावय खातिर स्रोत सम्पन्न बनाइब।
- समुदाय मे ऊ लोगन कै सामाजिक स्तर बढावय मे सहयोग करब।
- शिक्षा में आदिवासी दृष्टिकोण विकास करय में सहयोग करब। शिक्षक तालिम 'सिखाई चक्र' मे चलत है। यह में प्रशिक्षार्थी लोग तुरन्त अभ्यास औ मूल्याङ्कन करयवाले सघन प्रशिक्षण चक्र मे सहभागी होत हैं। यी खास कइके शिक्षा क्षेत्र मे काम करयवाले लोगन के द्वारा प्रभावकारी सिखाई का प्रोत्साहन औ सबल अभ्यास कै विकास के खातिर एक रणनीति के रुप मे पहिचाना 'कार्यमूलक अनुसंधान' अभियान होय।

२०. मिडलबार्ग, जें २००५ हाइलैंड चिल्ड्रेंस एजुकेशन प्रोजेक्ट : गुड लेशंस लर्ण्ड ई बेसि एजुकेशन बैंकक : युनेस्को।

कार्यक्रम कै अभिलेख औ मुल्याङ्कन : बढिया बहुभाषिक कार्यक्रमन में मूल्याङ्कन औ अभिलेखन, योजना के चरण से शुरु होत है औ कार्यक्रम अवधि तक चलत रहत है । कार्यक्रम कै अभिलेखन औ मूल्याङ्कन करयवाले बिषय औ यहि प्रक्रिया का मदत पहुचावय खातिर पूछा जाय वाले सवाल यहि किसिम से है :

पाठ्यक्रम/शिक्षण विधि : सिखाई कै उपलब्धी स्पष्ट है ? शिक्षक लोगन का शिक्षण विधि सजिल लाग है ? पाठ कै विषयवस्तु स्थानीय संस्कृति अनुकुल है ? पाठ्यक्रम मे कइसय सुधार कइ सका जात है ?

शिक्षक औ आउर जनशक्ति : शिक्षक निर्देशिका कै योजना के अनुसार चलत हैं ? निरिक्षक औ प्रशिक्षक लोग स्थानीय शिक्षक सहित के जनशक्ति का प्रोत्साहन औ सहयोग करत हैं ? कवने किसिम से कार्यक्रम के जनशक्ति का काम पूरा करय के खातिर समूचे तह में क्षमता, आत्मविश्वास औ सिर्जनशीलता हासिल करय मे मदत किहा जाय सकत है ?

तालिम : शिक्षक तालिम कार्यशाला मे सहभागी भवा शिक्षक का शिक्षण विधि बूझे हैं ? लेखन कार्यशाला मे सहभागी लेखक लोग अपने लोगन के खातिर मातृभाषा मे सामग्री बनावय, चित्र राखय, सम्पादन करय औ मूल्याङ्कन करय कै काम कइ सकत हैं ? तालिम का कइसै सुधारा जाय सकत है ?

सामग्री : गैर पेशेवर शिक्षक लोगन के खातिर बना सिखाई सामग्री स्पष्ट औ प्रयोग करय मे आसान हैं ? मातृभाषा कै वक्तालोग पाठ्य सामग्री का उचित मानत हैं ? का विद्यार्थी लोग वहि सबका पढि सकत हैं ? पढत के वन लोगन का बढिया लागत है ? पाठ्य सामग्री कै उत्पादन प्रणाली जइसन होय के चाहीं, वइसन है ? बितरण प्रणाली प्रभावकारी औ विश्वसनीय है ? कवनो कवनो पक्ष मे सुधार कै जरुरत है ?

विद्यार्थी कै प्रगति : विद्यार्थी लोग अपने स्तर अुनसार कै निर्धारित सिखाई कै परिणाम हासिल होत देखि सकत हैं ? एक तह से दुसरे तह तक ऊ लोग सफलता पूर्वक प्रगति करत है ? विद्यार्थी औ अभिभावक लोग वन लोगन के प्रगति से संतुष्ट हैं ? विद्यार्थी लोगन का आउर सफल बनावय के खातिर का कइ सका जात है ?

कार्यक्रम कै विस्तार औ गुणस्तर : योजना अनुसार के कार्यक्रम कै विस्तार होत है ? भाषिक समुदाय कै सदस्यन के साथय कार्यक्रम के खातिर जिम्मेवार लोग कार्यक्रम के विस्तार के तरिका से संतुष्ट है ? कार्यक्रम कै विस्तार के साथय साथ येकर गुणस्तर कायम राखय के खातिर का कइ सका जात है ?

लागत प्रभावकारिता : मिला फायदा का देखत के कार्यक्रम कै लागत सार्थक है कहिकै साझेदार लोग सन्तुष्ट हैं ? यदि कार्यक्रम नवां हैं तो कार्यक्रम के गुणस्तर से बिना सम्झौता किहे यकरे लागत के हिसाब से आउर प्रभावकारी बनावय कै उपाय है ?

कार्यक्रम कै दीर्घकालीन असर : अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय औ वृहत समाज मे कार्यक्रम कवने कवने किसिम से अपेक्षित औ अनपेक्षित बदलाव लाये है ?

बढिया मूल्याङ्कन उपकरण, परिणाम कै अभिलेखन औ जरुरत के अनुसार के परिमार्जन के खातिर सूचना के प्रयोग से यी सुनिश्चित होइ जात है कि यी कार्यक्रम यकरे खातिर जिम्मेवारी लेय वालें औ लगानी करय वाले लोगन कै अपेक्षा का पूरा करी ? बहुत महत्व के साथ यी अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कै लक्ष्य औ अपैक्षा पूरा करय कै विश्वास देवावत है । यकरे अलावा, चालू कार्यक्रम कै सफल औ कमजोर पक्षन के अभिलेख से नवा कार्यक्रम कै योजना बनावय वाले लोगन का महत्त्वपूर्ण सूचना देत है ।

बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रमन के अभिलेखन औ मूल्याङ्कन कै उदाहरण

दीर्घकालीन अनुसन्धान परियोना

बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के बारे मे युरोप औ अमेरिका मे भवा दीर्घकालीन अध्ययन आदि से यी पता चलत है कि येसे होयवाला फाइदा कुछ समय के बाद आउर बढिया देखात है । यही नाते बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रमन के सही मुल्याङ्कन के खातिर कार्यक्रम के दौरान औ वकरे बादव यी देखब जरुरी है कि अल्पसङ्ख्यक भाषा के विद्यार्थी कार्यक्रम अवधि औ वकरे बादव वही समुदाय कै मातृभाषी विद्यालय मे शिक्षा न पावा विद्यार्थी के तुलना मे कइसन हैं (या कइसन करत हैं) । अबहिन तक एशिया, प्रशान्त या अफ्रिका मे यहि किसिम कै अध्ययन बहुत कम भा है । एस.आई.एल. सन् २००३ मे एकठू दीर्घकालीन अनुसन्धान परियोजना (एल.आर.पी.) शुरु किहे है । यहमा दस वर्ष से उप्पर के अवधि तक चला बहुभाषिक कार्यक्रमन से सूचना एकट्ठा करय्क औ विश्लेषण करय्क काम किहा जात है साथय यहि क्षेत्र से नीति निर्माता औ शिक्षा क्षेत्र मे काम करयवाले लोगन का बहुभाषी शिक्षा के बारे मे सूचना प्रवाह किहा जात है ।

एल आर पी प्राथमिक के साथय माध्यमिक तह तक प्रायोगिक (वहुभाषिक शिक्षा) औ मूलधार (गैर मातृभाषी) के कक्षन कै अवलोकन करी । खास कइकै विद्यार्थिन कै उपस्थिति औ स्कूल छोडय कै तथ्याङ्क, स्थानीय जिल्ला, प्रान्तीय औ राष्ट्रिय परिक्षा के दौरान विद्यार्थिन के क्षमता प्रदर्शन कै परिणाम, शिक्षण सामग्री औ विधि, शिक्षक अभिवृत्ति, तालीम औ निरिक्षण कै मूल्याङ्कन पर विशेष ध्यान दिहा जाई ।

सहयोगी निकाय के बीचे सम्बन्ध : अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कै सहभागिता बिना खाली सरकारी तवर से बढिया बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै योजना औ कार्यान्यवयन नाही कइ सका जात है । समुदाय का गैरसरकारी संस्थन से सहयोग मिलय के बावजूद सरकारी सहयोग के बिना वनकै कार्यक्रम हरेक तह मे दीर्घकालीन रुप मे टिकाउ नाही होइ सकत है । यही नाते सबल औ टिकाउ बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम कै योजना, कार्यान्यवयन औ मूल्याङ्कन करय खातिर समुदाय के साथे काम करय वाले सरकार, विश्वविद्यालय अनुसन्धान केन्द्र, गैरसरकारी संस्था औ आउर विभिन्न निकायन कै समन्वय औ सहयोग चाहीं । सहयोगी निकायन कै सहयोग से हरेक साझेदार कै अनुभव औ विशेषज्ञता लगायत के स्रोत कै सदुपयोग होत है ।

सवाल ५ : ढेर भाषन मे बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम लागू करय के खातिर जरुरी खर्चा जुटाय पावा जाई ? अइसन प्रयास सार्थक होई ?

यहि जगह पर बढिया सवाल यी होइ सकत है "का हमरे अल्पसङ्ख्यक भाषा कै वक्ता लोगन का उपयुक्त शिक्षा से बंचित राखय के खातिर खर्च पहुचाय सकित हन् ?"

हम्मन के लगे कुछ सौ बरिस कै परिणाम है कि दुसरे भाषा से शिक्षा देब केतना ढेर अनुपयुक्त है या कहा जाय तो पूरा नष्टकारी औ भेदभाव पूर्ण है । काहे कि यइसने स्कूल प्रणाली मे विद्यार्थी भर्ना दर, कक्षा दोहरावय औ स्कूल छोडय कै दर ढेर, स्कूली शिक्षा पूरा करय वालो लोगन कै दर कम होत है । उत्पादन मूलक खेती किसानी औ पारिवारिक काम छोडिके स्कूले जायवाले लोग यदि असफलता औ तिरस्कार झेलत हैं तो निश्चित रुप से वन लोगन के खातिर यइसन शिक्षा मङ्नियव मे महङ है । यहि अवस्था मे समाज के खातिर समग्र लागत स्पष्ट रुप से भविष्यवाणी कइ सका जात है कि कम से कम यहि उत्तर औपनिवेशी देशन मे शासन ब्यवस्था अबहिनव समावेशी औ सहभागिता मूलक नाही बनि पाये है ।[२१]

शैक्षिक औ दीर्घकालिक आर्थिक लाभ के साथेन बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम वृहत्तर उद्देश्य का पूरा करत है । बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के खातिर सरकारी सहयोग अपने समूचा नागरिक काँ यी आभास देवावत है कि अल्पसङ्ख्यक भाषा औ अइसन जनता सम्मानित हैं । बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थी काँ अपने घर कै भाषा औ कामकाजी भाषा के बीचे बढिया पुल्ह बनावय मे मदत करत है । जवन कि वन लोगन का अपने विशिष्ट भाषिक औ सांस्कृति सम्पदा का छोडय खातिर बिना दबाव दिहे राष्ट्रिय एकता कायम करय मे मदत करत है । संसारभर कै अनुभव यी देखाय दिहे कै कि जनता के भाषिक औ सांस्कृतिक बिरासत कै अनदेखा करब या दबाइब बिभाजन औ विग्रह कै कारण बनि चुकी है । बहुभाषिक शिक्षा विविधता के बदला मे न होइकै विविधता का स्वीकार करत एकता कै समर्थन करत है ।

बहुभाषिक शिक्षा सार्थक है ? यहि सवाल कै जबाब देवय वाले सबसे उपयुक्त व्यक्ति अल्पसङ्ख्यक समुदाय कै सदस्य खुद हैं । समुदाय कै आवाज के साथे यहि पुस्तिका कै अन्त्य करय खातिर यिहां पपुवा न्न्युगिनी के एक अभिभावक कै दृष्टिकोण पेस है :

> *जब लरिके बिटियय स्कूले जात हैं तो ऊ लोग एक बीरान जगही पर पहुचत हैं । वन लोग अपने महतारी बाप औ घर परिवार का छोडत है, आपन बाग बगैंचा, आपन सबकुछ छोडि कै चलत हैं । ऊ लोग कक्षा कोठरी मे बइठत हैं औ यइसन कुछ सिखत हैं, जवने कै वनके गाँव ठाँव से कवनो सम्बन्ध नाही है । बाद मे यी लोग खाली बाहिरी बाति जाना होय के नाते अपने बाति का ठुकुराय देत हैं ।*
>
> *ऊ लागे काउकाउ (आलू, सकरकन्द, कान) खनय नाही चहते यी तो गन्हाउर है, कहत हैं । महतारी का पानी लावय मे सहयोग नाही करते । यइसन काम करत के ऊ लोगन का लाज*

२१. बेंसन, सी. २००१ (२० एप्रिल) रिअल एण्ड पोटेंशिअल बेनिफिट्स आँफ बाइलिंगुअल प्रोग्राम्स इन डिभेलपिङ कट्रिज थर्ड इंटरनेशलन सिंपोजिअम आँन वाइलिंगुअलिजम, ब्रिस्टाँल : इङ्लैंड ।

लागत है । आज लरिकन मे बहुत बदलाव आ है । वन लोग अपने अभिभावक का नाही टेरत हैं, बदमास हैं । ऊ लोग विद्यालय जाय के नाते औ हम्मन कै बाति छोडय के नाते यइसन भा है ।

आजकाल्हि हमार लरिका तोक स्कूल मे है । ऊ आपन जगहि नाही छोडे है । विद्यालय मे ऊ आपन चालचलन सिखे है । आज ऊ अपने इच्छाअनुसार कै हरेक चीजि तोक प्लेस मे लिखि सकत है । ऊ जवन चीज देखि पावत है उहय भर नाही, जवन सोचि सकत है उहव । ऊ अपने जगही के बारे मे लिखत है । ऊ अपने महतारी का पानी लावय मे सहयोग करय, काउ काउ खनय औ बगिया मे जाय के बारे मे लिखत है ।

जब ऊ यी कुलि बाति लिखत है तो यी चीज वकरे खातिर महत्वपूर्ण होइ जात है । ऊ बहरे के बातीन के बारे मे पढत औ लिखत भर नाही है, पढाई औ लिखाई से अपने जीवनशैली के प्रति गर्ब करहुक सिखत है । जब ऊ बडा होई तो हम्मन का अस्वीकर नाही करी । हम्मन के लरिकन कै पढब औ लिखब सिखाइब महत्वपूर्ण बाति होय । लेकिन वहू से महत्वपूर्ण बाति अपने औ हम्मन के प्रति गर्ब करय्क सिखाइब होय ।[२२]

२२. डेल्पिट, एल. डी. आ केमेलफिल्ड, जी. १९८५ एक इभैलुएशन आँफ द भिलेस तोक प्लेस स्कुल स्कीम इन द नाँर्थ सोलोमंस प्रोभिंस इआरयू रिपोर्ट नं. ५१ वाइगानी, पपुआ न्यू गिनी, युनिभर्सिटी आँफ पपुआ न्यू गिनी, पृ २९-३० ।

सन्दर्भ सूची

अवस्थी, लवदेव २००४. एक्स्प्लोरिङ स्कूलप्रैक्टिसेज इन मल्टिलिंगुअल नेपाल पीएचडी शोधग्रंथ, कोपेनहेगेन : डेनिस युनिभर्सिटी आँफ एजुकेशन, पृ. १९७ ।

इस्टोन, सी. २००६. (७-९ नवंबर) अल्फावेट डिजाइन वर्कशाप्स इन पपुआ न्यू गिनी : अ कम्युनिटी-बेस्ड अप्रोच टु आँर्थोग्राफी डिभेलप्मेंट इंटरनेशनल कन्फ्रेंस आँन लैंग्वेज डिभेलप्मेंट, लैंग्वेज रिभाइटलाइजेशन एण्ड मल्टिलिंगुअल एजुकेशन बैंकक । http://www.sil.org/asia/ldc/parallel/_papers/catherine_easton.pdf (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

कमिन्स, जे. २००० वाइलिंगुअल चिल्ड्रेन्स मदर टङ : ह्वाई इज इट इम्पांर्टंट फांर एजुकेशन http://www.iteachilearn.com/cummins/mother.htm (१७ नवंबर २००६ मे प्राप्त)

चिराग, २००१ बाइलिंगुअल एजुकेशन : अ स्टडी रिपोर्ट काठमांडू : शिक्षा औ खेलकुद मंत्रालय, शिक्षा विभाग, अनुसंधान औ विकास शाखा ।

जेरी, एन. आ पान, वाई. २००१ (१९-२१ सेप्टेंबर) एट हंड्रड स्टोरिक फाँर दोङ डिभेलप्मेंट : अ बाइलिंगुअल एजुकेशन पाइलट प्रोजेक्ट इन गुइझोउ प्रोभिंस, चाइना. छठा आँक्सफोर्ड इंटरनेशनल कन्फ्रेन्स आँन एजुकेशन एण्ड डिभेलप्मेंट आँक्सफोर्ड : यूनाइटेड किङडम ।

डेल्पिट, एल. डी. आ केमेलफिल्ड, जी. १९८५ एक इभैलुएशन आँफ द भिलेस तोक प्लेस स्कुल स्कीम इन द नाँर्थ सोलोमंस प्रोभिंस इआरयू रिपोर्ट नं. ५१ वाइगानी, पपुआ न्यू गिनी, युनिभर्सिटी आँफ पपुआ न्यू गिनी, पृ २९-३० ।

बेंसन, सी. २००१ (२० एप्रिल) रिअल एण्ड पोटेंशिअल बेनिफिट्स आँफ बाइलिंगुअल प्रोग्राम्स इन डिभेलपिङ कट्रिज थर्ड इंटरनेशलन सिंपोजिअम आँन वाइलिंगुअलिजम, ब्रिस्टाँल : इङ्लैंड ।

बेंसन सी. २००५. मदर टङ बेस्ड टिचिङ एण्ड एजुकेशन फाँर गर्ल्स, बैंकक, युनेस्को जतत

http://unesdoc.unesco.org/images/0014/001420/142079e.pdf (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

भाल्लेस, एम.सी. २००५. एक्शन रिसर्च आँन द डिभेलप्मेंत आँफ एक इंडिजेनस पीपुल्स एजुकेशन प्रोग्राम फाँर द माग्बिकिन ट्राइब इन मोरोङ, बतान, फिलिपिंस, युनेस्को, फर्स्ट लैंग्वेज फर्स्ट : कम्युनिटी - बेस्ड लिटरसी प्रोग्राम्स फाँर माइनारिटी लैग्वेज कंटेक्स्ट इन एशिया बैंकक, युनेस्को, पृ. १८१-१९५ ।

मेलोन, एस. २००५ प्लानिङ कम्युनिटी-बेस्ड एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइनाँरिटी लैंग्वेज कम्युनिटिज. रिसोर्स मैनुअल फाँर मदर टङ स्पीकर्स आँफ माइनाँरिटी लैंग्वेज इंगेज्ड इन प्लानिङ एण्ड इम्प्लिमेंटिङ एजुकेशन प्रोग्राम्स इन देअर वोन कम्युनिटिज ।

मेलोन, डी. आ सुविलाई, पीं २००५ लैंग्वेज डिभेलप्मेंट एण्ड लैंग्वेज रिभाइटलाइजेशन इन एशिया. मोन ख्मेर स्टडिज, भाँलमु ३५, पृ. १०१-१२०

मिडलबार्ग, जें २००५ हाइलैंड चिल्ड्रेंस एजुकेशन प्रोजेक्ट : गुड लेशंस लर्ण्ड ई बेसि एजुकेशन बैंकक : युनेस्को ।

यादव, योगन्द्रप्रसाद औ आउर लोग (तैयारी के क्रम मे) लिंग्विस्टिक डाइभर्सिटी इन नेपाल : सिचुएशन एण्ड पांलिसी प्लानिङ ।

वर्ल्ड बैंक. २००५. एजुकेशन नोट्स. इन देअर वोन लैंग्वेज : एजुकेशन फाँर आँल, वाशिङ्टन डी.सी. : वर्ल्ड बैंक. http://siteresources.worldbank.org/EDUCATION/Resources/Education-Notes/EdNotes_Lang_of_Instruct.pdf (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

परिभाषिक शब्दावली - भाषा

अलिखित भाषा : पढाई/लेखाई मे प्रयोग न आवा खाली बोलीचाली मे सीमित भाषा

अल्पसङ्ख्यक भाषा: अल्पसङ्ख्यक सामाजिक समूह वा जाति कै भाषा । कब्बव कब्बव सङ्ख्यात्मक रुप से बडा समूह मे बोलीचाली कै भाषा होय के बावजूद मुख्य भाषा के रुप मे प्रयोग न किहा जायवाले भाषा का बूझा जात है ।

कामकाजी भाषा : सरकारी कार्यालय, स्कूल सहित आउर संस्थन मे दैनिक कामकाज के खातिर प्रयोग होयवाला भाषा उदाहरण के रूप मे : भारत मे अङ्ग्रेजी औ हिन्दी का कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता दिहा है औ राज्यन मे अपनय आपन राज्य भाषा चलनचल्ती मे है । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज के भाषा कै मान्यता मिला है ।

घर कै भाषा : घर मे बोली जायवाली भाषा (पहिला भाषा औ मातृभाषा का देखा जाई) केहू केहू के घर कै भाषा एक से ज्यादव होइ सकत है ।

दूसर भाषा : पहिला या घर के भाषा का छोडि कै दूसर भाषा, व्यापक संचार सम्पर्क कै भाषा या विदेशी भाषा

सामान्य रुप मे घर से बहरे व्यापक समुदाय में बोला जाय वाले भाषाका बूझा जात है । द्विभाषिक शिक्षा में पहिला भाषा के बाद पढाई मे प्रयोग किहा जाय वाले भाष का दुसर भाषा (कामकाजी औ विदेशी) बूझा जात है ।

पहिला भाषा : मनई के मुह से निकरा पहिला भाषा, मौलिक भाषा (मातृभाषा, घर कै भाषा, स्थानीय भाषा का देखा जाई)

पैतृक भाषा : मनई कै पुर्वज या कवनो जाति या भाषिक समुदाय कै भाषा

भाषिका : भौगोलिक क्षेत्र या सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे होयवाला भिन्नता ('भेद' का देखा जाय ।)

भेद : भौगोलिक क्षेत्र औ सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे आवय वाला अन्तर

मातृभाषा : पहिला भाषा, मौलिक भाषा (पहिला भाषा, पैत्रिक भाषा, घर कै भाषा का देखा जाय ।)

मनई कै (१) सबसे पहिला सिखा भाषा (२) अपने या दुसरे से मातृभाषी वक्ता के रुप मे चिन्हावा भाषा (३) सबसे बेसी जानल भाषा (४) सबसे बेसी प्रयोग मे आवय वाली भाषा

माध्यम भाषा : स्कूल मे पढाई लिखाई कै माध्यम के रुपमे प्रयोग होयवाली भाषा

मुख्यभाषा : मुख्य समाज कै बोलय वाली या देश कै मुख्य भाषा के रुप मे रहा भाषा, देश मे ढेर जनसङ्ख्या कै बोलय वाली भाषा न होय के बावजूद राष्ट्रभाषा या कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता पावा भाषा ।

राष्ट्र भाषा : देश के भित्तर ब्यापक रुप मे बोला जायवाली भाषा, राष्ट्र से महत्वपूर्ण कहिकै किटान किहा भाषा, कब्बव कब्बव कामकाजिउ भाषा । उदाहरण : भारत मे दुई ठू कामकाजी भाषा औ बाइस ठू अनुसूचित भाषा किटान किहा है औ हरेक राज्य कै अपनय आपन राज्य भाषा चलन चल्ती मे हैं । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज कै भाषा तयँ किहा है । नेपाल कै अन्तरिम संविधान, २०६३ मे नेपाल के भित्तर बोला जायवाली हरेक मातृभाषा का राष्ट्रभाषा घोषित किहा है ।

विदेशी भाषा : अइसन भाषा जवन वक्ता के समुदाय मे न बोला जात होय ।

सम्पर्क भाषा : भाषिक समुदाय के बीचे एक दुसरे से सम्पर्क करय खातिर प्रयोग किहा जाय वाली भाषा । उदाहरण : नेपाल कै पहाडी क्षेत्र मे नेपाली, तराई मधेश के विभिन्न क्षेत्र मे मातृभाषा के साथेन हिन्दी औ हिमाली क्षेत्र मे तिब्बती

स्थानीय भाषा : अपने समुदाय मे बोला जायवाली भाषा । सम्पूर्ण रुप मे लेखन पद्धति कै विकास न भवा भाषव होइ सकत है ।

पारिभाषिक शब्दावली - सामान्य

आदिवासी : कवनो क्षेत्र वा देश मे आदिकाल से या बहुत पहिले से बसा मानव समूह/समुदाय

कार्यान्यवयन : कवनो नवां कानून लागू करय खातिर मनई या आउर स्रोत परिचालन करय वाला तरीका ।

गैरसरकारी संस्था : राष्ट्रिय सरकार कै अङ्ग न होय के बावजूद सामुदायिक विकास के खातिर काम करयवाला संस्था ।

जनचेतना बृद्धि : आपन जरुरत चीन्हि कै बोकां पावय खारि सहयोग देय वाला सूचना औ जानकारी देय कै काम ।

दुईभाषी : व्यक्ति : दुई भाषा बोलय औ बूझय (कब्बव कब्बव लिखिउ पढि सकय ।)

समाज : दुई भाषा बोलय वाले लोग साथय साथ रहय वाली समुदाय ।

दुइ भाषी शिक्षा (द्विभाषी शिक्षा) : साक्षरता औ औपचारिक लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे दुइ भाषा प्रयोग कइकै दिहा जाय वाली शिक्षा । यहमा व्यवहारिक रुप से साक्षरता औ पढाई लिखाई सिखावत के सबसे पहिले व्यक्ति कै पहिला भाषा/मातृभाषा से शुरु किहा जाला औ दुसरे भाषा का लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे धीरे धीरे सामिल किहा जाला ।

धारा प्रवाह : बिना कवनो अवरोध के बोलय, पढय औ लिखय मे उच्च दक्षता ।

निरक्षर : खुद कै जाना सुना भाषा मे लिखय पढय कै अवसर न पावा मनई ।

परिचालन : कवनो कार्यक्रम कै योजना बनावय औ लागू करय खातिर समुदाय औ समुदाय के सहयोगिन का सङ्गठित करय कै काम ।

पाठ्यक्रम : शैक्षिक कार्यक्रम के खातिर शिक्षण योजना, पढयवाला विषय वस्तु औ सहयोगी सामान ।

बहुभाषी : व्यक्ति : दुइ से ढेर भाषा जानय बूझय वाला (लिख पढ कइ सकय वाला) ।

समाज : दुइ से बेसी भाषा भाषी बसोबास करय वाला समाज ।

बहुभाषिक शिक्षा : साक्षरता औ औपचारिक शिक्षा मे दुइ से ढेर भाषा प्रयोग कइकै लिखाई पढाई (शिक्षण) करावा जायवाली शिक्षा - बच्चा या व्यक्ति के पहिला भाषा कै माध्यम से पढाई शुरु कराय कै दूसर तीसर भाषा से जोडत लइ जायवाली शिक्षा ।

भाषा विकास : शिक्षा मे केहू का कवनो भाषा बढिया से सुनय बोलय पढय औ लिखय कै सिखावय वाली काम ।

भाषिक अल्पसङ्ख्यक : कम जनसङ्ख्या होय के नाते या राजनीतिक औ आर्थिक कारण से समाज मे दुसरे के तुलना मे कमजोर रुप मे रहय वाला यक्कय भाषा बोलय वाले मनइन कै समूह ।

मातृभाषा पर आधारित

दुइ भाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई कै प्रक्रिया शुरु कइकै दूसर भाषा सिखावत जायवाला स्कूली शिक्षा प्रणाली (बहुभाषिक शिक्षा का देखा जाय ।)

बहुभाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई प्रक्रिया शुरु कइकै दुसरे भाषा के साथेन अउरो भाषा सिखावत जायवाला शिक्षा प्रणाली (दुइ भाषिक शिक्षा देखा जाय ।)

मुख्य समूह : बेसी जनसङ्ख्या होय के नाते या आर्थिक औ राजनीतिक कारण से देश मे शक्ति के रुप मे रहा सामाजिक समूह ।

मूलधार : मुख्य समूह कै भाषा औ संस्कृति (कब्बव कब्बव खाली मुख्य समूह के खातिर बनावा स्कूल औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक लोगन कै जरुरत न पूरा करयवाला स्कूल बूझा जाला ।)

लेखन पद्धति : लिपि हिज्जे नियम औ विराम चिन्ह सहित के लेखन कै मानक प्रणाली ।

लैङ्गिक समानता : मेहरारु औ मर्द, बिटिया या बेटवा के मानव अधिकार का पूरा पूर जानय बूझय खातिर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक औ राजनीतिक विकास मे योगदान करय खातिर औ वोसे लाभ लेवय खातिर समान परिस्थिति कै अवस्था ।

सल्लाहकार समिति : बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम मे सामिल अगुवा लोगन कै समिति, (यहमा प्राय: मातृभाषा बोलयवाले औ सहयोगी संस्था कै सदस्य होत हैं ।)

सहजकर्ता : आउर लोगन का लेखपढ मे सहयोग करयवाले मनई, शिक्षक ।

साक्षरता : जीवन मे जरुरी व्यवहार पूरा करय खातिर पढय, लिखय औ हिसाब करय के साथेन आउर भाषिक क्रियाकलाप ठीक से करय कै क्षमता ।

साझेदार : नवा कार्यक्रम लागू करय खातिर समुदाय से मिलि कै काम करय वाला मनई, संस्था या निकाय ।

सिखाई उपलब्धि : स्कूल मे होय वाले पढाई कै विषयवस्तु, भाषा कै ज्ञान, हुनर औ दक्षता ।

स्थायित्व : ज्यादे समय तक समय के हिसाब से निरन्तर स्थापित गुण ।

बहुभाषिक शिक्षा विस्तार के खातिर
उपयोगी सामग्री :

स्कूल के पहुच से बहरे रहै वाले लोगन कै समावेशीकरण

समुदाय कै सदस्य लोगन के खातिर पुस्तिका

समुदाय कै सदस्य लोगन के खातिर पुस्तिका

परिचय

अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय के ढेर लरिकन बिटियन के खातिर स्कूल एक अपरिचित जगहि होय, जहां अपरिचित धारणा अपरिचित भाषा मे पढावा जात है । लरिकन बिटियन का आपने महतारी बाप औ नाते रिस्तेदार से सिखा ज्ञान औ अनुभव के स्कूले मे कवने काम के नाही रहत । स्कूले मे जवने भाषा मे वनके लरिकन का शिक्षा दिहा जात है, ऊ वनकै महतारी बाप नाही बूझत हैं तो वनहू लोग अपने लरिकन विटियन का पढावय मे सहभागी नाही होइ पावत हैं । पपुआन्युगिनी के मूलधार (मुख्य भाषा) कै स्कुल सम्बन्धी आपन अनुभव एक जने अभिभावक यहि किसिम से सुनाइन :

> *जब लरिके बिटियय स्कुले जात है, तो ऊ लोग एक बीरान जगही पहुँचत हैं । ऊ लोग अपने जीवन कै अभिन्न हिस्सा अपने माइबाप, बाग बगैचा, जीवनशैली सब कुछ छोडि देत हैं । वन लोग कक्षा कोठरी मे बइठत हैं औ कुछ यइसन बाति सिखत हैं, जवने कै वन लोगन कै अपने गाँव ठाँव मे कवनो मूल्य नाही है । बाद मे, ऊ लोग खाली अउरय चीज सिखत हैं, यही नाते अपने मूल्य मान्यतन का अस्वीकृत कइ देत हैं ।*[1]

यी पुस्तिका विद्यार्थी केन्द्रित औ समुदाय केन्द्रित शिक्षा के बारे मे है । जेह मा लरिके अपने घरके भाषा मे शिक्षा कै सुरुवात करत है औ स्कूल कै कामकाजिउ भाषा (जरुरत के अनुसार अउरव भाषा) सिखत जात हैं । यहि कार्यक्रमन मे अपने अभिभावक औ समुदाय से लरिकन का मिला ज्ञान औ अनुभव कै सम्मान होला औ आगे के पढाई कै आधार तइयार होला ।' मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा के नांव से जाना जायवाला यी कार्यक्रम खास कइकै समुदाय के खातिर चलावा माना जात है, जहां विद्यार्थी लोग औपचारिक शिक्षा कै भाषा न बोलिकै अपने घर के भाषा मे बोलत हैं । यही नाते यहि प्रक्रिया मे विद्यार्थिन का वनके घर के भाषा औ संस्कृति का छोडय के खातिर दबाव दिहे बिना वन लोगन का शैक्षिक लक्ष्य पावय मे मदत किहा जात हैं । यी काहे जरुरी है ? यी कवने तरिका से काम करत है ? यी कवने तरिका से विद्यार्थी का फाइदा पहुचावत है ? येकां लागू करय खातिर काव काव चाहीं ? बहुभाषिक शिक्षा के बारे मे अभिभावक, शिक्षक, प्रशासक औ समुदाय के आउर सदस्यन के द्वारा पूछा जायवाले अइसनय किसिम से सवालन के आधार पर यी पुस्तिका बनावा गा है ।

१. डेल्पिट, एल.डी. आ केमेलफिल्ड, जी. १९८५. एन इभैलुएशन आँफ द भिजेस स्कूल स्कीम इन नाँर्थ सोलोमंस प्रोभिंस, इआरयू रिपोर्ट नं. ५१. वाइगानी, पपुआ न्यू गिनी : यूनिभर्सिटी आँफ पपुआ न्यू गिनी. पृ. २९-३० ।

सवाल औ जवाफ

अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय कै भाषा औ शिक्षा

सवाल १ : अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदायन कै बहुसङ्ख्यक लरिकन कै शैक्षिक अवस्था कइसन होत है ?

लरिकन बिटियय स्कूले जाय कै शुरु करय के बाद ढेर नवां बाति सिखय के परत है । वन लोग न का :

- विद्यालय के व्यवहार के बारे मे सिखय्क परत है ।
- पढय औ लिखय के सिखय्क परत है ।
- गणित विज्ञान, सामाजिक अध्ययन औ आउर विषय मे नवां सूचना औ धारणा के बारे मे सिखय के परत है ।
- ऊ लोग नवा जानकारी औ धारणा समझि चुका है औ ऊ सब कै प्रयोग कइ सकत हैं, यी देखावय के परत है ।

स्कूल कै कामकाजी भाषा न बोलय वाले लरिकन का स्कूल शुरु करत के विशेष चुनौतीन कै सामना करय के परत है :

- वन लोगन का स्कूल कै कामकाजी भाषा सिखय के परत है । साथय साथ वही समय ऊ लोगन का शिक्षक लोगन के द्वारा सिखावा नवां बाति बूझय कै कोशिस करय के परत है ।
- स्कूल के कामकाजी भाषा मे लिखा पाठ्यपुस्तक (किताब) के पाठ का वन लोगन का बूझय के कोशिस करय के परत है । वन लोगन का पाठ का बूझय के हिसाब से जरुरत अनुसार कै भाषा नाही सिखे हैं तो जवने अनुसार शिक्षक पढाये है, उहय सुनिकय शब्द, पदावली औ पूरे वाक्यव का रटय के परी । लेकिन रटब औ बूझब यक्कय बाति नाही होय । यही नाते सिखाई मे ऊ लोग आउर ढेर पीछे जाय कै अवस्था आवत है ।
- ऊ लोगन का नवां भाषा मे लिखय्क जानि चुकय के चाहीं । वनलोग बढिया से भाषा नाही बूझि पाइन, तो ऊ लोगन का ब्ल्याकबोर्ड, किताब, आदि से अक्षर, शब्द औ वाक्य उतारय के परत है, लेकिन यइसन लिखाई से आपन विचार व्यक्त करय्म कवनो किसिम कै मदत नाही पहुचत है ।

भारत के एक जने शिक्षा अधिकारी खुद कै देखा एक कक्षा कोठरी के समस्या का यहि किसिम से बताये है :

> *विद्यार्थी लोगन काँ शिक्षक कै पढावा बाति पर एक रत्ती ध्यान देत नाही देखय्क मिला । ऊ लोग शून्य भाव से शिक्षक के ओर औ कब्बव कब्बव ब्लैकबोर्ड मे लिखा कुछ चीजिन का देखत रहे । विद्यार्थी लोग कुछ नाही बूझि पाये हैं, यहि बाति का अच्छा तरिका से जानयवाले शिक्षक महोदय आउर कर्कस अवाजि मे वोकर लम्मा ब्याख्या करत रहें ।*

बाद मे बोलत बोलत थकि जाय के बाद औ छोट छोट लरिके राष्ट्र कै बिटियय दुबिधा मे परा जानि कै वन विद्यार्थिन का ब्लैकबोर्ड देखिकै लिखय के कहिन । 'हमार लरिके बिटिय्य ब्लैकबोर्ड देखि कै उतारय मे बडा चतुर हैं । पांच कक्षा तक पहुचत पहुचत वन लोग हरेक चीजि देखि कै लिखय औ कन्ठ कइ लिहैं । लेकिन बाद मे वनही बताइन कि कक्षा पाँच कै खाली दुइ जने विद्यार्थी स्कूले के कामकाजी भाषा (हिन्दी) का वास्तव मे बोलि पावत हैं ।[२]

पपुवा न्युगिनी कै एक जने शिक्षक स्कूल कै कामकाजी भाषा न बुझय बाले लरिकन के दुबिधा औ त्रास के बारे मे यहि किसिम से बताये है :

हम कक्षा मे पढावत के अधिकतर लरिकन बिटियन का असमंजस मे परा पायन । ऊ लोग अपने बाप महतारी से घर कै भाषा बोलत रहे औ ऊ गाँव कै भाषा छोडिके बहरे आ रहें औ हम वहि छोटछोट लरिकन के आगे राक्षस घत खडा होइकै वन सबका न आवय वाले भाषा मे बाति करत रहेन । हम वन लोगन का कुछ सिखावय के जगही डेरवावत रहेन ।[३]

यी वास्तविकता होय कि अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय से आवा कुछ लरिके स्कूले कै कामकाजी भाषा बढिया से सिखि सकत हैं । कुछ अपने शिक्षा का पूरा कइकै सफलतापूर्वक समाज के मूलधार मे घुलमिल कइ लेत हैं। यइसने अवस्था मे वन लोगन कै अपने समुदाय से कइसन सम्बन्ध है ? बहुत दुखदाई । यथार्थ यी है कि जो कक्षा कोठरी मे खाली मुख्य भाषा कै प्रयोग होत है औ पाठ मे खाली वही प्रभावी भाषा भाषी लोगन के समाज का राखा है तो येकर परिणम का होत है कि अल्पसङ्ख्यक लरिके बिटियय आपन भाषा भुलाय जात हैं साथय अपने संस्कृति औ समुदाय के ज्ञान, माया, मोह औ आदर वनके संगत से खिसकि सकत है ।

संक्षेप मे, लरिकन का जवन भाषा मालुम नाही है, ऊ भाषा प्रयोग न होयवाले विद्यालय मे अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय के विद्यार्थिन का शैक्षिक, सामाजिक औ आउर विभिन्न समस्या पैदा होत है :

२. झिंग्रान, डी. २००५. लैंग्वेज डिसैडभान्टेज. द लर्निङ चैलेंज इन प्राइमरी एजुकेशन. न्यू दिल्ली : ए.पीएच. पब्लिशिङ ।

३. मेलोन, डी. २००४. दी इन बिट्वीन पीपुल. डलास : युनाइटेड स्टेट्स, एसआईएल इंटरनेशनल. पृ. १७ ।

- कक्षा दोहरावय औ विद्यालय छोडय वालन कै सङ्ख्या दर ढेर होत है । काहे कि, ऊ लोग अपने न बूझय वाले भाषा मे पढाई होय के नाते पढावा औ सिखावा बाति नाही सिखि पावत हैं ।

विद्यालय छोडय, फेल होय औ कक्षा दोहरावय कै कारण यी होइ सकत है :

अधिकतर प्रधानाध्यापक लोग बताइन कि मातृभाषा मे शिक्षा के खातिर शिक्षक भर्ना करय कै कवनो नीति नाही है । एकतिस जनेमध्ये पच्चीस जने शिक्षक लोग विद्यार्थी का विद्यालय मे मातृभाषा प्रयोग करय मे प्रोत्साहित न करयवाली बाति स्वीकर किहिन । अधिकतर शिक्षक लोग यी बाति बूझत है कि नेपाली मे जरुरी ज्ञान न होय के नाते नेपाली भाषा न बोलय वाले लरिके बिटियय विद्यालय छोडय, असफल होय औ कक्षा दोहरावत है । यहि बाति पर जोर दिहिन कि ऊ लोग नेपाली भाषा न बोलय वाले क्षेत्र मे द्विभाषी औ बहुभाषिक शिक्षा जरुरी है । यी कुलि के बावजूद विद्यालय मे मातृभाषा प्रयोग करय के बारे मे ऊ लोगन कै व्यवहार औ विचार नाही मिलत है ।[४]

- अपने शिक्षक औ अभिभावक के आशा अनुसार कै उपलब्धी न होय के नाते विद्यार्थिन मे खुद पर आत्मविश्वास कायम न होय कै स्थिति आय सकत है ।

- खाली मुख्य भाषा, संस्कृति औ समाज का महत्वपूर्ण बतावय कै सनेश स्कूल मे मिलय के नाते विद्यार्थिन का अपने भाषा, वंशाणुगत संस्कृति के प्रति स्नेह के साथय घर औ समुदाय के प्रति आदर मे कमी आय सकत है ।

- विद्यार्थी लोग काम पावय के खातिर जरुरी ज्ञान औ हुनर हासिल करय मे असफल होइ सकत हैं ।

- अपने समुदाय औ राष्ट्र कै राजनीतिक विकास मे सक्रिय रुप से भाग लइ सकयम के खातिर जरुरी ज्ञान औ आत्मविश्वास पावय मे असफल होइ सकत हैं ।

पपुवा न्यु गिनी कै शिक्षा विभाग यही किसिम के बात का यहि रुप मे लिखे है :

औपचारिक रोजगारी के क्षेत्र मे प्रवेश न करावय वाली शिक्षा प्रणाली अधिकतर लरिकन का आम जनता के जीवन शैली से पराई बनावत है, औ समुदाय या राष्ट्र के विकास मे सकारात्मक योगदान देवय के खातिर जरुरी ज्ञान, हुनर औ जीवन वृत्ति पावय मे बाधा पहुचावत है ।[५]

४. अवस्थी, लवदे २००४. एक्स्प्लोरिङ मोनोलिंगुअल स्कूल प्रैक्टिसेज इन मल्टिलिंगुअल नेपाल, पीएचडी शोधग्रंथ, कोपेनहेगेन : डेनिस युनिभर्सिटी आँफ एजुकेशन, पृ. २०३

५. डिपार्टमेंट आँफ एजुकेशन. १९९१. एजुकेशन सेक्टर रिभ्यू. वाइगानी : पपुआ न्यू गिनी. पृ. ७ ।

सवाल २ : मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा लरिकन का स्कुल मे बढिया प्रगति करय मे कइसय मदत करत है ?

हरेक भाषा मे प्रभावकारी शिक्षा दुई आधारभूत सिद्धान्त से निर्देशित होत है :

१. सिखाई कै अर्थ होत है : हमरे कण्ठ कइ लिहा जाई । लेकिन जवन हम्मन के खातिर कवनो अर्थ नाही राखत, ऊ हमरे नाही सिखि पावा जाई ।

२. सिखाई जान से अन्जान के ओर जात है: हम्मन का नवाँ विचार औ जानकारी का बूझय औ प्रयोग करय के खातिर सबसे पहिले जाना बाति से शुरु किहा गय तो बढिया से सिखा जाई ।

लरिके विद्यालय जाय से बहुत पहिले सार्थक सिखाई कै अनुभव कइ चुका होत हैं । वन लोग अपने मातापिता औ आउर लोगन से बतुआत के नातागोता के सम्बन्ध के बारे मा जानि चुकत है । वन लोग अपने आसपास के संसार कै अवस्था औ वातावरण के बारे मे सिखत हैं । खुद कै दैनिक क्रियाकलाप के माध्यम से ऊ लोग कवनो वस्तु कै क्रम निर्धारण औ वर्गीकरण करत है । साथय वजन औ दूरी कै तुलना करत हैं । वन लोग अपने बुझाई अनुसार दुसरे कै कहा बाति बढिया औ खराब, उपयोगी औ हानिकारक, उचित अनुचित आदि के मूल्याङ्कन करत हैं औ वही अनुसार व्यवहार करत हैं । यिहय ज्ञान औ अनुभव जीवनभर सिखय के खातिर जग कै काम करत है । भाषव के सन्दर्भ मे यिहय बाति लागू होत है ।

© ज्ञानु पौडेल/यूनेस्को, के सहयोग से सञ्चालित अवधी भाषामा साक्षरता कक्षा

लरिके विद्यालय शुरु करय से ढेर पहिले बातचीत औ सिखाई के खातिर एक औजार के रुप मे घर कै भाषा प्रयोग करत है :

- ऊ लोग अपने माई बाप औ अपने से बडा लोगन कै बाति सुनत है,
- ऊ लोग जवन नाही समझि पावत है, वहि बाति का पूछत हैं औ ओकर जवाफ सुनत है,
- ऊ लोग कहे अनुसार करत है,
- ऊ लोग अपने विचार के बारे मे बाति करत हैं,
- ऊ लोग खुद कै देखा औ सोचा बाति कहत हैं औ जवन सोचत है वोकर व्याख्या करत हैं,
- ऊ लोग सामान का गनत हैं औ साधारण हिसाब करत हैं, साथय
- ऊ लोग अपने सङ्हरिहन से (औ कब्बव अपने अभिभावक से) तर्क करत है ।

यही कुलि अन्तर्क्रिया के माध्यम से लरिके विभिन्न उद्देश्य के खातिर अपने घर के भाषा कै अर्थपूर्ण प्रयोग करय मे गति औ आत्मविश्वास पावत हैं । ऊ लोग स्कूली शिक्षा सुरु करत कै अपने भाषा मे पावा यी कुलि ज्ञान अपने साथन लावत हैं ।

विद्यार्थिन कै पहिलेन से जाना बाति कै विद्यालय मे प्रयोग :

बढिया विद्यालय औ शिक्षक लोग यी बाति जानत हैं कि लरिकन के घर कै भाषा, ज्ञान औ अनुभव सबकुछ सिखाई के खातिर महत्त्वपूर्ण स्रोत होय । ऊ लोग खास कइकै शुरु के तह मे विद्यार्थी लोग पाठ कै अर्थ बुझि पावँय, यिहय सोचि कै लरिकन बिटियन के घर कै भाषा प्रयोग करत हैं । वन लोग नवां बाति कै धारणा देय खातिर स्थानीय तह कै उदाहरण देत हैं । ताकि लरिके अपने ज्ञान औ अनुभव का नवां धारणा बनावय खातिर प्रयोग कइ सकयँ । वनलोग लरिकन के चीन्ह जान कै मनई, जगहि औ क्रियाकलाप पर आधारित शुरुवाती पाठ्यक्रम का वनही लोगन के भाषा मे उपलब्ध करावत हैं, जवने से लरिकन विटियन का पढाई अर्थपूर्ण औ उत्साहवर्धक लागै । वन लोग लरिकन बिटियन के सोचा औ जाना बाति के बारे मे रचनात्मक तरिका से वनही लोगन के अपने भाषा मे लिखय कै प्रोत्साहित

करत है, जवने से विद्यार्थी लोग अपने सोच विचार का लिखित रुप से प्रस्तुत करय कै क्षमता हासिल कइ लेय । यी समूचा क्रियाकलाप लरिकन का जीवन भर सिखाई मे सफलता हासिल करय खातिर सबल शैक्षिक आधार बनावय मे मदत करत है ।

घर के भाषा मे सबल आधार निर्माण के महत्व के बारे मे शिक्षा क्षेत्र कै अनुसन्धानकर्ता लोग कुछ यहि किसिम से कहे है :

> *लरिकन कै मातृभाषा विकास कै स्तर ऊ लोगन मे दुसरे भाषा के विकास के बारे मे सबल ढङ्ग से बताय सकत है । अपने मातृभाषा मे ठोस आधार के माध्यम से लरिके दुसरेव भाषा मे आउर ठोस किसिम कै साक्षरता क्षमता कै विकास करत हैं ।*[६]

दुसरे शब्द मे कहा जाय तो घर के भाषा मे शिक्षा कै शुरुवात समय कै बर्बादी नाही होय । येसे लरिकन बिटियन का नवां भाषा सिखहू मे कवनो बाधा नाही पहुँचत है । वास्तव मे लरिकन का नवां भाषा सिखय के खातिर यी एकठू स्रोत होय ।

कुछ नवां सिखय खातिर... :

जइसय जइसय लरिके लोग कक्षा कोठरी मे अपने घर के भाषा प्रयोग कै रफ्तार बढावत जात है, ऊ लोग स्कूले कै कामकाजिउ भाषा मे पहिले सुनय फिर बोलय औ बाद में लिखय औ पढय कै क्षमता शुरु कइ देत हैं । यी प्रक्रिया शिक्षा के यहि सिद्धान्त पर आधारित है कि हम्मन का पढय औ लिखयक खाली एक बाजी सिखय के परत है । लरिके बिटियू अपने घरके भाषा मे पढाई औ लिखाई पहिलवयँ सिखि लिहे हैं औ विद्यालय के कामकाजी भाषा मे पढाई औ लिखाई कइ लिहयँ ।

एक बढिया बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे लरिकन काँ कम से कम प्राथमिक तह तक सम्प्रेषण औ सिखाई के खातिर सुनाई, बोलाई, पढाई औ लिखाई मे घर कै भाषा औ कामकाजी भाषा दूनव प्रयोग करत हैं ।

जब लरिके अपने प्राथमिक शिक्षा कै अवधि भर दुइ वा वोसे बेसी भाषा मे आपन क्षमता बढावत के ऊ लोग भाषा का बढिया से बूझत हैं औ वोकां प्रभावकारी ढङ्ग से प्रयोग करय के जानत हैं । वन लोग अपने भित्तर दूनव भाषा मे साक्षरता विकास करय के बाद भाषा प्रक्रिया मे आउर ढेर अभ्यास करत हैं औ यइसन लोग यी दुई अलग भाषा मे यथार्थ का कइसय सङ्गठित किहा जात है येकर तुलना औ भेद निकारय मे सक्षम होइ जात है ।[७]

---

६. कमिंस, जे. २०००. बाइलिंगुअल चिल्ड्रेंस मदर टङ : ह्वाई इज इट इंपाँर्टंट फार एजुकेशन ? http://www.iteachilearn.com/cummins/mother.htm (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

७. कमिंस, जे. २०००. बाइलिंगुअल चिल्ड्रेंस मदर टङ : ह्वाई इज इट इंपाँर्टंट फार एजुकेशन ? http://www.iteachilearn.com/cummins/mother.htm (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

सवाल ३ : घर कै भाषा कक्षा कोठरी मे प्रयोग करय के बारे मे अभिभावक औ शिक्षक कै का विचार है ?

संसारभर बहुत से अल्पसङ्ख्यक भाषिक समुदाय मे मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम शुरु भा है । वहि कार्यक्रमन मे अधिकतर शिक्षक औ अभिभावक लोग अपने घर के भाषा मे सिखाई शुरु करय वाले विद्यार्थिन मे यी कुलि बाति पाये है :

- नौसिखुवा के रुप मे अपने भित्तर पुर्व क्षमता के आधार पर ढेर आत्मविश्वास राखत हैं,
- कक्षा कोठरी के छलफल में आउर सक्रिय रुप से भाग लेत है,
- ढेर जिज्ञासा राखत हैं,
- बिषय पर गहन समझ प्रदर्शित करत हैं,
- आसानी से पढय्क सिखत हैं औ सिखा बाति बूझत हैं,
- आसानी से लिखत हैं औ आपन बाति बढिया से लिखि कै ब्यक्त कइ सकत है, साथय
- विद्यालय कै भाषा मौखिक औ लिखित दूनव रुप मे आउर बढिया से औ सरलता के साथ बुझि कै सिखत हैं ।

एक जने विद्यालय निरीक्षक कक्षा कोठरी मे देखान भिन्नता का यहि किसिम से बताये हिन :

> *पहिले पहिले लरिके कक्षा मे बइठत तो रहें लेकिन कुछ नाही बोलत रहें । ऊ लोग यिहव नाही जानत रहें कि शिक्षक के सवाल कै जवाब कइसय दिहा जात है । अब हमेशा ऊ लोग आपन हाथ उठावत हैं । अब तो ऊ लोगन का बहुत अच्छा कहय के परी । अब लरिकन यी समूह एक उत्साहित समूह बनि चुका है ।*[८]

८. सन् २००१ में फिलिपिंस कै क्षेत्रीय संपर्क भाषा कार्यक्रम कै एकजने शिक्षक से एसआईएल इंटरनेशनल कै सुसान मेलोन कै किहा कइल बातचीत पर आधारित ।

बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम मे मातृभाषा औ संस्कृति के प्रति लरिकन कै स्नेह औ आदर बढावय के नाते अभिभावक लोग खुसी हैं । पपुवा न्यु गिनी कै एक जने अभिभावक कहिन :

> *आजकाल्हि हमार बच्चा स्थानीय भाषा के विद्यालय मे है । ऊ आपन जगहि नाही छोडे है । विद्यालय मे ऊ अपने चालचलन औ जीवनशैली के बारे मे सिखत है । अब तो ऊ अपने इच्छा अनुसार कै हरेक बाति घर के भाषा मे लिखि लेत है । ऊ अपने गाँव घर के बारे मे लिखत है । ऊ माई का पानी लावय मे मदत करय्क, सकरखण्ड (गन्जी) खनय, बगिया मे जाय के बारे मे लिखत है । जब ऊ यी कुलि बाति लिखत है तो वकरे खातिर यी कुलि महत्वपूर्ण होत हैं । ऊ बहरेव कै बाति पढय औ लिखय भर के नाही पढाई औ लिखाई के माध्यम से अपने जीवन शैली पर गर्ब करहुक सिखत है । ऊ बडा होय के बाद हम्मन का अस्वीकार नाही करी । हम्मन का अपने लरिकन का पढय औ लिखय्क सिखाइब महत्वपूर्ण बाति होय, लेकिन वहू से महत्वपूर्ण बाति वन लोगन का हम्मन के प्रति औ खुद अपने उप्पर गर्ब करय्क सिखाइब होय ।*[९]

विद्यालय मे भाषा प्रयोग के बारे मे नेपाली अभिभावक लोगन कै बिचार यइसन है :

> *अधिकतर अभिभावक मातृभाषा, नेपाली औ अङ्ग्रेजी तीनवभाषा के पक्ष मे देखाने । वनलोग प्राथमिक तह मे मातृभाषा औ नेपाली का पढाई कै माध्यम बनावय औ वहि भाषन मे पाठ्यपुस्तक लिखय के बाति पर जोड दिहिन ।*[१०]

सवाल ४ : अपने समुदाय मे मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम चलावय के खातिर हमरे का का कइ सका जात है ?

मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम सफल होय के खातिर ढेर मनइन कै सहकार्य औ सहयोग कै जरुरत परत है । सबसे मुख्य बाति समुदाय के सदस्य लोगन का कार्यक्रम कै चाहना बनावय्क परत है साथय स्वामित्व लेय के खातिर तयार होय के परत है । कार्यक्रम बढावय औ वोकां कायम राखय्क है तो स्कूल कै प्रधानाध्यापक (हेड मास्टर), शिक्षक औ शिक्षा अधिकारी के सहयोगव कै जरुरत परत है ।

यकरे बाद के अवस्था मे बढिया बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम का शुरु करय कै इच्छा राखय वाले समुदाय के खातिर कुछ सुझाव नीचे दिहा है ।[११] नीचे के कुछ क्रियाकलाप कार्यक्रम अवधि तक के खातिर रहत हैं तो कुछ खाली थोरय समय के खातिर होत है । कुछ जगही तो यी मध्ये कै कुछ क्रियाकलाप पहिलेन होइ चुका रहत हैं । जइसय कि कुछ भाषन मे लेखन पद्धति कै विकास होइ चुका होत है । आउर जगही कुछ नाही भवा रहत है औ समुदाय का यकरे साझेदार लोगन के साथय सुरुवाती अवस्था से शुरु करय के परत है ।

---

९. डेल्पिट, एल. डी. आ केमेलफिल्ड, जी. १९८५ एन इभैलुएशन आँफ द भिलेस तोक प्लेस स्कूल स्कीम इन द नाँर्थ सोलोमंस प्रोभिंस इआरयू रिपोर्ट नं. ५१. वाइगानी, पपुआ न्यू गिनी : युनिभर्सिटी आँफ पपुआ न्यु गिनी ।

१०. अवस्थी, लवदेब २००४. एक्स्प्लोरिङ मोनोलिंगुअल स्कूल प्रैक्टिसेज इन मल्टिलिंगुअल नेपाल, पीएचडी शोधग्रंथ, कोपेनहेगेन : डेनिस युनिभर्सिटी आँफ एजुकेशन पृ. २०८ ।

११. मेलोन, एक. २००४. प्लानिङ कम्युनिटी-बेस्ड एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइनारिटी लैंग्वेज कम्युनिटिज. रिसोर्स मैजुअल फाँर मदर टङ स्पीकर्स आँफ माइनारिटी लैंग्वेजेज. अप्रकाशित मैनुअल ।

सहयोगी राजनीतिक वातावरण निर्माण : मातृभाषा पर आधारित बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के खातिर राजनीतिक औ आर्थिक सहयोग लेवय के खातिर नीति निर्माता औ आउर निकायन का परिचालित करय के परत है। यकरे खातिर वन लोगन का कार्यक्रम कै उद्देश्य औ फाइदा के बारे मे स्पष्ट करय के परत है। अनुकूल बातावरण बनावय के खातिर भाषिक समुदाय औ ऊ लोगन कै सहयोगी लोग मिलि कै लरिकन बिटियन के खातिर पूर्व प्राथमिक शिक्षा औ विद्यालय छोडय के बाद दिहा जायवाला छोटछोट अनौपचारिक कार्यक्रम शुरु कई सकत हैं। यी काम औपचारिक नीति बनय से पहिलेन कइ सका जात है। यइसन निजी कार्यक्रम सफल होय के बाद वोसे बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के महत्व के बारे मे स्पष्ट जानकारी मिली औ कार्यक्रम के खातिर जरुरी राजनीतिक सहयोग जुटावय मे मदत मिली।

अल्पसङ्खयक भाषिक समुदाय के सदस्य लोगन कै उच्च तह के सरकारी अधिकारी तक पहुच नाहिउ होइ सकत है या वन लोग नीति बनावय के तह तक आपन आवाज पहुचावय के स्थिति मे नहियव रहि सकत हैं। यकरे बावजूद आउर भाषिक समुदाय सरकारी निकाय औ गैरसरकारी संस्थन के बीचे सहकारी सम्बन्ध विकसित कइ सका जात है। अकेलय से अच्छा मिलि कै काम किहे यइसने समूह कै आवाज ढेर शक्तिशाली होत है। यही नाते उच्च तह पर परिवर्तन लावय खातिर औ वोकां टिकाउ बनावय खातिर सम्बन्ध बढावय के काम का सदा प्राथमिकता देवय के चाहीं।

कार्यक्रम के योजना के खातिर सूचना सङ्कलन : सबल औ टिकाउ बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थी औ अभिभावक के जरुरत औ लक्ष्य के प्रति जिम्मेवार होत है। योजनाकार काँ सबसे पहिले अभिभावक औ समुदाय कै आउर मनइन से वनके लरिकन के शिक्षा कै लक्ष्य पूछि कै शिक्षा के वर्तमान अवस्था के बारे मे जानकारी लेब औ वर्तमान प्रणली कै मजबूत औ कमजोर पक्ष कै पता लगाइब होय। दक्ष योजनाकारन काँ बहु भाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे प्रयोग करय लायक उपयुक्त भवन, भाषा कै बढिया हुनर वाले मनई, भाषा मे मिलय वाले सान्दर्भिक लिखित सामग्री आदि के साथय समुदाय मे पावा जाय वाले स्रोत औ कार्यक्रम के कार्यान्यवयन के साथय वकरे कार्यक्रम का दीर्घजीवी बनावय मे बाधा पहुचावय वाले तत्वन के बारे जानकारी एकट्ठा करय के चाहीं। सूचना सङ्कलन कार्यक्रम के अगुवा लोगन का कार्यक्रम के बारे मे जनचेतना बढावय के खातिर बढिया मवक्का देत है। यदि कार्यक्रम अउरो समुदाय मे फइलत जात है, तो जनचेतना वृद्धि औ परिचालन के साथय अनुसंधानव का निरन्तरता देय के चाहीं।

जनचेतना वृद्धि औ साझेदार लोगन कै परिचालन : अधिकतर अभिभावक लोग यी सोचत हैं कि स्कूल के कामकाजी भाषा मे वन लोगन के लरिकन बिटियन का धारा प्रवाह होय खातिर ऊ लोगन का जल्दी से जल्दी नवां भाषा सिखावा जाय औ बेसी से बेसी वोकर प्रयोग करावा जाय। वन लोगन का डेर रहत है कि जेतने समय तक लरिकन बिटियन कै समय घर कै भाषा प्रयोग करय मे खर्च होई, कामकाजी भाषा सिखय मे वन लोगन का वतनय कम समय मिली औ वहू मे पहिले से कम सफलता मिली बकिर शैक्षिक अनुसंधान देखाय चुका है कि पहिला भाषा मे सबल शैक्षिक आधार बनाय चुके लरिकन का दूसर भाषा आउर सरलता से सिखय में मदत करत है।

अभिभावक लोगन का स्कूल मे लरिकन का पहिला भाषा प्रयोग से होय वाले फाइदा के बारे मे जानब जरुरी है । जवने से वन लोगन के बीच मे बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के तहत अपने लरिकन का भर्ती करावय मे आत्मविश्वास बढय । समुदाय के आउर सदस्यव लोगन का जानकारी औ प्रोत्साहन कै जरुरत है । येसे वन लोग कक्षा कोठरी कै व्यवस्थापन करय्, पढावय्, पाठ्य सामग्री का बनावय आदि के काम मे सक्रिय सहयोग कइ सकत हैं । कार्यक्रमका सफल औ दीर्घजीवी बनावय खातिर स्थानीय औ जिल्ला तह कै शिक्षा अधिकारिउ लोगन के सहयोग कै जरुरत होत है । जन चेतना औ साझेदारी बढाइ कै अभिभावक औ समुदाय के भित्तर औ बहरे के आउर सम्भावित साझेदार कार्यक्रम के बारे मे सूचना देय के चाहीं औ वन लोगन का कार्यक्रम कै योजना बनावय मे, लागू करय में औ वोकां चलावय मे सक्रिय रुप से सहभागी होय के खातिर प्रोत्साहित करय के चाहीं ।

समुदाय के भाषा के खातिर लेखन पद्धति कै स्थापना : स्थानीय भाषा मे यदि अबहिन तक लिखित रुप मे प्रयोग नाही आ है तो समुदाय का अपने लेखन प्रणाली के खातिर चिन्ह औ अक्षरन कै निर्धारण करब जरुरी है । सम्बन्धित भाषा से परिचित भाषाशास्त्री प्रयोग होयवाले चिन्ह औ अक्षरन के बारे में मातृभाषी वक्ता लोगन का निर्णय पर पहुचय खातिर सहयोग कइ सकत हैं । समुदाय से एकठू कामचलाउ लेखन पद्धति तयार होय के बाद वोकर परिक्षण करय औ जरुरत के अनुसार वहमा संशोधन करय के परत है । पहिले न लिखा भाषा के खातिर लेखन पद्धति कै विकास करय्क काम गाह्र जेस लागय के बावजूद बीता कुछ दशक के बीचे मे ढेर भाषिक समुदाय सफलतापूर्वक यहि काम का कइ चुके हैं । एकबाजी लेख पद्धिति के विकास कइ चुकय के बाद वहि पद्धति कै प्रयोग कइके लिखित साहित्य बनावय औ बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के खातिर सामग्री तैयार कइ सकत हैं ।

नेपाल मे परम्परागत हिसाब से आपन लिपि न होयवाले ढेर भाषन में देवनागरी लिपि कै प्रयोग किहा जात है । यही नाते यदि आपन मौलिक लिपि नाही है तो देवनागरी लिपि का यथावत या कुछ चिन्ह मे थपघट या बदलि कै प्रयोग कइ सका जात है ।

शिक्षण औ सिखाई सामग्री कै विकास : बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे शिक्षक के विद्यार्थिन का सिखावय खातिर औ विद्यार्थिन का सिखय खातिर शिक्षण औ सिखाई सामग्री कै जरुरत होत है । यइसन शिक्षण औ सिखाई सामग्री (१) विद्यार्थिन का वन लोगन कै शैक्षिक लक्ष्य पावय खातिर ज्ञान, हुनर औ आत्मविश्वास देय के हिसाब से होय के चाहीं औ (२) वन लोगन के भाषा औ संस्कृति के प्रति प्रेम औ आदर जगावय वाला होय के चाहीं ।

सबल बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रमन मे शिक्षक औ प्रध्यानाध्यापक के साथय स्थानीय औ जिल्ला स्तर कै शिक्षा अधिकारी लोगन का मिलि कै काम करय्क चाहीं । यहमा पाठ्यक्रम विकास केन्द्र जइसन केन्द्रिय निकाय सहयोग कइ सकत है । वनलोग प्राथमिक स्कुल के हरेक तह के विद्यार्थिन के आशा औ अपेक्षा के बारे मे मालुम रहत है औ लरिकन के खातिर मूलधार कै स्कूल मे पहुचय के समय तक हासिल करय वाला जरुरी आधारभूत सिखाई उपलब्धिन कै पहिचान कइ सकत हैं । समुदाय कै भूमिका लरिकन का कार्यक्रम शुरु होय से पहिलवयँ वनके जानल भाषा, ज्ञान औ अनुभव पर आधारित शिक्षण औ सिखाई सामग्री आदि हैं कि नाहीं, यी सुनिश्चित करब होय । समुदाय के सदस्यव लोगन का कार्यक्रम मे पैतृक भाषा औ संस्कृति के तत्वन का कायम राखय मे मदत करय के चाहीं ।

समुदाय के भाषा मे पाठ्य सामग्री कै विकास : बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे लरिकन बिटियन का पहिले बनके भाषा मे औ बाद में दुसरे भाषा मे तरह तरह कै पाठ्य सामग्री चाहीं। शुरुवाती पाठ्य पाठ्यसामग्री परिचित मनई, गाँव, ठाँव औ क्रियाकलाप आदि के बारे मे लिखा होय के चाहीं। जब लरिके लोग नवां भाषा मे पढाई शुरु करिहै तो वन लोगन का बह भाषा मे छोट या आसान से लइके लम्मा औ जटिल पाठ्य सामग्री चाहीं।

एशिया औ प्रशान्त क्षेत्र के भाषिक समुदायन अनभव यी देखाय चुका है कि धाराप्रवाह मातृभाषा बोलय वाले लोग अपन भाषा मे ढेर विविधतापूर्ण पाठ्यसाग्री बनाय सकत है। यिहां ऊ लोगन के द्वारा बनावा जाय सकय वाला तरह तरह के पाठ्य सामाग्रिन कै कुछ उदाहरण पेश किहा है :

मौलिक कथा	गीत औ कविता	जीवनी औ इतिहास
लोककथा औ ऐतिहासिक कथा	चुट्कुल्ला, बुझउवलि	औ सूक्ति (पद)
यात्रा औ भौगोलिक वर्णन	सूचना	सीख औ निर्देशन
धार्मिक औ नैतिक शिक्षा	नाटक औ प्रहसन (जोकरई)	वर्णमाला किताब
सरल शब्दकोष	क्रियाकलाप कै वर्णन	खेल
उद्घोषण	पत्तरा	योजना किताब
अक्षर	चिन्ह	खबर पन्ना औ पत्रिका
स्वास्थ्य औ आउर सूचना		

ढेर भाषिक समुदाय के अनुभव से यिहव देखा गा है कि खास कइकै नवां पाठकन के खातिर चकमदार रङ्गीन औ महङ पाठ्य सामाग्रिन कै जरुरत नाही है। रोचक औ पढाई क्षमता के अनुसार कै सुहाय वाले पाठ हैं तो सीमित स्रोत होय के नाते रङ्गीन चित्र न भयव पर साफ से छापा किताबिन का पाठक लोग पसन्द करत है। नवां पाठक के खातिर पाठ्यसामग्री तयार करत के यहि बातीन पर ध्यान देवय के चाहीं (१) बिषय रोचक होय (२) भाषा स्पष्ट औ बूझय लायक होय औ (३) चित्र पाठ का बूझय मे मदत करय।

© बिक्रम मणि त्रिपाठी

नेपाल कै उदाहरण : समुदाय के भाषा में पाठ्य सामग्री[१२]

२०४२ साल से थारु समुदाय मे साक्षरता सामग्री के खातिर बेस (BASE) कै स्थानीय कार्यालय 'नया गोरेटो' नौलो बिहानी' 'महिला शिक्षण' जइसन नेपाल सरकार औ आउर संस्थन कै बनावा किताब प्रयोग किहे राहा । बाद मे ऊ लोग यी कुलि महसूस किहिन कि वहि सामग्री मे वनके समुदाय विशेष के खातिर नाही तयार किहा है औ न तो वहि सामाग्रिन मे वन लोगन कै संस्कृति औ दैनिक जीवन कै बाति राखा हैं । वकरे बादवय लोग वेस सरकारी औ गैर सरकारी निकायन से मिलिकै अनौपचारिक शिक्षा खातिर सामाग्रिन का बनावय के बारे मे छ्लफल किहिन । एम एस नेपाल औ बल्र्ड एजूकेशन (विश्व शिक्षा) थारु भाषा मे अनौपचारिक शिक्षा के खातिर सामग्री तयार करय मे सहयोग किहिस । यही क्रम मे आउर सम्बन्धित निकाय औ समुदाय के सदस्य लोगन कै एक सप्ताह तक छ्लफल किहा गै । सामाग्रिन के बारे मे छ्लफल किहा गै । अन्त मे नेपाली भाषा कै नया गोरेटो के जगहीं 'थारु भाषा मे 'पश्चिम् कै फूल' तयार भय ।

कार्यक्रम के खातिर जनशक्ति औ तालिम : यकरे बाद के तालिका मे बहुभाषिक शिक्षा के खातिर जरुरी जनशक्ति कै औ ऊ लोगन कै जिम्मेवारी औ योग्यता के खातिर सलाह दाता समेत कै सूची दिहा गा है ।

बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे काम करयवाले शिक्षक औ आउर काम करय वाले लोगन का अभिावक औ समुदाय के समेत कै प्रोत्साहन औ सहयोग मिलब जरुरी है । शुरु मे जरुरी जनशक्ति का जुटावय मे सहयोग करय औ वन लोग बढिया से काम करय में सहयोग मिला कि यी देखय के खातिर स्थानीय अगुवा लोगन कै एकठू समिति बनाइब महत्त्वपूर्ण शुरुवाती काम होय ।

१२. खड्का, अंजू: चौधरी, टीकाराम, मगर, केशरजङ, चौधरी, आनंद औ पोखरेल, राजन २००६. लिटरसिज फ्राँम द मल्टिलिंगुअल पर्स्पेक्टिभ : लर्निङ फ्राँम थारू, तामाङ, नेवार एण्ड लिंबू लैंग्वेज कम्यूनिटिज आँफ नेपाल. काठमांडू : युनेस्को आफिस इन काठमांडू, पृ. २३ ।

जनशक्ति	मुख्य जिम्मेवारी	सामान्य योग्यता
शिक्षक (होइ सकत है, दुइ जने चाहीं : एकजने स्थानीय भाषा के खातिर औ एक जने कामकाजी भाषा के खातिर)	कक्षा में पढायव कै (स्थानीय भाषा औ कामकाजी भाषा) विद्यार्थिन के प्रगति कै मूल्यांकन करै कै, हाजिरी औ प्रगति कै रेकर्ड दुरुस्त राखय्क, अभिभावक औ समुदाय के आउर सदस्यन से अंतरक्रिया करब	दूनव भाषा ठीक से वोलि, पढि औ लिखि सकय, स्थानीय संस्कृति बुझय औ ओकर कदर कइ सकयब, साफ औ बूझयवाला अक्षर लिख सकयब, समुदाय द्वारा चयन होइके स्वीकार किहा
लेखक, कलाकार औ संपादक	**लेखक** : पहिला औ दूसरे भाषा में पाठ्य-सामग्री लिखि कै अनुकूल करय कै औ अनुवाद करय कै **कलाकार** : सामग्री अनुसार कै चित्र बनावय कै **संपादक (औ लेखक)** : सामग्रिन कै स्पष्टता, भाषा, विरामचिन्ह औ हिज्जे देखय कै **मूल्यांकन समिति** : स्थानीय तह में सामग्रिन कै परीक्षण करय कै, आवश्यकता अनुसार संशोधन करय के	पहिला भाषा पूरा पूरा बोलि, पढि औ लिखि सकब, स्थानीय संस्कृति का बूझब औ कदर कइ सकब, समुदाय में योग्य कथावाचक या कलाकार के रुप में परिचित भाषा में साक्षर औ दुसरे भाषा से पहिला भाषा में या पहिला भाषा से दुसरे भाषा में अनुकूलन कइ सकय । स्थानीय संस्कृति औ समाज का दर्शावयवाला चित्र बनाय सकबय, (कलाकार) पहिला भाषा कै व्याकरण औ विरामचिन्ह कै नियम समझि सकय (संपादक) समुदाय द्वारा चयन होइकै स्वीकार किहा
निरीक्षक/प्रशिक्षक	नियमित रुम में कक्षा देखत रहय कै, शिक्षक लोग कै सबल औ कमजोर पक्षन कै पहिचान करय के, समस्या आये पर शिक्षकन के मदत करय के, विद्यार्थिन के प्रगति कै मूल्यांकन करय के सही ढङ से रेकर्ड राखे है कि नाही देखय के कार्यक्रम कै व्यवस्थापन औ प्रगति मूल्यांकन मे समुदाय कै सुझाव माङ्य के, शिक्षकन के खातिर सेवा से पहिले औ सेवाकालीन तालीम चलावय के । कक्षा कोठरिन के खातिर सामग्रिन कै मौज्दात है कि नाही देखय के ।	पहिला औ दूसर भाषा ठीक से बोलि, पढि औ लिखि सकयब, भाषिक समुदाय कै इतिहास औ संस्कृति के बारे में ज्ञान भवा सरकारी अधिकारिन, स्कूली अधिकारिन औ गैरसरकारी संस्थन के अगुवा लोगन से अंतरक्रिया कइ सकय, अमूर्त विचार संप्रेषण कइ सकब औ उपयुक्त शिक्षण तरकीब बनाय सकब (प्रशिक्षक) पहिला भाषा शिक्षण कै अनुभव भवा (प्रशिक्षक, निरीक्षक) समुदाय द्वारा चयन होइकै स्वीकार किहा

सलाहकार समिति	कार्यक्रम के अगुवा लोगन का सलाहकार के रुप में सहयोग करय के चाही जनशक्ति जुटावय के प्रक्रिया में सहयोग करय के, शिक्षक औ आउर जनशक्ति आ समुदाय के बीच में संपर्क करावय के, समुदाय में कार्यक्रम कै लक्ष्य, उद्देश्य औ गतिविधि के बारे में बतावय के । कक्षा कोठरी औ बकरै सामग्रिन कै उपलब्धता कायम राखय में मदत करय खातिर समुदाय का प्रोत्साहित करय के, यदि संभव है तो कार्यक्रम के सहयोग के खातिर कोष बढावय के, कोष औ आउर स्रोत के प्रयोग में जबाबदेही में कमी-बेसी भवा देखय के	कार्यक्रम कै उद्देश्य, औ लक्ष्य बुझि सकयवाला । कार्यक्रम खातिर प्रतिबद्ध औ यकरे सफलता के खातिर मिलिकै काम के खातिर उत्सुक समुदाय द्वारा चयन होइके स्वीकार किहा ।

प्रगति कै मूल्याङ्कन औ अभिलेखीकरण : बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम औपचारिक शिक्षा प्रणाली के भित्तर स्थापना किहा है तो विद्यार्थी के सिखाई प्रगति कै मूल्याङ्कन करय कै जिम्मा शिक्षक औ शिक्षा अधिकारि कै होत है । बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के मूल्याङ्कन करत कै समुदाय के सदस्य लोग सांस्कृतिक औ शैक्षिक लक्ष्य पावय मे सन्तुष्ट हैं कि नाही, यी कुलि देखब जरुरी है । स्थानीय समुदाय कै सदस्य लोग सहभागी होइकै अपने कार्यक्रम कै अभिलेखीकरण औ मूल्याङ्कन करय मे समुदाय के खातिर कार्यक्रम ढेर महत्वपूर्ण होइ जात है ।

बाहिरी निकाय औ सङ्गठन मे सहयोग कै प्रोत्साहन :

बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम मे सफल होय के खातिर भाषिक समुदाय के भित्तर औ बाहर दूनव ओर से आर्थिक औ आउर किसिम के सहयोग औ सहकार्य कै जरुरत होत है । पाठ्य सामग्री बनावय, कक्षा मे पढावय औ समुदाय कै लक्ष्य पावय में कार्यक्रम सफल भय, नाही भय, यी बाति खाली मातृभाषिय्य लोग पता लगाय सकत है । बहिरिया लोग लेखन पद्धति कै विकास करय, पाठ्यक्रम बनावय, शिक्षक लोगन का तालिम देवय, कार्यक्रम कै मूल्याङ्कन करय औ निरन्तर रुप मे आर्थिक स्रोत जुटावय वाले कार्यक्रम के विशिष्ट क्षेत्र मे मदत कइ सकत हैं । कार्यक्रमन के अगुवा लोगन का जेतना होइ पावय, ज्यादा से ज्यादा निकाय्न से सम्बन्ध बढावय के परत है ।

सवाल ५ : समुदाय कै लोग साझेदारन के सहयोग से खुद बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम स्थापना औ वोकां दीर्घजीवी बनाय सकत है ?

पपुवा न्युगिनी कै एक भाषिक समुदाय कै अनुभव यहि सवाल कै जवाफ दइ सकत है :

१९८० के दशक मे ३०,००० जनसङ्ख्या वाले काउगेल समुदाय कै लोग महसूस किहिन कि खाली काउगेल भाषा बोलयवाले अधिकतर लरिके अङ्ग्रेजी भाषा के माध्यम से पढावा जाय वाले शिक्षा प्रणाली मे बहुत कमजोर है । यही का ध्यान मे राखि के सन् १९८० के दशक के मध्य मे आइ के ऊ लोग बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम के ओर आकर्षित भयें ।

स्थानीय अगुवा लोग अपने लरिकनका औपचारिक शिक्षा के खातिर पर्याप्त मात्रा मे किताब तयार करय के खातिर वही क्षेत्र मे काम करय बाले एकठू गैरसरकारी संस्था कै सहयोग लिहिन औ लरिकन का प्राथमिक विद्यालय मे जाय से पहिले वनही के अपनही भाषा मे लिखय औ पढय कै सिखय के खातिर' 'पहिला भाषा पहिले' शिक्षा कार्यक्रम शुरु करय कै निर्णय लिहिन । वन लोग कार्यक्रम का चलावय औ सहयोग करय के खातिर समुदाय कै सदस्य, सरकारी कर्मचारी औ धार्मिक अगुवा लोगन कै मिलाजुला काउगेल अनौपचारिक शिक्षा सङ्गठन (के एन एफ इ ए) गठन किहिन ।

कार्यक्रम कै अगुवा लोग काउगेल भाषा के वक्ता लोगन का लेखक, कलाकार औ सम्पादक के रुप मे नियुक्त किहिन । दुइ वर्ष के भित्तर वन लोग पूर्व प्राथमिक शिक्षा के खातिर एक सौ से ढेर तहगत पाठ्यपुस्तक लिखिन, चित्र बनाइन, सम्पादन किहिन औ हाथ से चलावा जाय वाले फोटोकापी मेसिन (लिथो यन्त्र) के सहायता से छापिन । वहि किताबिन कै परिक्षण औ संशोधन करय के बाद कार्यक्रम कै अगुवा लोग ज्यादा परिणाम मे पाठ्य सामग्री कै उत्पादन के खातिर आर्थिक प्रस्ताव लिखय के सिखिन ।

६ वर्ष से ढेर दिन तक प्राथमिक शिक्षा लिहा स्थानीय लोगन का पूर्व प्राथमिक कक्षा के खातिर शिक्षक नियुक्त किहा गय । कार्यक्रम के संयोजक के रुप मे काम करय वाले एक जने अनुभवी शिक्षक सामग्री बनावय औ शिक्षक लोगन का तालिम देवय खातिर आउर लोगन का तालिम दिहिन । कार्यक्रम कै अगुवा लोग सहयोगी गैरसरकारी संस्था के मदत से हरेक शिक्षक का कुछ न कुछ पारिश्रमिक देवय के खातिर एकठू आयमूलक परियोजना शुरु किहिन । स्थानीय सरकारी निकाय, आउर गैरसरकारी संस्था, व्यवसायी औ प्रान्तीय अनौपचारिक शिक्षा विभाग से सम्बन्ध स्थापित किहा गय । यी साझेदार लोग कार्यक्रम के खातिर कक्षाकोठरी, विद्यालय के खातिर सामग्री जइसन आर्थिक औ आउर सहयोग जुटावय मे सहयोग किहिन ।

यी लरिकन कै शिक्षा कार्यक्रम के एक एफ इ ए के प्रायोजन मे वीस वर्ष से ढेर समय तक निरन्तर रुप मे चला । यहि कार्यक्रम का सन १९९० के अन्त के आसपास सरकारी शिक्षा प्रणाली मे सामिल किहा गय । आजकाल्हि काउगेल भाषा कै कक्षा पूरा करय के बाद लरिके अङ्ग्रेजी विद्यालय मे पढत हैं ।

अधिकतर अभिभावक अपने लरिकन का बढिया शिक्षा देवा चाहत हैं औ आपने भाषा, संस्कृति औ समुदाय के प्रति माया मोह औ आदर कायम राखा चाहत हैं । अभिभावक लोग अपने लरिकन बिटियन का आत्मविश्वासी औ स्वउत्प्रेरित विद्यार्थी के साथय समुदाय कै उत्पादनशील सदस्य बनत देखा चाहत हैं । यकरे खातिर समुदाय के बहरे कै साझेदार लोगन के साथे काम कइकै औ वन लोगन के सहयोग से उचित लक्ष्य पावा जाय सका जात है ।[१३]

१३. खडका, अन्जु, टिकाराम चौधरी, केशरजङ मगर, आनन्द चौधरी औ राजन पोखरेल २००६, लिटरेसिज फ्रम अ मल्टिलिङ्गुअल पर्स्पेक्टिभ: लर्निङ फ्रम थारू नेवार एण्ड लिम्बू ल्याङ्गवेज कम्युनिटिज अफ नेपाल काठमाडौं, युनेस्को अफिस इन काठमाडौ. ।

सन्दर्भ सूची

अवस्थी, लवदेब २००४. एक्स्प्लोरिङ मोनोलिंगुअल स्कूल प्रैक्टिसेज इन मल्टिलिंगुअल नेपाल, पीएचडी शोधग्रंथ, कोपेनहेगेन : डेनिस युनिभर्सिटी आँफ एजुकेशन ।

कमिंस, जे. २०००. बाइलिंगुअल चिल्ड्रेंस मदर टङ : ह्वाई इज इट इंपाँर्टंट फार एजुकेशन ? http://www.iteachilearn.com/cummins/mother.htm (१७ नवंबर २००६ में प्राप्त)

खड्का, अंजू: चौधरी, टीकाराम, मगर, केशरजङ, चौधरी, आनंद आ पोखरेल, राजन २००६. लिटरसिज फ्राँम द मल्टिलिंगुअल पर्स्पेक्टिभ : लर्निङ फ्राँम थारू, तामाङ, नेवार एण्ड लिंबू लैंग्वेज कम्यूनिटिज आँफ नेपाल. काठमांडू : युनेस्को आफिस इन काठमांडू ।

झिंग्रान, डी. २००५. लैंग्वेज डिसैएडभान्टेज. द लर्निङ चैलेंज इन प्राइमरी एजुकेशन. न्यू दिल्ली : ए.पी.एच. पब्लिशिङ ।

डिपार्टमेंट आँफ एजुकेशन. १९९१. एजुकेशन सेक्टर रिभ्यू. वाइगानी : पपुआ न्यू गिनी डिपार्टमेंट आँफ एजुकेशन ।

डेल्पिट, एल. डी. आ केमेलफिल्ड, जी. १९८५ एन इभैलुएशन आँफ द भिलेस तोक प्लेस स्कूल स्कीम इन द नाँर्थ सोलोमंस प्रोभिंस इआरयू रिपोर्ट नं. ५१. वाइगानी, पपुआ न्यू गिनी : युनिभर्सिटी आँफ पपुआ न्यु गिनी ।

मेलोन, एक. २००४. प्लानिङ कम्युनिटी-बेस्ड एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइनारिटी लैंग्वेज कम्युनिटिज. रिसोर्स मैजुअल फाँर मदर टङ स्पीकर्स आँफ माइनारिटी लैंग्वेजेज. अप्रकाशित मैनुअल ।

मेलोन, एक. २००४. मैनुअल फाँर डिभेलपिङ लिटरसी एण्ड एडल्ट एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइनाँरिटी लैंग्वेज कम्युनिटिज बैंकक : युनेस्को ।

मेलोन, एस. २००५. प्लानिङ कम्युनिटी-बेस्ड एजुकेशन प्रोग्राम्स इन माइनाँरिटी लैंग्वेज कम्युनिटिज रिसोर्स मैनुअल फाँर मदर टङ स्पीकर्स आँस माइनाँरिटी लैंग्वेजेज इंगेज्ड इन प्लानिङ एण्ड इंप्लिमेंटिङ एजुकेशन प्रोग्राम्स इन देअर औन कम्युनिटिज अप्रकाशति मैनुअल

मेलोन, डी. २००४. दी इन बिट्वीन पीपुल. डलास : युनाइटेड स्टेट्स, एसआईएल इंटरनेशनल ।

परिभाषिक शब्दावली - भाषा

अलिखित भाषा : पढाई/लेखाई मे प्रयोग न आवा खाली बोलीचाली मे सीमित भाषा

अल्पसङ्ख्यक भाषा: अल्पसङ्ख्यक सामाजिक समूह वा जाति कै भाषा । कब्बव कब्बव सङ्ख्यात्मक रुप से बडा समूह मे बोलीचाली कै भाषा होय के बावजूद मुख्य भाषा के रुप मे प्रयोग न किहा जायवाले भाषा का बूझा जात है ।

कामकाजी भाषा : सरकारी कार्यालय, स्कूल सहित आउर संस्थन मे दैनिक कामकाज के खातिर प्रयोग होयवाला भाषा उदाहरण के रूप मे : भारत मे अङ्ग्रेजी औ हिन्दी का कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता दिहा है औ राज्यन मे अपनय आपन राज्य भाषा चलनचल्ती मे है । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज के भाषा कै मान्यता मिला है ।

घर कै भाषा : घर मे बोली जायवाली भाषा (पहिला भाषा औ मातृभाषा का देखा जाई) केहू केहू के घर कै भाषा एक से ज्यादव होइ सकत है ।

दूसर भाषा : पहिला या घर के भाषा का छोडि कै दूसर भाषा, व्यापक संचार सम्पर्क कै भाषा या विदेशी भाषा

सामान्य रुप मे घर से बहरे व्यापक समुदाय में बोला जाय वाले भाषाका बूझा जात है । द्विभाषिक शिक्षा में पहिला भाषा के बाद पढाई मे प्रयोग किहा जाय वाले भाष का दुसर भाषा (कामकाजी औ विदेशी) बूझा जात है ।

पहिला भाषा : मनई के मुह से निकरा पहिला भाषा, मौलिक भाषा (मातृभाषा, घर कै भाषा, स्थानीय भाषा का देखा जाई)

पैतृक भाषा : मनई कै पुर्वज या कवनो जाति या भाषिक समुदाय कै भाषा

भाषिका : भौगोलिक क्षेत्र या सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे होयवाला भिन्नता ('भेद' का देखा जाय ।)

भेद : भौगोलिक क्षेत्र औ सामाजिक समूह अनुसार भाषा मे आवय वाला अन्तर

मातृभाषा : पहिला भाषा, मौलिक भाषा (पहिला भाषा, पैत्रिक भाषा, घर कै भाषा का देखा जाय ।)

मनई कै (१) सबसे पहिला सिखा भाषा (२) अपने या दुसरे से मातृभाषी वक्ता के रुप मे चिन्हावा भाषा (३) सबसे बेसी जानल भाषा (४) सबसे बेसी प्रयोग मे आवय वाली भाषा

माध्यम भाषा : स्कूल मे पढाई लिखाई कै माध्यम के रुपमे प्रयोग होयवाली भाषा

मुख्यभाषा : मुख्य समाज कै बोलय वाली या देश कै मुख्य भाषा के रुप मे रहा भाषा, देश मे ढेर जनसङ्ख्या कै बोलय वाली भाषा न होय के बावजूद राष्ट्रभाषा या कामकाजी भाषा के रुप मे मान्यता पावा भाषा ।

राष्ट्र भाषा : देश के भित्तर ब्यापक रुप मे बोला जायवाली भाषा, राष्ट्र से महत्वपूर्ण कहिकै किटान किहा भाषा, कब्बव कब्बव कामकाजिउ भाषा । उदाहरण : भारत मे दुई ठू कामकाजी भाषा औ बाइस ठू अनुसूचित भाषा किटान किहा है औ हरेक राज्य कै अपनय आपन राज्य भाषा चलन चल्ती मे हैं । नेपाल मे नेपाली का सरकारी कामकाज कै भाषा तयँ किहा है । नेपाल कै अन्तरिम संविधान, २०६३ मे नेपाल के भित्तर बोला जायवाली हरेक मातृभाषा का राष्ट्रभाषा घोषित किहा है ।

विदेशी भाषा : अइसन भाषा जवन वक्ता के समुदाय मे न बोला जात होय ।

सम्पर्क भाषा : भाषिक समुदाय के बीचे एक दुसरे से सम्पर्क करय खातिर प्रयोग किहा जाय वाली भाषा । उदाहरण : नेपाल कै पहाडी क्षेत्र मे नेपाली, तराई मधेश के विभिन्न क्षेत्र मे मातृभाषा के साथेन हिन्दी औ हिमाली क्षेत्र मे तिब्बती

स्थानीय भाषा : अपने समुदाय मे बोला जायवाली भाषा । सम्पूर्ण रुप मे लेखन पद्धति कै विकास न भवा भाषव होइ सकत है ।

पारिभाषिक शब्दावली - सामान्य

आदिवासी : कवनो क्षेत्र वा देश मे आदिकाल से या बहुत पहिले से बसा मानव समूह/समुदाय

कार्यान्यवयन : कवनो नवां कानून लागू करय खातिर मनई या आउर स्रोत परिचालन करय वाला तरीका ।

गैरसरकारी संस्था : राष्ट्रिय सरकार कै अङ्ग न होय के बावजूद सामुदायिक विकास के खातिर काम करयवाला संस्था ।

जनचेतना बृद्धि : आपन जरुरत चीन्हि कै बोकां पावय खारि सहयोग देय वाला सूचना औ जानकारी देय कै काम ।

दुईभाषी : व्यक्ति : दुई भाषा बोलय औ बूझय (कब्बव कब्बव लिखिउ पढि सकय ।)

समाज : दुई भाषा बोलय वाले लोग साथय साथ रहय वाली समुदाय ।

दुइ भाषी शिक्षा : (द्विभाषी शिक्षा) साक्षरता औ औपचारिक लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे दुइ भाषा प्रयोग कइकै दिहा जाय वाली शिक्षा । यहमा व्यवहारिक रुप से साक्षरता औ पढाई लिखाई सिखावत के सबसे पहिले व्यक्ति कै पहिला भाषा/मातृभाषा से शुरु किहा जाला औ दुसरे भाषा का लिखाई पढाई कै माध्यम के रुप मे धीरे धीरे सामिल किहा जाला ।

धारा प्रवाह : बिना कवनो अवरोध के बोलय, पढय औ लिखय मे उच्च दक्षता ।

निरक्षर : खुद कै जाना सुना भाषा मे लिखय पढय कै अवसर न पावा मनई ।

परिचालन : कवनो कार्यक्रम कै योजना बनावय औ लागू करय खातिर समुदाय औ समुदाय के सहयोगिन का सङ्गठित करय कै काम ।

पाठ्यक्रम : शैक्षिक कार्यक्रम के खातिर शिक्षण योजना, पढयवाला विषय वस्तु औ सहयोगी सामान ।

बहुभाषी : व्यक्ति : दुइ से ढेर भाषा जानय बूझय वाला (लिख पढ कइ सकय वाला) ।

समाज : दुइ से बेसी भाषा भाषी बसोबास करय वाला समाज ।

बहुभाषिक शिक्षा : साक्षरता औ औपचारिक शिक्षा मे दुइ से ढेर भाषा प्रयोग कइकै लिखाई पढाई (शिक्षण) करावा जायवाली शिक्षा - बच्चा या व्यक्ति के पहिला भाषा कै माध्यम से पढाई शुरु कराय कै दूसर तीसर भाषा से जोडत लइ जायवाली शिक्षा ।

भाषा विकास : शिक्षा मे केहू का कवनो भाषा बढिया से सुनय बोलय पढय औ लिखय कै सिखावय वाली काम ।

भाषिक अल्पसङ्ख्यक : कम जनसङ्ख्या होय के नाते या राजनीतिक औ आर्थिक कारण से समाज मे दुसरे के तुलना मे कमजोर रुप मे रहय वाला यक्कय भाषा बोलय वाले मनइन कै समूह ।

मातृभाषा पर आधारित

दुइ भाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई कै प्रक्रिया शुरु कइकै दूसर भाषा सिखावत जायवाला स्कूली शिक्षा प्रणाली (बहुभाषिक शिक्षा का देखा जाय ।)

बहुभाषिक शिक्षा : पहिला भाषा के माध्यम से लिखाई, पढाई औ सिकाई प्रक्रिया शुरु कइकै दुसरे भाषा के साथेन अउरो भाषा सिखावत जायवाला शिक्षा प्रणाली (दुइ भाषिक शिक्षा देखा जाय ।)

मुख्य समूह : बेसी जनसङ्ख्या होय के नाते या आर्थिक औ राजनीतिक कारण से देश मे शक्ति के रुप मे रहा सामाजिक समूह ।

मूलधार : मुख्य समूह कै भाषा औ संस्कृति (कब्बव कब्बव खाली मुख्य समूह के खातिर बनावा स्कूल औ भाषिक अल्पसङ्ख्यक लोगन कै जरुरत न पूरा करयवाला स्कूल बूझा जाला ।)

लेखन पद्धति : लिपि हिज्जे नियम औ विराम चिन्ह सहित के लेखन कै मानक प्रणाली ।

लैङ्गिक समानता : मेहरारु औ मर्द, बिटिया या बेटवा के मानव अधिकार का पूरा पूर जानय बूझय खातिर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक औ राजनीतिक विकास मे योगदान करय खातिर औ वोसे लाभ लेवय खातिर समान परिस्थिति कै अवस्था ।

सल्लाहकार समिति : बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम मे सामिल अगुवा लोगन कै समिति, (यहमा प्राय: मातृभाषा बोलयवाले औ सहयोगी संस्था कै सदस्य होत हैं ।)

सहजकर्ता : आउर लोगन का लेखपढ मे सहयोग करयवाले मनई, शिक्षक ।

साक्षरता : जीवन मे जरुरी व्यवहार पूरा करय खातिर पढय, लिखय औ हिसाब करय के साथेन आउर भाषिक क्रियाकलाप ठीक से करय कै क्षमता ।

साझेदार : नवा कार्यक्रम लागू करय खातिर समुदाय से मिलि कै काम करय वाला मनई, संस्था या निकाय ।

सिखाई उपलब्धि : स्कूल मे होय वाले पढाई कै विषयवस्तु, भाषा कै ज्ञान, हुनर औ दक्षता ।

स्थायित्व : ज्यादे समय तक समय के हिसाब से निरन्तर स्थापित गुण ।

बहुभाषिक शिक्षा विस्तार के खातिर उपयोगी सामग्री : स्कूल के पहुँच से छूटल रहे वाले लोगन के समावेशीकरण

UNESCO
United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

Japan
Funds-in-Trust

P O Box 14391
Jawalakhel, Lalitpur, Nepal
Tel : 977-5554769, 5554396
Fax: 977-1-5554450